* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

30 जुलाई, 2024
श्रावण, कृष्ण पक्ष, दशमी
संवत 2081
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
मंगलवार, वर्ष 09, अंक 280

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

हेमंत सोरेन की बेल को चुनौती देनेवाली इडी की याचिका खारिज

आवेदन फॉर्म नि:शुल्क

किसे मिलेगा लाभ...

- झारखण्ड की निवासी
- 21 वर्ष से अधिक एवं 50 वर्ष से कम आयु
- आधार से जुड़ा सिंगल (एकल) बैंक खाता
- जिनका बैंक खाता आधार से जुड़ा नहीं है वे भी योजना का लाभ दिसम्बर-2024 तक उठा सकती हैं, उसके पश्चात बैंक खाता को आधार से जुड़वाना जरूरी है
- मतदाता पहचान पत्र और आधार कार्ड
- झारखण्ड राज्य के राशन कार्डधारी परिवार*
  - पीला राशन कार्ड (अंत्योदय अन्न योजना)
  - गुलाबी राशन कार्ड (पूर्वविक्ता प्राप्त गृहस्थ कार्ड)
  - सफेद राशन कार्ड (K-Oil राशन कार्ड)
  - हरा राशन कार्ड

आंगनबाड़ी सेविका, सहायिका द्वारा घर-घर जाकर आवेदन फॉर्म नि:शुल्क दिया जायेगा

3 से 10 अगस्त तक
विहित प्रपत्र में आवेदन जमा करने हेतु विशेष कैम्प का आयोजन:

- ग्रामीण क्षेत्र में प्रत्येक पंचायत भवन
- शहरी क्षेत्र में संबंधित जिला उपायुक्त द्वारा चयनित केंद्र

झारखण्ड मुख्यमंत्री
मंईयां सम्मान योजना

हर बहना को हर साल ₹12 हजार

खुशियों का उपहार

21 से 50 वर्ष तक की उम्र की बहनों को हर महीने **₹1000** की सम्मान राशि

हर महीने की **15 तारीख तक** बैंक खाते में राशि

अधिक जानकारी के लिए
1800-890-0215
टोल फ्री नंबर

फॉर्म डाउनलोड करने के लिए
स्कैन करें

https://www.jharkhand.gov.in/wcd

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

विशेष कैंप के बाद भी अपना आवेदन नजदीकी प्रज्ञा केंद्र में कभी भी जमा कर सकते हैं

P.R 331109 (Women, Child Development & Social Security) 24-25

महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग, झारखण्ड सरकार

सर्राफा

सोना (बिक्री)	64,500 रु./10 ग्राम
चांदी	85,000 रु./प्रति किलो

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 30 जुलाई, 2024
www.azadsipahi.in

राजनीतिक नहीं, सामाजिक समस्या है घुसपैठ

■ तीन दशक से जारी है संथाल परगना क्षेत्र में बांग्लादेशियों की घुसपैठ

■ पहली बार 2001 में राज्य के गृह विभाग ने सरकार के संज्ञान में यह मामला लाया था

■ इसके बाद 2009 में गृह विभाग ने राज्य सरकार को एक रिपोर्ट सौंपी थी

■ झारखंड के हित के खिलाफ है यूनियन टेरिटरी की मांग करना

आजाद सिपाही विशेष

झारखंड में आसन्न विधानसभा चुनाव से पहले इन दिनों राज्य में घुसपैठियों का मुद्दा बेहद गरम है। दो दिन पहले पाकुड़ में हुई घटना और उसके बाद आदिवासी युवाओं का सड़क पर उतरना इसी मुद्दे का एक पहलू है। पाकुड़ की घटना के बाद राजनीति भी तेज हो गयी है और सत्ता पक्ष और विपक्ष इसे अपने-अपने नजरिये से देख रहा है, राजनीति कर रहा है। लेकिन यह हकीकत है कि झारखंड में घुसपैठियों की समस्या राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक है। यह समस्या हेमंत सोरेन की सरकार के समय उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि तीन दशक से भी अधिक समय से यह पैदा हुई है। झारखंड की भौगोलिक संरचना ही ऐसी है कि यहां के 24 में से 22 जिले जहां दूसरे राज्यों की सीमा से मिलते हैं, वहीं संथाल परगना का साहिबगंज और पाकुड़ जिला बांग्लादेश की सीमा से सटा हुआ है। राज्य में घुसपैठ की समस्या नयी नहीं है, बल्कि अलग राज्य बनने से एकीकृत बिहार के समय से ही इस तरफ सरकारों का ध्यान खींचा गया था। झारखंड बनने के बाद पहली बार 2001 में घुसपैठ सामने आयी थी, जब जनगणना के दौरान साहिबगंज में एक वर्ग विशेष की आबादी में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गयी थी। झारखंड अलग राज्य बनने के बाद कम से कम तीन बार राज्य के गृह विभाग ने सरकार का ध्यान इस तरफ आकृष्ट कराया। सबसे पहले 2001 में राज्य के गृह विभाग ने सरकार के संज्ञान में या मामला लाया, फिर 2009 में इसकी विकरालता के बारे में जानकारी दी गयी, लेकिन कभी किसी सरकार ने इस पर ध्यान नहीं दिया। 2018 में राज्य में मिनी एनआरसी लागू करने की बात भी इसीलिए कही गयी थी, लेकिन फिर इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया गया। अब एक बार फिर यह मुद्दा उठा है, तो सभी राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि इसके लिए सभी राजनीतिक दल समान रूप से जिम्मेवार हैं। सबसे दुखद तो यह है सत्ता हासिल करने के इरादे से कुछ लोग या दल इस पर हाय-तौबा मचा रहे हैं। चुनाव खत्म होते ही यह आवाज बंद हो जायेगी। अलबत्ता इसी बीच पाकुड़ की घटना ने एकबारगी सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। यह पहली बार हुआ है, जब वहां के छात्र संगठन और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने लिखित रूप से प्रशासन के सामने इस समस्या को उठाया है। इस पर राजनीति नहीं, बल्कि सभी को आत्ममंथन करने की जरूरत है। इसके लिए सिर्फ हेमंत सरकार को दोषी ठहराना न्यायोचित नहीं होगा, क्योंकि जिस सीमा से बांग्लादेशी घुसपैठिये घुसते हैं, उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की है। सवाल सीमा की सुरक्षा करनेवालों से भी है कि जब वे दावा करते हैं कि सुरक्षा इतनी है कि परिंदा भी पर नहीं मार सकता, फिर ये घुसपैठिये कैसे घुस जाते हैं। ऐसा बिहार के कुछ जिलों में भी हुआ है और पश्चिम बंगाल में भी। घुसपैठ की पीड़ा असम के लोग भी झेल चुके हैं। अगर इस पर सभी दलों ने चिंतन-मनन नहीं किया और समाधान नहीं निकला, तो क्या हो सकता है इसका सामाजिक असर, बता रहे हैं **आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

राकेश सिंह

दो दिन पहले पाकुड़ में हुई घटना से फिर साबित हो गया है कि झारखंड में घुसपैठ की समस्या गंभीर है। महेशपुर के गायबथान में 18 जुलाई को जिस तरह आदिवासी परिवार के साथ मारपीट की गयी, उससे आदिवासी समाज के लोग आक्रोशित हो गये। इस घटना के विरोध में पाकुड़ की सड़कों पर जिस तरह आदिवासी युवाओं ने विरोध प्रदर्शन किया और डीसी-एसपी को ज्ञापन सौंपा, उसने घुसपैठ की समस्या को न केवल रेखांकित किया है, बल्कि इसके खतरनाक सामाजिक परिणाम की तरफ भी इशारा किया है।

हाइकोर्ट ने भी जतायी है चिंता

इसी महीने झारखंड हाइकोर्ट ने एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए राज्य सरकार को कथित बांग्लादेशी घुसपैठियों को चिह्नित कर वापस भेजने की योजना बनाने का निर्देश दिया। उससे पहले हाइकोर्ट ने केंद्र सरकार से भी यह पूछा कि इसका समाधान कैसे निकलेगा। इसके बाद यह मामला सुर्खियों में आ गया। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने यह भी पूछा है कि क्या केंद्र सरकार यहां सीएए के तहत सीधे घुसपैठियों के खिलाफ कार्रवाई कर सकती है। कोर्ट ने इसे गंभीर मामला बताते हुए कहा कि इस पर केंद्र सरकार को भी राज्य सरकार के साथ मिल कर काम करने की जरूरत है।

आदिवासियों की आबादी में बदलाव

विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी आंकड़ों के अनुसार संथाल परगना में आदिवासियों की संख्या धीरे-धीरे घट रही है। उनका अस्तित्व खतरे में है। जनसंख्या के सरकारी आंकड़ों से पता चलता है कि संथाल परगना प्रमंडल के छह जिलों दुमका, पाकुड़, साहिबगंज, गोड्डा, जामताड़ा और देवघर की डेमोग्राफी में काफी बदलाव आया है। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक इन छह जिलों में 1951 में आदिवासियों की आबादी 44.66 प्रतिशत थी, जो 2011 में घट कर 28.11 फीसदी हो गयी, वहीं मुस्लिमों की आबादी 9.44 से बढ़ कर 22.73 प्रतिशत हो गयी। साल 2000 में राज्य बने झारखंड की आबादी 1951 की जनगणना में करीब 97 लाख थी, जो 2011 में बढ़ कर 3 करोड़ 30 लाख हो गयी। जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि संथाल परगना के इन सभी छह जिलों में आबादी में औसत सात से आठ लाख का इजाफा हुआ है। कुछ लोगों का आरोप है कि घुसपैठ के बिना इतनी तेजी से आबादी का बढ़ना नामुमकिन है। पाकुड़ की घटना को इसी पृष्ठभूमि में देखा जा सकता है कि कैसे एक आदिवासी की जमीन पर कब्जा किया जा रहा है।

कैसे होती है घुसपैठ

संथाल परगना के कुछ जिले बांग्लादेश की सीमा से महज 40-50 किलोमीटर दूर हैं। इनमें पाकुड़ सबसे नजदीक है। पश्चिम बंगाल के मालदा जिले का मोहदीपुर बांग्लादेश की सीमा से सटा हुआ है। इस इलाके में कहीं बाड़ है, तो कहीं सीमा खुली हुई भी है। मोहदीपुर से पश्चिम बंगाल के कालियाचक होते हुए एनटीपीसी फरक्का मोड़ से राजमहल के लिए सीधी सड़क है। इस रास्ते में कोई चेकपोस्ट नहीं है। कालियाचक से महज 15 किलोमीटर की दूरी पर बांग्लादेश की सीमा है। सीमा पार कर कोई अगर बंगाल के कालियाचक आ जाये, तो वह नाव से साहिबगंज में आसानी से दाखिल हो सकता है। फरक्का के तालतला घाट से नाव के सहारे साहिबगंज जिले के उधवा नाला पहुंचने का भी एक जरिया है। इन इलाकों में पर्याप्त चेकिंग नहीं होती है। घुसपैठिये पूरे सिस्टमेटिक तरीके से आते हैं। इस इलाके में सभी जगह घुसपैठ करानेवाले एजेंट हैं। घुसपैठियों को सिस्टमेटिक ढंग से यहां बसाया जाता है। झारखंड में अधिकांश बांग्लादेशी फरक्का, उधवा, पियारपुर, बेगमगंज, फुदकलपुर, अमंथ, श्रीधर, दियारा, बेलूग्राम, चांदशहर और प्राणपुर से आते हैं। पुलिस का भी मानना है कि बांग्लादेशियों के आने से अपराध और देशविरोधी गतिविधियां बढ़ी हैं। इन घुसपैठियों ने दलालों और स्थानीय लोगों की मदद से वोटर आइडी, आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस तक बनवा रखा है। उधवा पक्षी अभ्यारण्य और वन विभाग की जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया गया है। साहिबगंज और पाकुड़ समेत अन्य जिलों की डेमोग्राफी में पिछले तीन दशक में जबरदस्त बदलाव रिकॉर्ड किया गया है।

अधिकारी की भविष्यवाणी

अब बात एक भविष्यवाणी की। वह वर्ष 2015 था। झारखंड सरकार के गृह विभाग के एक वरीय अधिकारी ने अनौपचारिक बातचीत के दौरान बताया कि झारखंड में घुसपैठ की समस्या अगले 10 साल में इतनी विकराल होनेवाली है कि इससे पार पाना मुश्किल हो जायेगा। उन्होंने सरकारी आंकड़े के हवाले से बताया कि झारखंड में करीब 15 लाख ऐसे लोग आकर बस गये हैं, जो भारत के नागरिक नहीं हैं। उस अधिकारी ने 2022 में एक बार फिर संपर्क किया और झारखंड के छोटे-छोटे जिलों में हुए सांप्रदायिक हिंसा के बाद पैदा हुए तनाव का जिक्र करते हुए सात साल पहले दी गयी अपनी चेतावनी की याद दिलायी। और आज उस अधिकारी की भविष्यवाणी एकदम सटीक साबित होती हुई नजर आ रही है। पाकुड़ की घटना ने उस भविष्यवाणी की याद बरबस ही दिला दी है। उस अधिकारी ने कहा था कि पहले रांची, जमशेदपुर और हजारीबाग जैसे शहर सांप्रदायिक दृष्टिकोण से संवेदनशील माने जाते थे, लेकिन अब तो पाकुड़, गोड्डा, लोहरदगा, सिमडेगा और बरही जैसे शहरों में तनाव पसरने लगा है। अधिकारी की इस चेतावनी और झारखंड में घुसपैठ की समस्या को समझने और उसके समाधान के लिए सबसे पहले यह मानना होगा कि यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं, बल्कि सामाजिक समस्या है।

किसी सरकार ने कुछ नहीं किया

यह एक हकीकत है कि बांग्लादेशी हों या फिर रोहिंग्या मुसलमान, भारत के विभिन्न भागों में दोनों की घुसपैठ गंभीर समस्या है। देश का शायद ही कोई राज्य हो, जहां बांग्लादेशी और रोहिंग्या लोग अवैध रूप से ना बसे हों। राष्ट्रीय स्तर पर यह मामला उठता ही रहता है और स्वाभाविक रूप से झारखंड भी इससे अछूता नहीं है। राज्य का प्रायः हर जिला कमोबेश इससे प्रभावित है। प्रशासन को पता है कि संथाल परगना के जिलों और कस्बों में भारी संख्या में बांग्लादेशी घुसपैठिये आ गये हैं और उन्हें वैध नागरिकता प्रमाण पत्र उपलब्ध कराये जा रहे हैं। पूरी दुनिया जानती है कि भारत में यह घुसपैठ बांग्लादेश गठन के बाद से चली आ रही है और पिछले कुछ वर्षों में इसमें बहुत तेजी आयी है। चूंकि संथाल परगना की सीमा बांग्लादेश से लगती है, तो यहां घुसपैठ और बसने की सुविधा अधिक है। अविभाजित बिहार में ऐसी घुसपैठ की सुध नहीं ली गयी। फिर झारखंड का गठन हुआ, लेकिन इस मुद्दे को गंभीरता से लिया ही नहीं गया। पहली बार 2001 में जब राज्य सरकार के गृह विभाग ने यह मामला तत्कालीन सरकार के संज्ञान में लाया, तो पूरे मामले को ही दबा दिया गया। इसके बाद 2009 में गृह विभाग ने एक रिपोर्ट सरकार को सौंपी, जिसमें संथाल परगना ही नहीं, गढ़वा, लोहरदगा और कोडरमा जिलों में घुसपैठियों के बसने की बात कही गयी थी। उस रिपोर्ट को भी कहीं ठंडे बस्ते में डाल दिया गया।

2018 में हुई थी एनआरसी लागू करने की सिफारिश

इस समस्या पर नियंत्रण के लिए 2018 में असम की तर्ज पर झारखंड में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजंस (एनआरसी) लागू करने की सिफारिश पर राज्य पुलिस ने बल दिया था। राज्य पुलिस मुख्यालय ने एनआरसी की जरूरतों और बांग्लादेशियों के बढ़ते प्रभाव को लेकर एक रिपोर्ट गृह विभाग को भेजी थी। इसमें जिक्र था कि बांग्लादेशी नागरिक बिहार और बंगाल के रास्ते झारखंड में शरण ले रहे हैं। झारखंड में अवैध प्रवासियों की संख्या उस समय 10-15 लाख बतायी गयी थी। इस समय यह संख्या 26 लाख के करीब बतायी जा रही है। अवैध प्रवासियों की बढ़ती आबादी से सांस्कृतिक और सुरक्षात्मक खतरे उत्पन्न हुए हैं। रिपोर्ट में अवैध प्रवासियों को चिह्नित करने के लिए सर्किल, जिला और राज्य स्तर पर टास्क फोर्स गठित करने की सिफारिश भी की गयी थी। टास्क फोर्स में वरिष्ठ अधिकारी, सेवानिवृत्त लोकसेवक या पुलिस अधिकारी को रखने की सिफारिश थी। लेकिन इस रिपोर्ट को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया, क्योंकि इसे राजनीतिक रूप से संवेदनशील माना गया था।

फिर झारखंड पुलिस की विशेष शाखा ने 2 जून, 2023 को राज्य के सभी जिलों के डीसी और एसपी को एक पत्र लिख कर बांग्लादेशी नागरिकों के अवैध रूप से प्रवेश करने की सूचना दी थी। 13 दिसंबर, 2023 को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एक दस्तावेज जारी कर कहा था कि 120 से अधिक नकली वेबसाइट के जरिये फर्जी जन्म प्रमाण पत्र बनाये जा रहे हैं। इसे लेकर झारखंड को विशेष रूप से आगाह किया गया था।

यह सही है कि घुसपैठिये नागरिकता प्रमाण पत्र हासिल कर रहे हैं और उन्हें संरक्षण भी मिल रहा है। लेकिन इसके साथ यह भी सच है कि यह सिलसिला झारखंड बनने के पहले से चल रहा है। इन घुसपैठियों ने स्थानीय स्तर पर इतनी गहरी पैठ बना ली है कि अब इनकी पहचान लगभग असंभव हो गयी है। घुसपैठियों ने स्थानीय स्तर पर सामाजिक रिश्ते कायम कर लिये हैं, जमीन खरीद ली है और आधार कार्ड-वोटर आइडी तक हासिल कर लिया है। उनके बच्चे झारखंड के स्कूलों में पढ़ रहे हैं और कई लोग तो सरकारी नौकरी में भी हैं।

सियासत नहीं, समाधान जरूरी

झारखंड में घुसपैठ की समस्या पर सियासत उचित नहीं है। राजनीतिक दलों द्वारा एक-दूसरे पर दोषारोपण करने से इसका समाधान नहीं हो सकता। हकीकत यही है कि झारखंड की यह समस्या पांच साल की नहीं है, बल्कि बहुत पुरानी है। इसलिए इसकी जिम्मेदारी हर राजनीतिक दल को लेनी होगी। केंद्र सरकार को भी मामले की संवेदनशीलता को समझना होगा, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय सीमा से घुसपैठ रोकने की पहली जिम्मेवारी उसकी ही है। इसके बाद राजनीतिक दलों के गांव स्तर के कार्यकर्ताओं को किसी बाहरी व्यक्ति के गांव में बसने पर ध्यान देना होगा, ताकि समय पर इसकी सूचना अधिकारियों को दी जा सके। इसके लिए एक सशक्त अभियान चलाने की जरूरत है, ताकि लोग जागरूक हो सकें। जब तक घुसपैठ की समस्या को सामाजिक नजरिये से नहीं देखा जायेगा, इसका समाधान नामुमकिन है। यही नहीं, झारखंड के कुछ जिलों और बंगाल बिहार के कुछ जिलों को मिला कर यूनियन टेरिटरी बनाने की मांग भी गलत है। झारखंड ऐसे ही दबा हुआ है, जरूरत इसे वृहद करने की है, न कि यूनियन टेरिटरी बनाने की।

पाकुड़ : टाउन थाना इंचार्ज और एएसआइ निलंबित

आदिवासी छात्रों के साथ झड़प कांड की जांच करने हॉस्टल पहुंचे डीआइजी

कार्तिक कुमार

पाकुड़ (आजाद सिपाही)। संथाल परगना रेंज के डीआइजी संजीव कुमार सोमवार को पाकुड़ में आदिवासी कल्याण छात्रावास में हुई झड़प की घटना को ले जांच करने पहुंचे। डीआइजी सीधे के-केएम कॉलेज के आदिवासी कल्याण छात्रावास पहुंच कर बारी-बारी से छात्रों से बात की और उनकी शिकायतों को सुना। तकरीबन एक घंटे से अधिक

समय तक डीआइजी ने छात्र नायक सहित छात्रावास में 26 जुलाई की रात की घटना में पीड़ित छात्रों से भी बात की। हॉस्टल से जांच कर डीआइजी एसपी ऑफिस पहुंचे और मीडिया को बताया कि वह पाकुड़ में 26 और 27 जुलाई को हुई घटना की जांच के सिलसिले में यहां आये हैं। छात्रों की शिकायत को सही पाया गया है। तत्काल प्रभाव से टाउन थाना के इंचार्ज और घटना के दिन हॉस्टल गये पुलिस अफसर को निलंबित कर दिया गया है और थाना के अन्य अफसर और कर्मी जो उस दिन की घटना में थे, उन्हें हटा दिया गया है। डीआइजी ने बताया कि छात्रों की लिखित शिकायतों की एक-एक बिंदु पर जांच होगी। किसी ने भी कानून हाथ में लेने या तोड़ने का प्रयास किया तो उन पर कार्रवाई होगी। एक सवाल पर डीआइजी ने बताया कि अपहरण के बिंदु पर भी जांच चल रही है। इस संबंध में जांच पूरी होने के पश्चात आगे कुछ कह पायेंगे। डीआइजी के साथ जांच के दौरान एसपी प्रभात कुमार, एसडीपीओ दयानंद आजाद मौजूद भी थे।

दो महीने में पेसा नियमावली को अधिसूचित करे सरकार: हाइकोर्ट

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पेसा कानून को लेकर दाखिल जनहित याचिका पर झारखंड हाइकोर्ट में सोमवार को सुनवाई हुई। राज्य में अब तक पेसा कानून लागू नहीं किये जाने पर हाइकोर्ट ने नाराजगी जाहिर की है। अदालत ने राज्य सरकार को दो महीने में पेसा नियमावली को अधिसूचित करने का निर्देश दिया है। इस संबंध में आदिवासी बुद्धिजीवी मंच सहित अन्य की ओर से हाइकोर्ट में याचिका दाखिल की गयी थी। प्रार्थियों की ओर से वरीय अधिवक्ता अजीत कुमार और अधिवक्ता तान्या सिंह ने बहस की। हाइकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद और जस्टिस अरुण कुमार राय की खंडपीठ में इस मामले की सुनवाई हुई।

क्या है पेसा नियमावली

पंचायत उपबंधन (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम महत्वपूर्ण कानून है, जो 24 दिसंबर, 1996 को पारित किया गया था। इसका उद्देश्य कुछ अपवादों और संशोधनों के साथ संविधान के भाग नौ में उल्लिखित प्रावधानों को अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तारित करना है। झारखंड में पेसा कानून को लागू करने के लिए इससे संबंधित नियमावली का ड्राफ्ट पंचायती राज विभाग ने तैयार कर लिया है। इस नियमावली में ग्राम सभाओं को और शक्तिशाली और आर्थिक रूप से सक्षम बनाने पर जोर दिया गया है। प्रस्तावित नियमावली के तहत ग्राम सभा की बैठकों की अध्यक्षता मानकी मुंडा आदि पारंपरिक प्रधान करेंगे। ग्राम सभा की सहमति के बिना सरकार जमीन का अधिग्रहण नहीं कर सकेगी। आदिवासियों की जमीन खरीद बिक्री मामले में भी ग्राम सभा की सहमति की बाध्यता होगी। इस नियमावली में पुलिस की भूमिका निर्धारित करते हुए किसी की गिरफ्तारी के 48 घंटे के अंदर गिरफ्तारी के कारणों की जानकारी ग्राम सभा को देने की बाध्यता तय की गयी है। ग्राम सभा को आदिवासियों की जमीन वापस करने का अधिकार भी दिया गया है। साथ ही ग्राम सभा में अन्न कोष, श्रम कोष, नकद कोष आदि गठित किये जाने का प्रावधान किया गया है, जिनमें दान, प्रोत्साहन राशि, दंड शुल्क, वन उपज, रॉयल्टी, तालाब, बाजार, सैरात आदि से मिलने वाली राशि जमा की जायेगी। ग्राम सभा में अधिकतम 10 हजार रुपये तक की राशि रखने की अनुमति होगी। इससे अधिक की राशि बैंक खाते में जमा की जायेगी।

30 जुलाई, 2024
श्रावण, कृष्ण पक्ष, दशमी
संवत 2081
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
मंगलवार, वर्ष 09, अंक 280

सांसद नवीन जिंदल को महात्मा हंसराज गौरव सम्मान मिला

FLORENCE
GROUP OF INSTITUTIONS
(A Unit of :Haji Abdur Razzaque Educational Society)
ADMISSION OPEN
COLLAGE OF NURSING
2 YEARS M.Sc. Nursing
2 YEARS Post Basic B. Sc. Nursing
4 YEARS B.Sc. Nursing
3 YEARS GNM (General Nursing And Midwifery)
2 YEARS ANM (Auxiliary Nursing And Midwifery)
COLLEGE OF PARA MEDICAL SCIENCE
4 YEARS BMLT
2 YEARS DMLT
2 YEARS OT ASSISTANT
2 YEARS ECG
2 YEARS OPHTHALMIC ASST.
2 YEARS CRITICAL CARE (ICU)
2 YEARS RADIO-IMAGING
2 YEARS ANESTHESIA TECH.
1 YEARS DRESSERS
COLLAGE OF PHARMACY
2 YEARS D-PHARM
4 YEARS B-PHRRM
Separate Hostel For Boys & Girls
9031231082, 7903999411, 6205145470
E-mail: fsnirba@gmail.com
Website: www.florenceinstirba.com

झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के दूसरे दिन भी रहा हंगामा, कार्यवाही शुरू होते ही खत्म

घुसपैठ मामले पर सत्ता पक्ष और विपक्ष आमने-सामने

■ सदन के अंदर और बाहर एक-दूसरे को घेरा

■ प्रश्नकाल समेत अन्य कार्यवाही नहीं चल सकी

■ हंगामे के बीच 4833.39 करोड़ का पहला अनुपूरक पेश

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड विधानसभा का मानसून सत्र चल रहा है। सोमवार को सत्र की दूसरी बैठक थी। सदन के अंदर और बाहर घुसपैठ के मुद्दे पर सत्ता पक्ष और विपक्ष ने एक-दूसरे को घेरा। इसके कारण सदन की कार्यवाही पूरी तरह बाधित रही। प्रश्नकाल, शून्यकाल समेत अन्य कार्यवाही नहीं चल सकी। हंगामे के बीच ही सरकार ने 4833.39 करोड़ रुपये का पहला अनुपूरक बजट पेश किया। उधर, सदन के बाहर भी दोनों पक्षों के विधायकों ने प्रदर्शन किया और एक-दूसरे को कटघरे में खड़ा करने का प्रयास किया।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही हंगामा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा ने सरकार को बांग्लादेशी घुसपैठ के मुद्दे पर घेरने का प्रयास किया। सदन की कार्यवाही 11 बजे शुरू होते ही भाजपा विधायकों ने वेल में आकर हंगामा शुरू कर दिया। विधानसभा अध्यक्ष रबींद्रनाथ महतो के कहने पर भी जब वे शांत नहीं हुए, तो उन्होंने सदन की कार्यवाही 12.30 बजे तक के लिए स्थगित कर दी। इसके बाद कार्यवाही शुरू होते ही फिर हंगामा होने लगा और सदन नहीं चल सका।

आदिवासी अस्मिता खतरे में है : बाउरी

विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता अमर कुमार बाउरी ने कहा कि झारखंड में आदिवासी की अस्मिता खतरे में है। यहां की माटी, रोटी खतरे में है। इसके खिलाफ आवाज उठानेवालों पर बांग्लादेशी घुसपैठियों को संरक्षण देनेवाली राज्य सरकार रात के अंधेरे में घुस कर लहूलुहान करके हॉस्पिटलाइज करने का काम कर रही है। मामले को घुमाने के लिए आदिवासी हित का मुखौटा पहने राज्य सरकार ने युवाओं पर लाठियां चलवायीं, उन्हें लहुलूहान किया, ताकि मुखौटा गिर न जाये। मुझे पूरा विश्वास है कि पूरे संथाल में हूल का बिगुल बज चुका है। इन बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरुद्ध और इनको संरक्षण देनेवाले जेएमएम, कांग्रेस के विरोध में हूल कर दिया है।

डेमोग्राफी से आदिवासियों की जनसंख्या घट रही : बाबूलाल

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और विधायक बाबूलाल मरांडी ने कहा कि 26 जुलाई की रात को पाकुड़ में पुलिस ने केकेएम कॉलेज के छात्रों को बेरहमी से पीटा और उन्हें लहूलुहान कर दिया। इसका केवल एक ही कारण था कि कॉलेज के लड़के और संथाल के ट्राइबल ऑर्गेनाइजेशन संथाल में मिल कर 27 जुलाई को बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ धरना पर बैठनेवाले थे। उन्होंने कहा कि जिस तरह से संथाल में डेमोग्राफी बदल रही है और खासकर आदिवासियों की जनसंख्या घट रही है, उससे आज आदिवासी प्रताड़ित हो रहे हैं। मामले को दबाने के लिए पुलिस ने देर रात जाकर छात्रों को पीटा।

मुझे शर्म आती है कांग्रेस की सोच पर: बिरंची नारायण

भाजपा विधायक बिरंची नारायण ने कांग्रेस विधायक शिल्पी नेहा तिर्की के बयान पर कहा कि इसका सबसे अच्छा जवाब कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर हैं, जो बिहार से आते हैं। इसका मतलब वह घुसपैठी हैं। मंत्री रामेश्वर उरांव भी बिहार से ही हैं, तो उनको भी घुसपैठी कह देंगे। मुझे शर्म आती है कांग्रेस की सोच पर और मैं इस बयान की घोर निंदा करता हूं।

संथाल की डेमोग्राफी चेंज करने में सरकार लगी है: रणधीर

भाजपा विधायक रणधीर सिंह ने कहा कि सिर्फ झारखंड ही नहीं, बल्कि जहां-जहां इंडी गठबंधन की सरकार है, वहां पर ये लोग बांग्लादेश की सीमा को खोल देते हैं। इनको वोट बैंक बढ़ाना है। सारठ विधानसभा क्षेत्र में अब बांग्लादेश से लोग भर चुके हैं। पूरे संथाल की डेमोग्राफी चेंज करने में यहां की सरकार लगी हुई है। वहां पर केंद्र सरकार को हस्तक्षेप करके जल्द से जल्द नियम लागू करना चाहिए। कांग्रेस पार्टी हमेशा से झारखंड-बिहार के लोगों को अलग करने का काम करती रही है। कांग्रेस विधायक शिल्पी नेहा तिर्की ने कांग्रेस की मानसिकता को दर्शाया है। यदि बिहार या अन्य प्रदेशों से लोग यहां आये हैं और यहां के नागरिक हैं, तो उनका वोट भी चाहिए कांग्रेस को चाहिए कांग्रेस उन्हें गाली भी देगी। उन्होंने कहा कि शिल्पी नेहा तिर्की को बांग्लादेश और बिहार-उत्तरप्रदेश में फर्क ही नजर नहीं आ रहा।

सत्ता पक्ष ने दिया जोरदार तरीके से जवाब

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। विपक्ष का हंगामा देख कर सत्ता पक्ष ने सदन के अंदर-बाहर जोरदार तरीके से जवाब दिया। सत्ता पक्ष के सदस्य विपक्ष पर पलटवार करने के नहीं चूके। उन्होंने जहां घुसपैठिये के मुद्दे पर विपक्ष को जवाब दिया, वहीं सांसद निशिकांत दूबे के बयान पर भी घेरने का प्रयास किया।

अमित शाह से करिये सवाल कैसे हो रही घुसपैठ : राजेश

कांग्रेस विधायक राजेश कच्छप ने कहा कि भाजपा शुरू से ही डिवाइड एंड रूल की पॉलिसी पर विश्वास करती है। झारखंड में भी वह डिवाइड रूल की पॉलिसी को लाना चाहती है। भाजपा की मानसिकता ही है, 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भी उनके पूर्वजों ने भी अंग्रेजों का साथ दिया था और गुलामी की थी। उस समय के स्वतंत्रता सेनानी को भी डिवाइड एंड रूल से बांटने की कोशिश की थी। यही पॉलिसी भाजपा देश और झारखंड में करना चाहती है। घुसपैठ का मामला भाजपा का इस बार प्रमुख मुद्दा है। भाजपा वाले अमित शाह को क्यों नहीं गाली दे रहे हैं। अमित शाह पर झारखंड के विधायक और सांसद को विश्वास नहीं है क्या। जब अमित शाह के जिम्मे बॉर्डर की सुरक्षा है, अमित शाह की पूरी फोर्स वहां लगी हुई है। जिसके नाम पर वो राजनीति करते हैं, बांग्लादेश का नाम सामने आ रहा है और यदि आप बांग्लादेश घुसपैठियों की बात कर रहे हैं तो आप अमित शाह पर सवाल उठा रहे हैं। आखिर विदेशी बिना परमिशन कैसे आ रहे हैं। आप अमित शाह से सवाल कीजिए।

घुसपैठ भाजपा का चुनावी स्टंट: हफीजुल हसन

भाजपा के आरोपों का जवाब देते हुए मंत्री हफीजुल हसन ने कहा कि संथाल परगना को सिर्फ चुनाव को प्रभावित करने के लिए विपक्ष आधार बना रहा है। हम भी देखना चाहते हैं कि बांग्लादेशी कैसे होते हैं। अभी तक हमने एक भी बांग्लादेशी झारखंड में नहीं देखा। बिहारी घुसपैठ कैसे करेंगे। पहले झारखंड बिहार का हिस्सा था। उस वक्त हर कोई बिहारी था। जब हमारा जन्म हुआ, तब हम भी बिहारी थे। उन्होंने बाबूलाल मरांडी के बयान पर कहा कि राज्य में घुसपैठ का कोई मामला नहीं है। यह भाजपा का सिर्फ चुनावी स्टंट है। हमें एक भी आदमी घुसपैठिया दिखा दें। उन्होंने कहा कि संथाल में भाजपा का जनाधार चूक गया है। इसलिए बौखला कर भाजपा इस तरह का काम कर रही है।

झारखंड का अस्तित्व मिटाना चाहती है भाजपा: प्रदीप

कांग्रेस विधायक प्रदीप यादव ने भाजपा पर झारखंड का विभाजन करने का आरोप लगाया। उनका इशारा भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के बयान पर था। उन्होंने कहा कि झारखंड के अस्तित्व को भाजपा मिटाना चाहती है। जम्मू-कश्मीर को भी इन लोगों ने बांटने की कोशिश की। चुनाव में भाजपा का सूपड़ा साफ हो जायेगा।

आदिवासी महिलाओं का अपमान कर रही है भाजपा: नेहा तिर्की

कांग्रेस विधायक शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि भाजपा के नेता कहते हैं कि बांग्लादेशी घुसपैठिये आदिवासी महिलाओं से शादी कर रहे हैं, बच्चा पैदा कर रहे हैं। फिर उन्हें छोड़ दे रहे हैं। ऐसा कह कर भाजपा के लोग पूरे देश में आदिवासी महिलाओं की छवि खराब कर रहे हैं। ये आदिवासी महिलाओं का अपमान है। इसके लिए इन्हें क्षमा मांगनी होगी। उन्होंने कहा कि झारखंड में बिहार और उत्तरप्रदेश के लोग घुसपैठ कर चुके हैं। वे यहां की जमीन और अन्य सभी जगहों पर कब्जा जमा रहे हैं। आप रामगढ़ जाइये, देखियेगा कि वहां बिहार का व्यक्ति मुखिया बना है। मंत्री दीपिका पांडेय ने कहा कि राज्य में कहां घुसपैठिये हैं। केंद्र सरकार की कोई एजेंसी इसकी जांच कर रिपोर्ट दे।

न्यूज रील्स

सांसद निशिकांत दुबे के बयान से भाजपा ने किया किनारा

रांची (आजाद सिपाही)। भाजपा ने सांसद निशिकांत दुबे के बयान से खुद को किनारा कर लिया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने निशिकांत के बयान पर कहा कि वह उनका व्यक्तिगत बयान है, पार्टी का नहीं। हम हिंदू मुसलमान नहीं कर रहे हैं। जो बांग्लादेशी घुसपैठिये घुस आये हैं, रोहिंग्या घुस आये हैं, उनको निकालने की बात कर रहे हैं। हेमंत सरकार उन्हें पाल पोस रही है। वहीं, प्रतिपक्ष के नेता अमर बाउरी ने भी पार्टी सांसद निशिकांत के बयान को व्यक्तिगत बताया। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत बयान की जवाबदेही उनकी खुद की है। झारखंड में भी कांग्रेस ने एक बयान दिया है और उसे भी बहुत लोग नकार रहे हैं। व्यक्तिगत बयान को व्यक्तिगत रूप से ही देखना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट से झारखंड के मुख्यमंत्री को मिली बड़ी राहत

हेमंत की जमानत को चुनौती देनेवाली इडी की याचिका खारिज

● कोर्ट ने कहा हाइकोर्ट ने सभी तथ्यों को जांच-परख कर जमानत दी है

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सुप्रीम कोर्ट से मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बड़ी राहत मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने इडी की याचिका को खारिज कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड हाइकोर्ट के द्वारा हेमंत सोरेन को जमानत दिये जाने के आदेश को सही ठहराते हुए कहा कि इसमें हस्तक्षेप करने की गुंजाइश नहीं है। हाइकोर्ट ने सभी तथ्यों को जांच परख कर हेमंत सोरेन को जमानत दी है। हाइकोर्ट ने जमानत दिये जाने के दौरान सभी तथ्यों पर गौर करते हुए अपना निर्णय दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में अपना ऑब्जरवेशन देते हुए कहा कि इस आदेश से निचली अदालत में चल रहा ट्रायल प्रभावित नहीं होगा।

हाइकोर्ट से 28 जून को मिली थी राहत : मुख्यमंत्री को 28 जून को झारखंड हाइकोर्ट ने जमानत दी थी। हेमंत की जमानत के खिलाफ इडी की एसएलपी में कहा कि झारखंड हाइकोर्ट का आदेश गैर-कानूनी है। यह पीएमएलए एक्ट के प्रावधानों के खिलाफ है। हाइकोर्ट के आदेश में कई प्रक्रियागत चूक और अनदेखी है। जमानत आदेश में हाइकोर्ट की टिप्पणियों पर भी इडी ने आपत्ति जाहिर की थी। सुप्रीम कोर्ट में इडी की याचिका पर सोमवार को सुनवाई की। न्यायमूर्ति बीआर गवई और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ ने मामले की सुनवाई की। कोर्ट ने हाइकोर्ट के फैसले में हस्तक्षेप से इंकार कर दिया।

न्यायालय सर्वोपरि है, यहां अंधकार नहीं होता: हेमंत सोरेन

रांची (आजाद सिपाही)। सुप्रीम कोर्ट से मिली राहत के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की प्रतिक्रिया सामने आयी है। मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि सोरेन परिवार पर बहुत तरीके के लांछन लगे। मेरा कीमती समय भी इन लोगों ने जाया किया। न्यायालय सर्वोपरि है। यहां अंधकार नहीं होता। कुछ समूह ऐसे हैं, जो न्यायालय के समय को बर्बाद करते हैं और बेवजह समाज में काम करनेवाले लोगों की आवाज को बंद करने का प्रयास कर रहे हैं, अपनी शक्तियों का दुरूपयोग कर रहे हैं। आज न्यायालय के आदेश से ये बात साबित हो गयी।

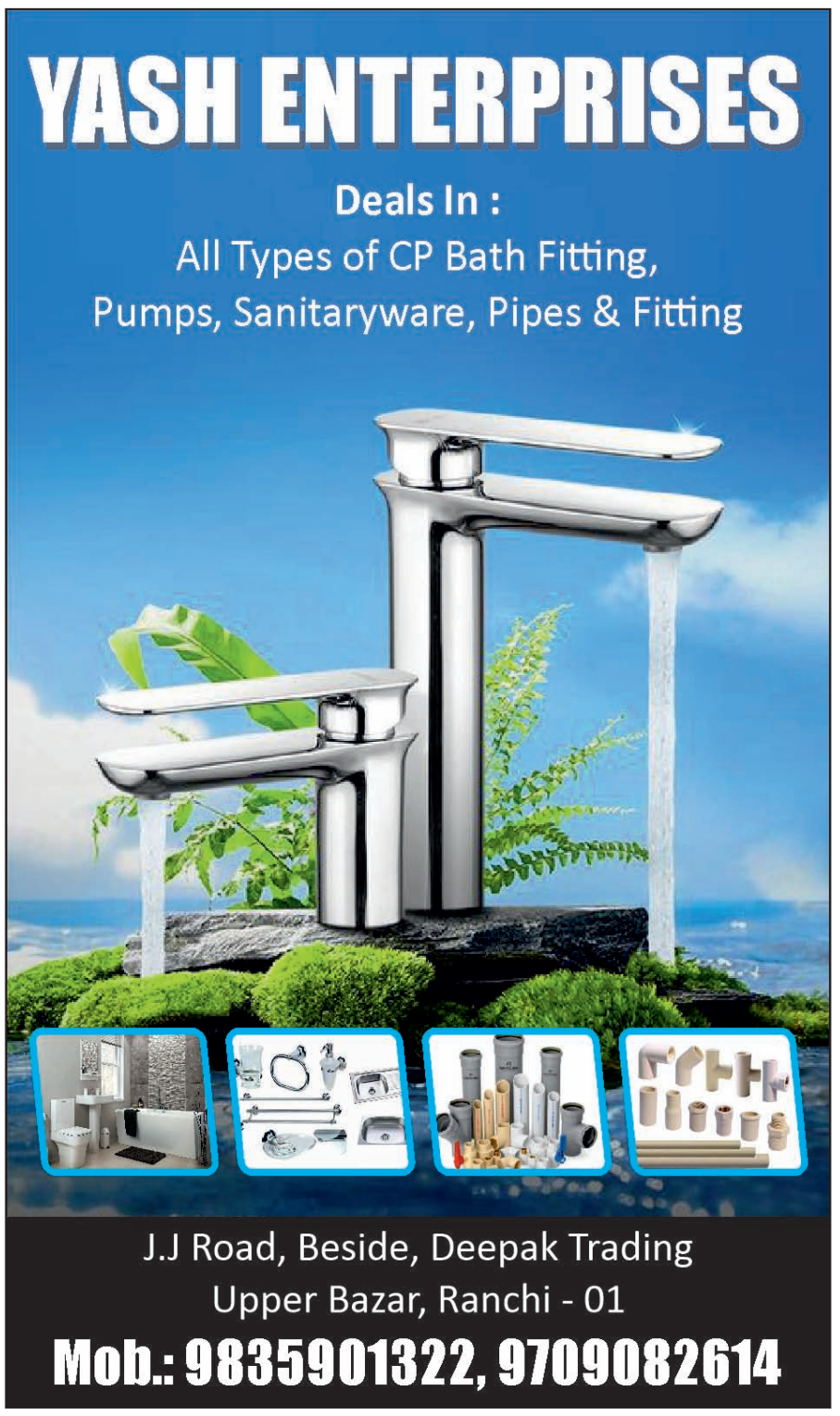

झारखंड के पूर्व मंत्री बच्चा सिंह का निधन

● बाबूलाल मरांडी की सरकार में थे नगर विकास मंत्री

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। झारखंड के पूर्व मंत्री बच्चा सिंह का धनबाद में सोमवार को निधन हो गया। वह लंबे समय से बीमार चल रहे थे। उनकी मौत अस्पताल में इलाज के दौरान हुई। कुछ माह पहले ही उन्हें दिल्ली में इलाज के लिए ले जाया गया था। उस वक्त वह बाथरूम से गिर गये थे। बच्चा सिंह सूर्यदेव सिंह के भाई थे। बिहार से अलग होकर जब झारखंड बना, तो वह बाबूलाल मरांडी की सरकार में मंत्री थे। बच्चा सिंह झरिया से विधायक रह चुके हैं। वह कभी सिंह मेंशन के स्तंभ हुआ करते थे। उन्होंने पहली बार विधानसभा का चुनाव साल 1991 में लड़ा, लेकिन आबो देवी के हाथों उन्हें हार का सामना करना पड़ा। वर्ष 1995 में उन्होंने दोबारा झारखंड विधानसभा से अपनी किस्मत आजमायी, लेकिन फिर हार गये। साल 2000 में उन्होंने पहली बार जीत का स्वाद चखा और विधायक बने। इसके बाद उन्हें बाबूलाल मरांडी की सरकार में नगर विकास मंत्री बनाया गया। उनके नधिन पर राजनीतिक दलों के नेताओं समेत आम लोगों ने शोक व्यक्त किया है।

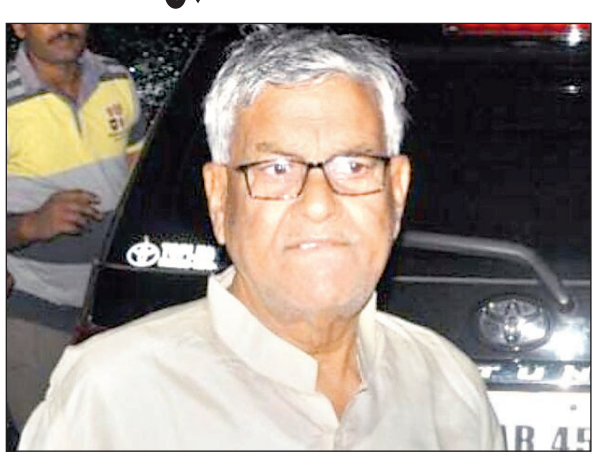

सीएम हेमंत सोरेन ने शोक व्यक्त किया

पूर्व विधायक बच्चा सिंह के निधन पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शोक व्यक्त किया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि मुझे बच्चा सिंह जी के बारे में दु:खद समाचार मिला। वे हमेशा मजदूरों के हक और अधिकार की लड़ाई लड़ते रहे। परमात्मा दिवगंत आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दुख की यह विकट घड़ी सहन करने की शक्ति दे।

ट्रस्ट करेगा लाखों भक्तों के लिए प्रसाद की व्यवस्था

झुमरीतिलैया(आजाद सिपाही)। महेश्वरी भवन में नंदी बाबा सेवा ट्रस्ट की एक बैठक आयोजित की गयी, जिसकी अध्यक्षता संजय शर्मा और संचालन उदय सिंह ने किया। इस बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये, जिनमें कांवर पदयात्रा में शामिल भक्तों के लिए ध्वजाधारी धाम में महाप्रसाद की व्यवस्था प्रमुख थी। बैठक में निर्णय लिया गया कि इस वर्ष करीब 1 लाख भक्तों के लिए महाप्रसाद की व्यवस्था की जायेगी। नंदी बाबा सेवा ट्रस्ट पिछले 24 वर्षों से कांवर पदयात्रा में शामिल भक्तों के लिए महाप्रसाद की व्यवस्था करता आ रहा है। इस वर्ष ट्रस्ट का 25वां वर्ष है, इसलिए कार्यक्रम को और भी भव्य तरीके से आयोजित करने का निर्णय लिया गया। संजय शर्मा और उदय सिंह ने बताया कि 24 वर्ष पूर्व उन्होंने 1 किलो चीनी, 2.5 किलो दूध और 250 ग्राम चायपत्ती से सेवा की शुरूआत की थी। बताया कि यह सेवा प्रत्येक साल सावन में जारी रहेगी और हर साल भक्तों को महाप्रसाद वितरित किया जायेगा। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि नंदी बाबा सेवा ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन कराया जायेगा और इसकी प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। ट्रस्ट सालभर सामाजिक गतिविधियों में शामिल रहेगा, जैसे कि शिवरात्रि के अवसर पर गरीब घर की लड़कियों की शादियां करवाना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर विशेष ध्यान केंद्रित करना और जल, जंगल, जमीन की रक्षा करना। नंदी बाबा सेवा ट्रस्ट की सेवाओं की शुरूआत से लेकर अब तक का सफर प्रेरणादायक रहा है। समाज के हर वर्ग को सहयोग और सेवा प्रदान करते हुए, ट्रस्ट ने अपनी पहचान बनाई है।

पुलिस के डर से भाग रहे युवक की कुएं में गिर कर मौत, फूटा ग्रामीणों का गुस्सा

- आक्रोश में ग्रामीण शव को लेकर कुएं के पास अड़े रहे
- डीएसपी, तीन थाना प्रभारी, बीडीओ, सीओ घटन स्थल पर पहुंचे
- दोषी पुलिस कर्मी पर कार्रवाई और मृतक की पत्नी को सरकारी नौकरी देने की मांग पर अड़े ग्रामीण

आजाद सिपाही संवाददाता

टाटीझरिया। टाटीझरिया थाना क्षेत्र के नारायणपुर में रविवार रात को पुलिस के भय से दौड़ने के दौरान दो युवकों में से एक की कुएं में डूबने से मौत हो गयी है। मृतक नारायणपुर निवासी मुकेश कुमार यादव पिता रामचंद्र यादव (26 वर्ष) है। मृतक के भाई मनोज यादव और ग्रामीणों ने बताया कि नारायणपुर में नारायण महतो के दुकान में पुलिस की गश्ती दल रूकी और वहां बैठे युवकों ने जब पुलिस को देखा तो इस दौरान पुलिस के भय से दौड़ने लगे मुकेश कुमार यादव और एक छोटे लाल प्रसाद अंधेरे में अलग-अलग कुएं में गिर गये। छोटे लाल को पुलिस की मौजूदगी में निकाला गया। वहीं दूसरे कुएं में गिरे युवक मुकेश कुमार को मौजूद ग्रामीणों ने बाहर निकाला उसकी मृत्यु हो चुकी थी मुकेश के लगभग दो वर्ष का एक बेटा और दस माह की एक बेटी है और एक बूढ़ा पिता और एक बड़ा भाई मनोज कुमार है जो की वह बाबाधाम देवघर जल चढ़ाने गया था सूचना मिलते ही वह सोमवार सुबह 6 बजे घर पहुंचा परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

कुएं में डुबे छोटीलाल प्रसाद ने कहा: मृतक के साथ दुसरे कुएं में डुबे बेडमक्का निवासी छोटीलाल प्रसाद ने बताया कि हम और मुकेश कुमार यादव दोनों नारायण महतो के चौमिन दुकान में चौमिन खा रहे थे। उसी वक्त वहां पुलिस पहुंच गयी पुलिस को देख दुकानदार पीछे के रास्ते से भाग गया। हमलोग भी दुकान के पीछे के रास्ते से दौड़ने लगे पुलिस द्वारा टार्च जलाया गया तभी हम कुएं में गिर गये।

घटना के बाद ग्रामीणों में पुलिस के प्रति आक्रोश: घटना से ग्रामीणों में पुलिस के प्रति आक्रोश व्याप्त है शव को लेकर ग्रामीणों घटना स्थल पर पड़े रहे थाना प्रभारी सुजीत कुमार का कहना है कि पुलिस की गश्ती दल को देखकर युवक भागने लगे और भागने क्रम में कुएं में गिर गया जब मुझे जानकारी मिली की कोई एक व्यक्ति कुएं में गिर गया है तो उसे तुरंत ग्रामीणों की मदद से निकाला गया दूसरे के बारे में जानकारी नहीं मिली, मिलती तो उसे भी निकाल देते इधर परिजन और ग्रामीणों ने दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की मांग पर अड़े रहे और इसकी सूचना सांसद प्रतिनिधि महेश अग्रवाल और प्रबील प्रसाद ने कोडरमा सांसद मंत्री अन्नपूर्णा देवी और विधायक प्रतिनिधि उपेंद्र कुमार पांडेय ने बरकठा विधायक अमित यादव दूरभाष पर जानकारी दिया सांसद और विधायक में तुरंत संज्ञान लेते हुए रात को हजारीबाग पुलिस कप्तान अरविंद कुमार सिंह से बात कर जानकारी दिया, और उनके निर्देश पर घटना की सूचना मिलने पर सीसीआर डीएसपी मनोज कुमार सिंह, विष्णुगढ़ एसडीपीओ बैजनाथ प्रसाद, टाटीझरिया सिओ नीलम टुडू, वीडियो रश्मि खुशबू मिंज, विष्णुगढ़ थाना प्रभारी राम नारायण साह, इचाक थाना प्रभारी संतोष कुमार, दारू थाना प्रभारी सहित पुलिस कर्मी घटना स्थल पर रात को ही पहुंचे। पुलिस प्रशासन ग्रामीणों की मांग को सूचना और हर संभव मदद करने का आशवासन दिया और एसपी को अवगत करवाया।

सरकारी सुविधा देने की बात कही गयी

सोमवार सुबह नारायणपुर में जनप्रतिनिधि प्रखंड, अंचल पदाधिकारी और प्रशासनिक वरिय पदाधिकारी के मौजूदगी में बैठक की गयी। जिसमें सर्वसम्मति से मुकेश कुमार यादव की पत्नी खुशबु देवी को सरकारी प्रावधान के अनुसार विभिन्न सुविधाएं देने की सहमति बनी। जिसमें मृतक की पत्नी को झरपो स्वास्थ्य केंद्र में सफाई कर्मी पर नियुक्ति, आपदा कोष से चार लाख रुपये की सरकारी मदद, टाटीझरिया थाना में चौकीदार की नियुक्ति में प्राथमिकता देने हेतू वरिय पदाधिकारी द्वारा अनुशंसा, अंबेदकर आवास आने पर पत्नी खुशबु कुमारी को देने का आश्वासन दिया गया। इस सहमति बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए पुलिस अपने साथ लायी। सोमवार की सुबह बरकट्ठा पूर्व विधायक जानकी प्रसाद यादव, प्रमुख संतोष मंडल, मुखिया कुमारी माधुरी, उपप्रमुख रवि वर्णवाल बीस सूत्री अध्यक्ष शिबू प्रसाद सोनी, रवि सिंह, विधायक प्रतिनिधि उपेंद्र पांडेय, महेश अग्रवाल, डीएन सिंह, ज्योतिष पंडा, मुखिया प्रतिनिधि मिथिलेश वर्मा, पंचायत समिति सदस्य विनय कुमार दास, प्रबील प्रसाद, सोबरन महतो, सुरेश प्रसाद, प्रभु कुमार, अजय कुमार, महेंद्र प्रसाद, भोला प्रसाद समेत सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण सरकारी नौकरी और उचित मुआवजा राशि की मांग पर अड़े हुए थे।

पदाधिकारियों की उदासीनता के कारण गरीब परिवार आवास योजना से वंचित

जयनगर (आजाद सिपाही)। प्रखंड में केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा गरीबों को पक्का मकान मुहैया कराये जाने का दावा जिले के जयनगर प्रखंड में घोषणाओं तक ही सिमट कर रह गया है। वास्तविकता यह है कि पदाधिकारीयों और जनप्रतिनिधियों की उदासीनता के कारण जयनगर पूर्वी और पश्चिमी पंचायत में कई ऐसे गरीब परिवार हैं जो आज भी टूटे कच्चे मकान में रहने के मजबूर हैं। इनके मकान देखकर सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि सरकारी दावे में कितनी सच्चाई है। जयनगर पूर्वी पंचायत की सोनीया देवी पति सुनील रविदास, मसोमात चंपा देवी पति स्व बैजनाथ सिंह, गणेश कुमार पिता स्व अर्जुन मोदी सहित दर्जनों परिवारों ने बताया कि पक्का आवास देखने को आंखें तरस गयी है। कई बार सुनने को मिलता है कि पक्का मकान मुहैया कराया जायेगा। लेकिन सिर्फ कानों तक ही सीमित रह जाता है। उन लोगों ने कहा कि अबुआ आवास योजना में जब आवेदन किया तो एक बार फिर उम्मीद जागी कि अब पक्का मकान मिलेगा, लेकिन पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के रवैये के कारण नाम सूची में नीचे कर दिया गया। जिसके कारण आज भी दूसरी जगह रहने को विवश हैं।

लोग मिल कर भारत की तरक्की और भलाई के लिए दुआ करें : मुश्ताक खान

जयनगर (आजाद सिपाही)। प्रखंड के जयनगर पश्चिमी पंचायत अंतर्गत ग्राम गोपालडीह निवासी मोहम्मद मोहसिन खान पत्नी बिलकिस खातून, मोहम्मद इदरीश अंसारी पत्नी सलमा खातून, समीम खान उर्फ समू खान उमराह के लिए रवाना हुए। मुस्लिम धर्मावलंबियों के द्वारा फूल माला देकर विदा किया गया। वहीं समाजसेवी नेशनल पब्लिक स्कूल परसाबाद के निदेशक मुस्ताक खान ने कहा कि जो लोग उमराह के लिए जा रहे हैं, उनके लिए मुसलमान का ईमान ताजा करने और खुदा से गुनाहों की माफी मांगने का मौका होता है। इस मुबारक सफर में जाने वाले लोग गुनाहों की गठरी लेकर जाते हैं लेकिन वहां से इस तरह पाक साफ हो जाते हैं कि जैसे अभी बच्चा मां के गर्भ से पैदा हुआ है। उन्होंने उमराह के सफर में जाने वाले लोग मिलकर भारत की तरक्की और भलाई के लिए दुआ करने की अपील की। मौके पर पंसस मिसवा उद्दीन खान, उप मुखिया हासीम खान, मिसवा आलम, आजाद अंसारी, मुख्तार अंसारी, मुमताज आलम, इदरीश खान, अख्तर अंसारी, अनवर मियां, सतार खान, शाहील रजा सहित दर्जनों लोग मौजूद थे।

पासवान समाज ने सौंपा ज्ञापन

कोडरमा (आजाद सिपाही)। पासवान समाज का एक प्रतिनिधिमंडल पुलिस अधीक्षक कोडरमा से मुलाकात करने गया पर मुलाकात नहीं हो पायी। आवेदन कार्यालय को सौंपा और कार्रवाई करने की मांग की गयी। पुरनानगर गांव के मुकेश पासवान की मां जसवा देवी पति सहदेव पासवान की करेंट से हुई मौत का मामला कोडरमा थाना में दर्ज हुआ था जिसका कांड संख्या-166/24 है । लेकिन आज लगभग दो सप्ताह बीतने के बावजूद भी प्रशासन के द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गयी है जिसे लेकर पासवान समाज और ग्रामीणों का प्रतिनिधिमंडल आरक्षी अधीक्षक कार्यालय कोडरमा गया पर आरक्षी अधीक्षक से मुलाकात नहीं होने पर कार्यालय को आवेदन सौंपकर कार्रवाई की मांग की। अगर प्रशासन अविलंब कार्रवाई नहीं करती है तो समाज और ग्रामीणों के नेतृत्व में आंदोलन किया जायेगा। प्रतिनिधिमंडल मंडल में विजय पासवान, प्रेम प्रकाश पासवान, राजकुमार पासवान, अर्जुन पासवान, मुकेश पासवान, चिककु सिंह, सोनु कुमार पांडेय, पिंकु कुमार दास, विपीन दास, शिवकुमार दास थे।

बस से गिर कर छात्रा की हुई मौत, घर में छाया मातम

आजाद सिपाही संवाददाता

दारु/हजारीबाग। दारू-थाना क्षेत्र के जिनगा निवाशी शीतल कुमारी पिता प्रकाश यादव सब्बी तानिया बस से गिरकर रविवार को घायल हो गई जिसे स्थानीय लोगों के सहयोग से इलाज के लिए आरोग्यम अस्पताल में भर्ती किया गया बच्ची की स्थिति ना सुधरता देख डॉक्टरों ने उसे बेहतर इलाज के लिए रांची राज हॉस्पिटल में रेफर कर दिया जहां इलाज के दौरान सोमवार कि सुबह उसकी मौत हो गयी। प्रत्यक्ष दर्शियों ने बताया कि प्रत्येक दिन की भांति रविवार को भी ट्यूशन पढ़ने के लिए ट्यूशन सेंटर कोर्रा गयी हुई थी। ट्यूशन से अपने घर लौटते वक्त अपनी तीन सहेली के साथ अपने घर लौट रही थी छात्रा ने जिनगा चौक आने से पहले गाड़ी को धीरे करने के लिए बोली इसी बीच गाड़ी हल्की धीरे हुई तभी छात्रा उतरने की कोशिश की इसी बीच गाड़ी की स्पीड ड्राइवर द्वारा बढ़ा दिया गया जिससे यह बस से निचे गिर गयी। छात्रा कि मौत कि खबर सुनते ही उसके घर मे मातम छा गया और परिजनों का रो-रो कर बहुत बुरा हाल था। दारु थाना पुलिस गाड़ी को जब्त कर थाना ले गयी।

एनटीपीसी को मिला पैन इंडिया स्तर खदान सुरक्षा पुरस्कार

आजाद सिपाही संवाददाता

बड़कागांव। एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड की पकरी-बरवाडीह कोयला खनन परियोजना को पहले पैन इंडिया स्तर खदान सुरक्षा पुरस्कार (एमएसए-2024) में बड़े ओपनकास्ट कोयला खदान श्रेणी में तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम, जो खान सुरक्षा महानिदेशालय (डीजीएमएस) के तहत आयोजित किया गया, का उद्देश्य कोयला, धातु, तेल और गैस क्षेत्रों में सर्वोत्तम सुरक्षा प्रथाओं को प्रदर्शित करने वाली खानों को पहचानना और पुरस्कृत करना था। डीजीएमएस द्वारा गठित एक समिति ने विभिन्न क्षेत्रों की खानों को उनकी सुरक्षा प्रथाओं, वार्षिक मात्रा और डीजीएमएस द्वारा आयोजित खान सुरक्षा सप्ताहों में उनके पिछले प्रदर्शन के आधार पर चयनित किया। पकरी-बरवाडीह कोयला खदान की इस सूची में शामिल होना इसके उत्कृष्ट सुरक्षा मानकों और निरंतर प्रदर्शन को रेखांकित करता है। सभी चयनित खानों, जिसमें पकरी-बरवाडीह भी शामिल है, का निरीक्षण डीजीएमएस के वरिष्ठ सदस्यों, कोल इंडिया की सहायक कंपनियों के जीएम स्तर के अधिकारियों, और निजी कोयला कंपनियों के वीपी स्तर के अधिकारियों की एक टीम द्वारा किया गया। इस मूल्यांकन टीम ने 18 जुलाई, 2024 को पकरी-बरवाडीह कोयला खदान का निरीक्षण किया। निरीक्षण और खानों के चयन के आधार पर कोलकाता के बिस्वा बांग्ला सम्मेलन केंद्र में पुरस्कार वितरण समारोह का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष, एनटीपीसी के निदेशक (ईंधन), सीआईएल की सहायक कंपनियों के सीएमडी और निदेशक, एनएमडीसी, एमओआईएल, एचसीएल, सेल, यूसीआईएल के सीएमडी और निदेशक और टाटा स्टील और हिंडालको जैसी प्रमुख निजी कंपनियों के प्रतिनिधि शामिल थे। गौरव के इस पल में, प्रभात कुमार, खान महानिरीक्षक और डीजीएमएस के महानिदेशक ने एनटीपीसी के निदेशक और एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड के अध्यक्ष शिवम श्रीवास्तव और पकरी-बरवाडीह परियोजना के प्रमुख फैज तैयब को तीसरा पुरस्कार प्रदान किया। उनके साथ चंद्र शेखर, खान एजेंट, टीएसएमपीएल के निदेशक और कोयला खनन मुख्यालय और टीएसएमएल के वरिष्ठ अधिकारी भी पुरस्कार ग्रहण करने में शामिल थे। अपने संबोधन में प्रभात कुमार ने एनटीपीसी की दृढ़ प्रतिबद्धता को मजबूत सुरक्षा संस्कृति बनाए रखने और सर्वोत्तम सुरक्षा प्रथाओं को लागू करने के लिए सराहा।

लायंस क्लब ने किया पौधरोपण

कोडरमा (आजाद सिपाही)। जिला मुख्यालय स्थित ध्वजाधारी पहाड़ परिसर में लायंस क्लब के द्वारा बरगद का पेड़ का रोपण किया गया। महंथ सुखदेव दास के आग्रह पर जिला चेयरपर्सन लायन गजेंद्र राम, रीजन चेयरपर्सन सुजीत अम्बष्ट और लायन सदस्य सुनील कुमार सिंह ने मंदिर परिसर में एक बट वृक्ष का पौधा लगाया। साथ ही कुछ छायादार वृक्ष को भी लगाने का प्रस्ताव मिला है जिसे शीघ्र पूर्ण किया जायेगा। मंदिर परिसर के पंडितों ने बताया कि इस परिसर में बट वृक्ष के रोपण से पूजन कार्य में सुविधा होगी। साथ ही उन्होंने अनुरोध किया कि कुछ बांस के पौधे और कुछ आंवले के पौधे को भी रोपण करने की आवश्यकता है। पौधरोपण कार्य मे संदीप कुमार का सराहनीय सहयोग रहा।

अडाणी फॉउंडेशन ने टीबी के मरीजों को दिया पोषण किट

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। गोंदलपुरा खनन परियोजना के तहत अडाणी फॉउंडेशन ने तीसरे चरण के तहत गोद लिए 80 टीबी मरीजों के बीच सोमवार को नि:शुल्क पोषण किट वितरित किया। बड़कागांव स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान अदाणी फाउंडेशन की ओर से वितरित किए गए प्रत्येक किट में च्यवनप्राश, अरहर दाल, चना, गुड़, हरा मूंग, सरसों तेल और हॉर्लिक्स जैसी आहार सामग्रियां शामिल हैं। कार्यक्रम के दौरान मौजूद लोगों ने देश को टीबी मुक्त बनाने की भी शपथ ली। सबने एक स्वर में कहा कि अपने मोहल्ले, गांव और शहर को टीबी मुक्त बनाना है। इस अवसर पर हजारीबाग के जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ राजकिशोर जयसवाल ने कहा, अडाणी फॉउंडेशन टीबी उन्मूलन के क्षेत्र में लगातार उत्कृष्ट कार्य कर रहा है जो प्रशंसनीय और प्रेरक है। अडाणी फॉउंडेशन द्वारा नि:शुल्क एम्बुलेंस भी प्रदान किया गया है, जिससे ग्रामीणों को काफी लाभ मिल रहा है। हजारीबाग क्षेत्र के मरीजों के लिए आपात परिस्थिति में यह एम्बुलेंस सुविधा त्वरित रूप में उपलब्ध है। यह तीसरा चरण है, जिससे बहुत सहायता मिली है। हजारीबाग के जिला कार्यक्रम समन्वयक डॉक्टर जयराम कुमार ने बताया, अडाणी फॉउंडेशन की ओर से अब तक 130 टीबी के मरीजों को गोद लिया जा चुका है, जो अब स्वस्थ हो चुके हैं। वहीं, तीसरे दूसरे चरण के तहत अब 80 मरीजों को लगातार छह महीने तक पोषण आहार प्रदान किये जायेंगे। टीबी के ईलाज में अडाणी फॉउंडेशन द्वारा किए जा रहे प्रयासों से मरीजों को नि:शुल्क पोषण आहार का लाभ मिल रहा है। यह नेक पहल प्रशंसनीय है। इस अवसर पर टीबी विभाग के ट्रेनिंग सुपरवाइजर दीपक कुमार, सीएसआर विभाग के उप प्रबंधक मोहित गुप्ता, एग्जीक्यूटिव अधिकारी तारकेश्वर कुमार शर्मा आदि मौजूद थे।

डीआइजी ने एसडीपीओ कार्यालय का किया निरीक्षण

- सभी लंबित मामलों को जल्द से जल्द कर निपटारा करने का दिया निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

बड़कागांव। बड़कागांव अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी कार्यालय में आज उत्तरी छोटा नागपुर प्रमंडल हजारीबाग के पुलिस उपमहानिरीक्षक सुनील भास्कर ने पहुंचकर कार्यालय से संबंधित सभी कार्यों का निरीक्षण किया। सर्वप्रथम उपमहानिरीक्षक सुनील भास्कर के पहुंचते ही बड़कागांव पुलिस के द्वारा पैरेड के माध्यम से सलामी दिया गया। जिसके बाद उपमहानिरीक्षक सुनील भास्कर बड़कागांव अनुमंडल पुलिस कार्यालय में एसडीपीओ बड़कागांव, बड़कागांव थाना, केरेडारी थाना, डाडीकला, उरीमारी, गिद्दी के पुलिस पदाधिकारी के साथ बैठक कर कई आवश्यक दिशा निर्देश दिये। मौके पर उन्होंने कहा कि क्षेत्र में हो रहे अपराधी घटनाओं पर नियंत्रण के लिए जांच और छापामारी जारी है इसके लिए भी अधिकारी को कई दिशा निर्देश दिये साथ ही उन्होंने लंबित नक्सल मामलों की समीक्षा की और शीघ्र निपटारा के लिए महत्वपूर्ण निर्देश दिये। आगे उन्होंने पत्रकारों को बताया कि क्षेत्र के सभी लंबित आपराधिक मामलों का निष्पादन करने का निर्देश दिया गया है साथ ही साथ भविष्य में पूर्व की तरह नक्सलीयों की घटना ना घटित हो जिसको लेकर सभी पदाधिकारी को कई आवश्यक निर्देश और टिप्स दिए गये। आगे उन्होंने कहा कि बड़कागांव में अपराधिक घटनाएं घटी है जिसको लेकर छानबीन कर जल्द खुलासा किया जायेगा। मौके पर मुख्य रूप से बड़कागांव एसडीपीओ कुलदीप कुमार, बड़कागांव थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल, केरेडारी थाना प्रभारी अजीत कुमार, उरीमारी प्रभारी रामकुमार राम, डाडी कला प्रभारी पिंटू कुमार, गिद्दी थाना प्रभारी कुंदन कुमार, बड़कागांव जेएसआई आशीष भगत, जेएसआई सावित्री कुमारी, जेएसआई इंद्रजीत कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

पुलिस ने दो अपराधियों को न्यायिक हिरासत में भेजा

केरेडारी (आजाद सिपाही)। एनटीपीसी की चट्टी बरियातू कोल माइंस में कोयले की ट्रांसपोर्टिंग कर रही टायकून के कार्यालय के समीप बीते 26 जुलाई को आगजनी की घटना को अंजाम देकर लेवी के मकसद से दहशत फैलाने की कोशिश को अंजाम देने वाले दो अपराधियों को केरेडारी पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायिक हिराशत में भेज दिया है। इस आगजनी कांड में शामिल दो अपराधियों तौकीर अंसारी और तौहिर अंसारी दोनों के पिता शाकिर अंसारी जो की रांची जिला के बुढ़मू थाना के मतवे निवासी हैं को पुलिस ने गिरफ्तार कर केरेडारी कांड संख्या 126/24 भादवि की धारा 115/126/308/324/326/327/351/352 के तहत मामला दर्ज किया है। दोनों अपराधियों ने आगजनी कांड में अपनी भागीदारी स्वीकार किया है। इन अपराधियों ने पूछताछ के क्रम में घटनाक्रम से संबंधित कई राज खोले हैं। इन्होंने पुलिस को बताया की दहशत फैलाने व लेवी के उद्देश्य से इस घटना को अंजाम दिया है ताकि कोल माइंस से मोटी रकम ले सकें लेकिन पुलिस की तत्परता ने इनकी मंसूबों पर पानी फेर कर रख दिया है।

सात माह के गर्भ को गिराने की कोशिश कर रहा डॉक्टर गिरफ्तार

- गर्भपात कराने वाली महिला को भी पुलिस ने हिरासत में लिया

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। बीती रात कोडरमा जिला प्रशासन की टीम ने कार्यवायी करते एक डॉक्टर को भी गिरफ्तार किया है। बताया जाता है कि कोडरमा जेजे कॉलेज के पास चेचाई स्थित वेदांता हॉस्पिटल में बीती रात को कोडरमा सीएस अनिल कुमार के नेतृत्व में छापा मारा गया। सूचना थी कि एक युवती से 7 महीने के गर्भ को पैसे के लालच में वेदांता हॉस्पिटल के डॉक्टर मुन्ना कुमार साव गर्भपात करवाने वाले हैं। उक्त जानकारी पर कोडरमा सीएस कोडरमा ने उपायुक्त मेघा भारद्वाज के निर्देश के अनुसार एक टीम गठित कर उक्त अस्पताल पर छापा मारा गया और गर्भपात कराने वाली महिला सहित डॉक्टर को हिरासत में लिया गया। अन्य महिला कर्मचारियों को बौंड भराकर छोड़ दिया गया, वहीं इस दौरान अन्य पुरुष कर्मचारी भागने में कामयाब रहे। बाद में महिला जिसका गर्भपात का प्रोसेस किया जा रहा था उसे सदर अस्पताल में भर्ती करवा कर विधिवत गर्भपात कराया गया और डॉक्टर मुन्ना कुमार साव को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। कोडरमा के सिविल सर्जन डॉ अनिल कुमार ने कहा घटते लिंग अनुपात को लेकर जिले की बदनामी हो रही थी जिसको लेकर स्वास्थ्य विभाग कार्यवायी कर रही है। फिलहाल इस घटना में पकड़े गये डॉक्टर मुन्ना कुमार साव को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। उधर गिरफ्तार किये गये डॉक्टर मुन्ना कुमार साव ने अपने बचाव में कुछ भी कहने से इनकार कर दिया। छापेमारी अभियान में सिविल सर्जन अनिल कुमार, डॉ मनोज कुमार, कार्यपालक दण्डाधिकारी सना उस्मानी, डीडीएम पवन कुमार, जिला योजना पदाधिकारी अनुप कुजुर, कोडरमा थाना के पुलिस टीम जिसमें महिला पदाधिकारी के अलावे सअनि मो इरसाद अहमद और सशस्त्र बल के जवान शामिल थे। वहीं कोडरमा थाना में इस मामले को लेकर कोडरमा के चिकित्सा प्रभारी रामप्रसाद शर्मा ने कोडरमा थाना में मामला दर्ज कराया है।

40 हजार में किया जा रहा था गर्भपात

कोडरमा वेदांता हॉस्पिटल के द्वारा अवैध रूप से महिला का गर्भपात किये जाने के मामले में बताया जाता है कि अस्पताल में इस तरह के काम करने वाले डॉक्टर मुन्ना कुमार साव एवं इनके अन्य सहयोगी अवैध रूप महिलाओं का गर्भपात कराते थे तथा इसके एवंज में काफी रूपया लेते थे। आज भी कुछ महिला को अपने अस्पताल में भर्ती किया था। इस बाबत यह भी बताया जाता है कि गर्भपात कराने पहुंची उक्त महिला को पहले चंदवारा स्थित कान्ती हॉस्पिटल ले गये जिसके बाद वेदांता हास्पिटल भेजा गया जहां इसके एवज में तीस हजार ओर दस हजार खून चढ़ाने के नाम पर लिया गया।

पर्यटन संवर्धन समिति की बैठक

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु आज उपायुक्त नैंसी सहाय की अध्यक्षता में पर्यटन संवर्धन समिति के सासी निकाय की बैठक सोमवार को समाहरणालय सभाकक्ष की गयी। उपायुक्त ने कहा कि हजारीबाग जिला पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। यहां पर्यटन के क्षेत्र में अपार संभावनाएं है। जिले में प्राकृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक विषयों से जुड़े कई पर्यटक स्थल है। इन्हें विकसित कर सैलानियों को सुविधाएं मुहैया करा कर इसे पर्यटन के मानचित्र पर लाया जा सकता है, जिससे अधिक से अधिक पर्यटकों को इन क्षेत्रों में आने के लिए आकर्षित किया जा सकेगा और स्थानीय स्तर लोगों को रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। बैठक में जिले के कुल 37 दर्शनीय स्थलों को पर्यटन स्थल अधिसूचित करने हेतु विचार विमर्श के उपरांत पर्यटन विभाग को प्रस्ताव भेजा गया। साथ ही पूर्व में अधिसूचित बड़कागांव के मेगालिथ स्थल को बीसेए कैटेगरी और इस्को गुफा को सी कैटेगरी से ए कैटेगरी में अधिसूचित करने हेतु प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक में जिला परिषद अध्यक्ष उमेश प्रसाद मेहता, जिला योजना पदाधिकारी पंकज कुमार तिवारी, कोडरमा सांसद प्रतिनिधि, बगोदर विधायक प्रतिनिधि, बरही विधायक प्रतिनिधि व अन्य उपस्थित थे।

विस्थापित वाहन मालिकों की बैठक संपन्न

टंडवा (आजाद सिपाही)। आम्रपाली परियोजना अंतर्गत विस्थापित वाहन मालिकों की एक बैठक सोमवार को गोसाई स्थान में आयोजित की गयी। जिसकी अध्यक्षता अमलेश नारायण दास, संचालन महेश वर्मा ने किया। बैठक की मुख्य उदेशय आम्रपाली परियोजना में ट्रक मालिकों के साथ हो रही परेशानियों को लेकर विचार विमर्श किया गया। विस्थापित वाहन मालिकों ने एक स्वर में स्वीकार किया कुछ भी हो जाये एब एक जुट होकर पनप रही समस्या को लेकर आगे लड़ाई लड़ी जायेगी। इसमें विभिन्न प्रस्ताव लेकर निर्णय लिये गये है।जिसमें बताया गया की पांच गांव के विस्थापित वाहन मालिक संगठित होकर भलाई के लिये एक स्वर में सहमत हुये। वही आगामी 31 जुलाई को पांचो गांव से चुने गये सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की गयी है। वही हजारीबाग में ट्रको हजारीबाग के ट्रक मालिको ने 28 जुलाई से रोकी गयी है, वह न्यायोचित नहीं है इसका विस्थापित वाहन मालिक विरोध करती है सहित कई निणर्य शामिल है। इस मौके पर आशुतोष मिश्रा, दिलीप राणा, अशोक साहू, संजीत यादव, संतोष यादव, सुरेश साव, विजय साहू, बद्री साव, आदित्य वर्मा, मुकेश यादव, किशन यादव, जुगल यादव, अरविंद सिंह, इंद्र साव, सहित दर्जनों वाहन मालिक उपस्तिथ थे।

रामगढ़ प्रेस क्लब के अध्यक्ष चुने गये बीरू कुमार, धनेश्वर बने सचिव

पत्रकार हित के लिए मिल-जुल कर काम करेंगे, हर समस्या का होगा समाधान: बीरू

अध्यक्ष बीरेंद्र कुमार बीरु और सचिव धनेश्वर प्रसाद निर्वाचित

नवनिर्वाचित अध्यक्ष बीरु को रांची प्रेस क्लब के अध्यक्ष और सचिव ने दी बधाई

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। प्रेस क्लब रामगढ़ के सत्र 2024-26 का चुनाव रविवार की देर शाम परिणाम घोषणा के साथ संपन्न हो गया। चुनाव की प्रक्रिया प्रेस क्लब रामगढ़ के सभागार में सुबह 9.30 बजे से प्रारंभ हुई। इस दौरान कुल 201 मत डाले गये। जिसकी मतगणना प्रेस परिसर में देर रात की गयी। सभी पदों के लिए प्रत्याशियों की घोषणा मुख्य चुनाव पदाधिकारी आनंद अग्रवाल और उनकी टीम के द्वारा की गयी। जिसमें अध्यक्ष पद के लिए वीरेंद्र कुमार वीरू, उपाध्यक्ष पद के लिए प्रदीप कुमार बबलू, सचिव पद के लिए धनेश्वर प्रसाद, सह सचिव पद के लिए नारायण दत्त व्यास, कोषाध्यक्ष के लिए दुर्वेश आलम, कार्यकारिणी सदस्य में दिलीप कुमार सिंह, दीपक कुमार, सौरभ नारायण सिंह, सुरेंद्र कुमार पासवान, सुरेंद्र सिंह, नीरज कुमार, रितेश कुमार, राजकुमार रविदास, शंकर कुमार देवघरिया और मनोहर लहरी विजयी घोषित किये गये। चुनाव संपन्न कराने में मुख्य रूप से जिला अधिवक्ता संघ के उपाध्यक्ष ऋषि कुमार महतो, महासचिव सीताराम संयुक्त सचिव शंभू प्रसाद कोषाध्यक्ष हरखनाथ महतो सम्मानित सदस्य प्रणब मुखर्जी, रामजी, अखौरी कृष्ण बिहारी, जितेंद्र कुमार, लोकेश कुमार, अभिषेक दराद सूरज नायक, संजय घोष के द्वारा कराया गया।

रांची प्रेस क्लब के अध्यक्ष सुरेंद्र सोरेन और सचिव अमरकांत ने दी नवनिर्वाचित अध्यक्ष को बधाई:चुनावी परिणाम आने के बाद रांची प्रेस क्लब के अध्यक्ष सुरेंद्र सोरेन और सचिव अमरकांत प्रेस क्लब रामगढ़ पहुंचे। उसके बाद नवनिर्वाचित अध्यक्ष को बधाई दी साथ ही बेहतर भविष्य की कामना की।

पत्रकारों की भावना भी प्रेस क्लब में रखी जायेगा: बीरू

नवनिर्वाचित अध्यक्ष बीरेंद्र कुमार बीरू ने प्रेस क्लब के सभी साथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि टीम भावना के साथ क्लब के साथ-साथ पत्रकारों के हितों के सम्मान के लिए कार्य किये जायेंगे। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्थान से जुड़े पत्रकार पत्रकार ही कहलाते हैं। जिनकी भावना को भी प्रेस क्लब में रखा जायेगा। साथ ही पत्रकार हित के लिए कई बड़े फैसले लिये जायेंगे, उन्होंने पत्रकारों के लिए मोबाइल संख्या 8409261529 जारी किया है। कहा कि प्रेस क्लब रामगढ़ के साथी किसी भी समय उनसे संपर्क कर सकते हैं।

युवक ने की आत्महत्या जांच में जुटी पुलिस

आजाद सिपाही संवाददाता

पतरातू। पतरातू थाना क्षेत्र के ग्राम कोतो में किराये के मकान में रहने वाले रवि कुमार उम्र 23 वर्षीय ने पंखे में तार के सहारे फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बताया जाता है कि युवक पीवीयुएनएल के यूनिक ट्रेडिंग कंपनी में कार्यरत था। युवक बिहार राज्य के बाढ़ जिला का निवासी था। पुलिस को घटना के जानकारी मिलने के बाद पहुंच कर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। वहीं पुलिस द्वारा आत्महत्या के मामले को लेकर जांच में जुटी है।

E-mail-mdjscb@jscb.gov.in Ph.No. 0651-2913111
JHARKHAND STATE COOPERATIVE BANK LIMITED, RANCHI
1st Floor, Shaheed Chowk, Main Road, Ranchi-834001

Ref.:- 1121 Date: 29.07.2024

Jharkhand State Cooperative Bank Ltd. invites tender from interested bidders for printing and supply of stationery items for Head Office, Regional offices and Branches of Jharkhand State Cooperative Bank Limited.

Last date for submission of Bids: 20.08.2024 till 3.00 PM.

For eligibility criteria and other details, please visit website: **http://www.jscb.gov.in**

Sd/- CEO, JSCB, Ranchi

जिले में विकास को लेकर की गयी समीक्षा

चतरा (आजाद सिपाही)। समाहरणालय के सभा कक्ष में उपायुक्त रमेश घोलप की अध्यक्षता में जिले में स्थित डैम/जलाशय के जीर्णोद्धार, गहरीकरण, सौंदर्यीकरण और पर्यटन के क्षेत्र में विकास हेतु समीक्षात्मक बैठक की गयी। बैठक मे हेरू डैम, भेड़ी फार्म डैम, डुलकी डैम, घरी नाला डैम, गोलाई डैम, ननई डैम, जयप्रकाश डैम, बक्शा डैम, अंजनवा डैम समेत अन्य डैमों के वर्तमान स्थिति की क्रमवार समीक्षा की गयी और कई महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दिये गये। हेरूआ डैम और डहुरी डैम से शहरी जलापूर्ति के लिए आवश्यक कार्रवाई के लिए कार्यपालक अभियंता जलपथ प्रमंडल हजारीबाग को निदेशित किया गया। बैठक में जानकारी दी गयी कि हेरूआ डैम का पूर्व में गहरीकरण किया गया है परंतु जल संचयन क्षमता पर्याप्त नहीं है। इस पर उपायुक्त ने कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद को पेयजल और स्वच्छता प्रमण्डल चतरा के साथ समन्वय स्थापित कर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया। वहीं भेड़ी फार्म डैम में पर्यटन के क्षेत्र में आवश्यकतानुसार विकास के लिए भी प्रतिवेदन उपलब्ध कराने और बक्शा डैम के विकास के लिए प्रखंड विकास पदाधिकारी इटखोरी को कार्यपलाक अभियंता जलपथ प्रमंडल बरही से समन्वय स्थापित कर प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। बैठक में उत्तरी वन प्रमंडल पदाधिकारी राहुल मीणा, दक्षिणी वन प्रमंडल पदाधिकारी मुकेश कुमार, उप विकास आयुक्त पवन कुमार मंडल, जिला योजना पदाधिकारी शिशिर पंडित, कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद बिनिता कुमारी, कार्यपालक अभियंता पेयजल और स्वच्छता प्रमंडल, संबंधित प्रखंड विकास पदाधिकारी समेत अन्य संबंधित पदाधिकारी और कार्यपालक अभियंता उपस्थित थे।

भुरकुंडा में श्रावणी मेला का उद्घाटन

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। भुरकुंडा थाना मैदान में श्रावणी मेला समिति द्वारा आयोजित भव्य श्रावणी मेला का रविवार की शाम उद्घाटन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता भुरकुंडा पंचायत के मुखिया अजय पासवान और संचालन राजेश सोनी ने किया। मेला का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि भारतीय जनतंत्र मोर्चा की केंद्रीय महासचिव निशि पांडेय और झामुमो के केंद्रीय सचिव सह झारखंड परिवहन प्राधिकार सदस्य संजीव कुमार बेदिया ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस दौरान समिति के सदस्यों द्वारा दोनों अतिथियों का बुके और फूल माला पहनाकर सम्मानित किया गया। मौके पर निशि पांडेय ने कहा कि श्रावण माह के पावन अवसर पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रावणी मेला लगने के बाद क्षेत्रवासियों में हर्ष का माहौल है। मेला में दूर-दराज ग्रामीण क्षेत्रों से आये लोगों ने झूला का आनंद लेते हुए एक से बढ़कर एक लजीज व्यंजनों का लुत्फ उठाया। मौके पर विनय सिंह, संजय वर्मा, मेला कमेटी के अजय पासवान, झामुमो नेता मुकेश राऊत, बबलू ठाकुर, राजेश सोनी, सागर कुमार सहित दर्जनों लोग मौजूद थें।

नगर परिषद कर्मियों ने विधायक से मुलाकात कर लगायी मदद की गुहार

आजाद सिपाही संवाददाता

बरकाकाना। रामगढ़ नगर परिषद के दैनिक वेतन पर कार्यरत सेनेटरी सुपरवाइजर और जमादार ने बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा। सौंपे गये ज्ञापन में नगर परिषद में कार्यरत सुपरवाइजर और जमादार ने अपनी परेशानियों को साझा करते हुए बताया है कि पिछले आठ वर्षों से अपना कार्य निष्ठा पूर्वक करते हुए अपना बहुमूल्य समय शहर की स्वच्छता के लिए दिया है। झारखंड सरकार द्वारा निकाली गयी नियुक्ति में पूर्व से कार्यरत सेनेटरी सुपरवाइजर, जमादार और अन्य कर्मियों का ख्याल नहीं रखा गया है। निकाली गयी नियुक्ति में पी जी डिप्लोमा इन सेनेटरी की मांग की गयी है, जो पूरे झारखंड में इस कोर्स की पढ़ाई नहीं की जाती हैं। निकाली गयी भर्ती प्रक्रिया में होम गार्ड, पारा शिक्षक या स्वास्थ्य विभाग के तर्ज पर पूर्व में कार्यरत कर्मियों के लिए आरक्षण या उम्र सीमा में कोई छूट भी नहीं दी गयी है, जिसके कारण सभी कर्मी भर्ती परीक्षा से वंचित रह गये हैं। साथ ही उम्र बीत जाने के कारण दूसरे संस्थान में कार्य करने लायक भी नहीं है। उन्होंने आशंका जताई है की भर्ती प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात सुपरवाइजर, जमादार व अन्य कर्मी बेरोजगार हो जायेंगे। मौके रोशन कुमार, सलमान अंसारी, जमादार गुलाम मुतुर्जा, अशोक महतो, मुमताज अंसारी, अरुण साहू, मो शमीम अख्तर, राजेंद्र कुमार ठाकुर, अलिफ आलम, वसीम अकरम, रंजित गोप, चंदन कुशवाहा, आर्यन कुमार सिंह, बालदेव महतो, प्रयाग बेदिया, सुमित श्रीवास्तव और विपिन कुमार महतो उपस्थित रहे।

भारतीय रेल
आज़ादी का अमृत महोत्सव
भारत सरकार
रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)

सं. 2018/ट्रैक–I(पी)/आरएसपी–ईयूआर/वॉल.। दिनांक : 29.07.2024

शुद्धिपत्र सं. 7

विषय : लॉन्ग रेल एक्सचेंज (अनलोडिंग एवं लोडिंग) सिस्टम और 05 (पांच) वर्ष के लिए इसकी वार्षिक अनुरक्षण संविदा (भारतीय रेल द्वारा मौजूदा ईयूआर उपलब्ध कराए जाने हैं) की आपूर्ति हेतु ई–निविदा सं. टीकेपी–1–2024.

इच्छुक बोलीदाताओं को सूचित किया जाता है कि वे शुद्धिपत्र के ब्यौरों के लिए http://ireps.gov.in वेबसाइट देखें।

निविदा समापन तिथि और ई–बोली खोलने की तिथि बदलकर 13.08.2024 कर दी गई है।

(आलोक कुमार)
कार्यपालक निदेशक/रेलपथ (पीएंडपी)
कमरा नं. 256–डी, रेल भवन,
नई दिल्ली – 110001
फोन : 011–23304852
ई मेलः alokkumar.g@gov.in

2310/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

झारखंड राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ के शिष्टमंडल ने ग्रामीण विकास मंत्री को सौंपा मांग पत्र

चतरा (आजाद सिपाही)। झारखंड राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ का शिष्टमंडल आज ग्रामीण विकास मंत्री डॉ इरफान अंसारी से उनके आवास में मिलकर महासंघ की ओर से पुष्प गुच्छा देकर सम्मानित किया गया। महासंघ के महामंत्री सुनील कुमार साह के नेतृत्व में झारखंड राज्य आजीविका कंप्यूटर आपरेटर संघ के उचित मांगों से संबंधित मांग पत्र सौंपा गया। राज्य में कार्यरत डाटा एंट्री ऑपरेटर जो झारखंड स्टेट लवली हुड प्रमोशन सोसाइटी ग्रामीण विकास विभाग में विगत 2014 से संविदा पर कार्यरत है। जिन्हें वर्तमान में इस संवर्ग को 14,036 रुपया मानदेय दिया जा रहा है। विगत तीन वर्षो से इन्हे कोई वेतन/ मानदेय की वृद्धि नही की गयी। कोई प्रोन्नति नही दी गयी, बेतहाशा महंगाई में मात्र 14,036 रुपये दी जा रही है। इन सभी बातों की लिखित जानकारी महासंघ के महामंत्री सुनील कुमार साह ने माननीय मंत्री को दिया। यह भी जानकारी दी गयी की इस संवर्ग को आज तक मानव संसाधन नियमावली के लेवल 7 में आजतक नहीं जोड़ा गया। विदित है की ग्रामीण विकास विभाग झारखंड सरकार के कार्यालय में संविदा पर कार्यरत कंप्यूटर आपरेटर को आज 28000 रुपया एक मुश्त दी जा रही है। जबकि डाटा एंट्री ऑपरेटर को 26,300 रुपया मानदेय की मांग की गयी है। पी एफ की कोटौती, चिकित्सा सुविधा, बीमा, आवास से 15 के बीच पदस्थापन आदि की मांग की गयी है। महासंघ मंत्री से इन्हे तत्काल 26,300 रुपये प्रति माह मानदेय, राज्यकर्मियों की भांति सभी सुविधाएं देने की मांग की गयी। इस दौरान मंत्री ने कहा कि आपका वेतन तुरंत बढ़ाई जा रही है, और एफटीई में जोड़ने हेतु पत्र अग्रसरित की जा रही है। स्पष्ट आश्वाशन मिलने पर संघ/ महासंघ द्वारा खुशी जाहिर की गयी। मांग पूरा होने की उम्मीद भी जगी है। शिष्टमंडल में सुनील कुमार साह, महामंत्री, गणेश प्रसाद सिंह, संरक्षक, आशीर्वाद महतो, सौरभ कुमार, विनोद कुमार, संघ के मो. रिजवान, कार्यकारी अध्यक्ष, पंकज कुमार, महासचिव, करण कुमार गुप्ता, अध्यक्ष, मो राशिद, मो परवेज आलम आदि शामिल थे।

जीएसटी विभाग जांच को लेकर पहुंची आरा सारूबेड़ा

कुजू (आजाद सिपाही)। आरा सारूबेड़ा स्थित कोयला व्यवसाई संदीप साहू के आवास में सोमवार को जीएसटी विभाग जांच को लेकर पहुंचे। इस दौरान विभाग द्वारा आवास में जांच किया। जबकि विभाग के साथ स्थानीय पुलिस भी मौजूद रही। समाचार लिखे जाने तक जांच चल रही थी। वहीं, अधिकारियों ने जांच के बाद ही कुछ बताने की बात कही।

डेढ़ वर्ष से वेतन नहीं मिलने पर कॉलेज कर्मियों ने की तालाबंदी

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। डेढ़ वर्ष से बकाया वेतन और सरकार से मिली अनुदान की राशि भुगतान की मांग को लेकर सोमवार को कस्तूरबा इंटर महिला महाविद्यालय के व्याख्याताओं व कॉलेज कर्मियों ने गेट पर तालाबंदी किया। इस दौरान मधु सिंह, सोमा पांडेय, शाहिदा खातुन, प्रिया रानी, गोविंद झा, सुधीर कुमार, डॉ शशिधर कुमार, मोनी ज्योति, ललिता कुमारी, नीलिमा झा, स्नेहा प्रसाद, रविश कुमार सहित कई व्याख्याता और कॉलेजकर्मियों ने प्रभारी प्राचार्या रूमा सिंह मनमानी व लापरवाही का आरोप लगाया। आक्रोशित व्याख्याताओं व कर्मियों ने कहा कि सरकार से वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए अनुदान के रूप में मिली 12 लाख रुपये की राशि तीन माह पूर्व कॉलेज को मिला है। लेकिन प्रभारी प्राचार्या रूमा सिंह द्वारा उक्त राशि का वितरण कॉलेज के व्याख्याताओं और कर्मियों के बीच नहीं किया है। उन्होंने यह भी कहा कि कॉलेज में कार्यरत लोगों को विगत डेढ़ वर्ष से मानदेय भी नहीं मिला है। इतना ही नहीं महाविद्यालय के कई व्याख्याता और कर्मी बीमार होने के बावजूद पैसे के अभाव में इलाज नहीं करा पा रहे हैं। अनुदान की राशि भुगतान की मांग को लेकर एसडीओ सहित शासी निकाय के अध्यक्ष को भी कई बार पत्राचार किया गया है। विवश होकर कॉलेज के व्याख्याताओं और कर्मियों ने तालाबंदी का निर्णय लिया है। प्रभारी प्राचार्या रूमा सिंह पर मनमानी का आरोप लगाते हुए व्याख्याताओं और कर्मियों ने बताया कि बिना किसी सूचना के कॉलेज के पांच व्याख्याताओं का पीएफ बंद कर दिया गया है। उनमें गोविंद झा, सुधीर कुमार, प्रिया रानी, नीलिमा झा और मोनी ज्योति शामिल हैं।

ए ला एंगलाइज स्कूल में सूर्या फाउंडेशन ने किया पौधरोपण

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। पर्यावरण को हर-भरा बनाये रखने को लेकर सूर्या फाउंडेशन के तत्वावधान में सोमवार को विभिन्न गांवों और बिरसा चौक भुरकुंडा स्थित ए ला एंगलाइज स्कूल में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत एंगलाइज स्कूल के प्राचार्य विजयंत कुमार, केजी की प्राचार्या अंजू पटेल और सूर्या फाउंडेशन झारखंड क्षेत्र प्रमुख राकेश कुमार महतो ने पौधारोपण कर किया। मौके पर झारखंड क्षेत्र प्रमुख राकेश कुमार महतो ने कहा कि एक पेड़ सौ पुत्र के समान होता है, इसलिए सबों अपने जीवन काल में कम से कम एक पौधा जरूर लगाना चाहिए। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षक वर्षा टेटे, टिवंकल पॉल, सपना, दुर्गा महतो, शीला, मेरी सहित विद्यालय परिवार का विशेष योगदान रहा।

भारतीय खाद्य निगम / FOOD CORPORATION OF INDIA
क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर / REGIONAL OFFICE, BHUBANESWAR

ई-निविदा आमंत्रण सूचना / Notice Inviting e-Tenders

सहायक महाप्रबंधक (सीई) भा खा नि, क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर निम्नलिखित कार्यों के लिए https://eprocure.gov.in/eprocure/app पर दवि बोली प्रणाली के तहत भारतीय खाद्य निगम की ओर से ऑनलाइन प्रतिशत दर पर निविदाएं आमंत्रित करता है ।

The Assistant General Manager (CE) FCI, Regional Office, Bhubaneswar invites on behalf of Food Corporation of India online percentage rate tenders under two bid systems at **https://eprocure.gov.in/eprocure/app** for following works.

NIT NO. **CE- 02 (01)/ 2024-25**. Name of Work- **Changing of AC roof sheet of Godown No. 3 to 7 and verandah roofing of G No. 1 & 2 (rail side) along with Provision of Verandah roof (Road side) for G. No 1 to 4 at FCI FSD Balijhori**. Estimated Cost **Rs. 2,83,52,783/- (Rupees Two Crores Eighty-three lakhs Fifty-two thousand Seven hundred Eighty-three Only)**. Earnest Money- **Rs. 5,67,060/- (Rupees Five lakhs Sixty-seven thousand Sixty Only)**, Period of Completion **180 Days**. Last time and date of submission of bid: **12/08/2024 upto 2:00 pm.**

NIT NO. **CE- 02 (02)/ 2024-25**. Name of Work- **Replacement of CGI Sheets with profile sheets of Godown no. 1, isolation shed and Cycle stand at FSD Jagannathpur**. Estimated Cost **Rs. 39,12,819/- (Rupees Thirty-nine lakhs Twelve thousand Eight hundred Nineteen Only)**. Earnest Money- **Rs. 78,260/- (Rupees Seventy-eight thousand Two hundred sixty Only)**, Period of Completion **150 Days**. Last time and date of submission of bid: **01/08/2024 upto 2:00 pm.**

NIT NO. **CE- 02 (03)/ 2024-25.** Name of Work- **Replacement of CGI Sheets with profile sheets of Godown no. 1 at FSD Hirakud.** Estimated Cost **Rs. 37,08,943/- (Rupees Thirty seven lakhs Eight thousand Nine hundred Forty-three Only)**. Earnest Money- **Rs. 74,180/- (Rupees Seventy-four thousand One hundred Eighty Only)**, Period of Completion **120 Days**. Last time and date of submission of bid: **01/08/2024 upto 2:00 pm.**

NIT NO. **CE- 02 (04)/ 2024-25**. Name of Work- **Replacement of AC roof sheet of Godown No. 3 & 4 with Profile sheet at FSD Bhubaneswar.** Estimated Cost **Rs. 29,37,865/- (Rupees Twenty-nine lakhs Thirty-seven thousand Eight hundred Sixty-five Only)**. Earnest Money- **Rs. 58,760/- (Rupees Fifty Eight Thousand Seven Hundred Sixty Only)**. Period of Completion **150 Days**. Last time and date of submission of bid: **01/08/2024 upto 2:00 pm.**

NIT NO. **CE- 02 (05)/ 2024-25**. Name of Work- **Replacement of damaged AC sheets of Godown No. 1 with profile sheet at FSD Jaleswar**. Estimated Cost **Rs. 21,31,188/- (Rupees Twenty-one lakhs Thirty-one thousand One hundred Eighty-eight Only)**. Earnest Money- **Rs. 42,630/- (Rupees Forty-two thousand Six hundred Thirty Only)**, Period of Completion **120 Days**. Last time and date of submission of bid: **01/08/2024 upto 2:00 pm.**

NIT NO. **CE- 02 (06)/ 2024-25**. Name of Work- **Replacement of damaged AC sheets of Godown No. 2 with profile sheet at FSD Phulbani**. Estimated Cost **Rs. 21,13,249/- (Rupees Twenty-one lakhs Thirteen thousand Two hundred Forty-nine Only)**. Earnest Money- **Rs. 42,270/- (Rupees Forty-two thousand Two hundred Seventy Only)**, Period of Completion **120 Days**. Last time and date of submission of bid: **01/08/2024 upto 2:00 pm.**

बोली प्रपत्र एवं अन्य विवरण **www.eprocure.nic.in** के वेबसाईट से प्राप्त की जा सकती है ।
The bid forms and other details can be obtained from the website **www.eprocure.nic.in.**
नोट : किसी भी विवादित स्थिति में भूल अंग्रेजी पाठ ही मान्य होगा ।

श्री गुरु नानक स्कूल में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान

डीएफओ हुए शामिल, पौधरोपण को लेकर बच्चों को किया जागरूक

मां हमें प्यार, दुलार और हमारी सुरक्षा करती है, उसी तरह पेड़ो की रक्षा करें: नीतीश कुमार

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। श्री गुरु नानक पब्लिक स्कूल के तत्वावधान में 27 जुलाई से 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान शुरू की गयी। इस अभियान को मां से जोड़ा गया है। साथ ही लक्ष्य रखा गया है कि हर व्यक्ति अपनी मां के नाम पर एक पेड़ लगाये। भावनात्मक जुड़ाव के बाद हर व्यक्ति अपनी मां के नाम एक पेड़ लगायेगा। यह हमारी मां और मां प्रकृति के प्रति एक श्रद्धांजलि है। इसी क्रम में सोमवार को श्री गुरु नानक पब्लिक स्कूल के बच्चों ने अपनी प्रकृति मां के प्रति श्रद्धाभाव अर्पित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीएफओ नितिश कुमार, एसबीआई के रीजनल मैनेजर प्रसून कुमार, ब्रांच मैनेजर पूनाश्रीं ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि नीतीश कुमार ने बताया कि हमें पौधे की कैसे देखभाल करनी चाहिए।

सुंदर वातावरण के लिए अत्यधिक लगाये पौधेः हरजाप

स्वागत भाषण देते हुए स्कूल के प्राचार्य हरजाप सिंह ने कहा कि सुंदर वातावरण के लिए अत्यधिक पौधे लगाए, तभी जाकर वातावरण शुद्ध होगी।

मौके पर गुरुद्वारा प्रधान परमदीप सिंह कालरा, विद्यालय प्रबंधक कमेटी अध्यक्ष सरदार हरपाल सिंह अरोड़ा, उपाध्यक्ष सरदार परमिंदर सिंह जस्सल, सरदार कुलजीत सिंह कालरा, उपाध्यक्ष सह प्रबंधक सरदार मनमोहन सिंह लांबा सहित स्कूल प्रबंधक कमेटी के सदस्य सरदार परमजीत सिंह चमन, सरदार हरदीप सिंह, सरदार पुश्विंदर सिंह छाबड़ा, सरदार कुलजीत सिंह छाबड़ा, सरदार इंद्रपाल सिंह सैनी, सरदार ब्रह्म भसीन, सरदार विक्रमजीत सिंह कोहली, मीडिया प्रभारी सरदार करमजीत सिंह जग्गी आदि उपस्थित थे।

बच्चों के बीच डेढ़ सौ पौधे बांटे गये

कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथियों के द्वारा बच्चों के बीच डेढ़ सौ से अधिक पौधों का वितरण किया। साथ ही पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वही, स्कूल प्रबंधक कमेटी और प्राचार्य हरजाप सिंह ने अतिथियों को मोमेंटो और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

P.P.K. COLLEGE (BUNDU) RANCHI
(A CONSTITUENT UNIT OR RANCHI UNIVERSITY, RANCHI)

TENDER NOTICE

Sub: Notification for calling sealed quotation for Cloud based Library Management Software.

Work Description:- On behalf of Ranchi University, PPK College, Bundu is invited a sealed quotation for Design, Development, Implementation, Testing, Demonstration, Training, Books Entry, Maintenance and execution of all infrastructure relating to racks and bookshelves of cloud based Library Management Software for Panch Pargana Kisan College, Bundu for the period of one year from complition of the work. The interested firm can send a sealed quotation including full details and terms and conditions. The quotation should reach the undersigned on or before 8 August 2024

Note: -

1) Quotation received after last date will not be entertained.
2) Applicant/Seller should be minimum 10 years of experience in IT field.
3) Applicant/Seller should be registered in GSTIN.
4) Demand Draft of Rs. 500/-(Non-refundable) in favour of Principal P. P. K. College, Bundu at the time submission of Quotation.

Undersign has power to cancel the tender/quotation without given any prior information.

Sl. No. G/PPK/95/24
Date 29/07/2024

Sd/-
Mukul Kumar
Prof-In-Charg

मनु का कमाल

जब पूरा देश यह आस लगाये बैठा है कि पेरिस ओलिंपिक में हमारे ऐथलीट टोक्यो में जीते अब तक के सबसे ज्यादा 7 पदकों का रिकॉर्ड तोड़ कर नयी और लंबी लकीर खींचेंगे, तब मनु भाकर की जीत की खबर ने स्वाभाविक ही सबका जोश कई गुना बढ़ा दिया है। उनका यह ब्रॉन्ज मेडल सिर्फ इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि यह पेरिस ओलिंपिक में किसी भारतीय ऐथलीट का पहला मेडल है। इस उपलब्धि की ऐतिहासिक चमक के पीछे कई और बातें हैं। पहली बात तो यह कि मनु ने ब्रॉन्ज मेडल पर कामयाब निशाना लगा कर एक साथ कई कीर्तिमान स्थापित कर दिये हैं। वह ओलिंपिक मेडल जीतने वाली देश की पहली महिला शूटर हो गयी हैं। इससे पहले इस ऑल बॉयज क्लब में राज्यवर्धन सिंह राठौर, अभिनव बिंद्रा, गगन नारंग और विजय कुमार ही थे। यही नहीं, मनु पिछले 20 साल में किसी इंडिविजुअल इवेंट में ओलिंपिक के फाइनल में पहुंचने वाली पहली महिला भी बनीं। 10 मीटर एयर पिस्टल मुकाबले में तो आज तक कोई महिला शूटर ओलिंपिक फाइनल में भी नहीं पहुंची थी। मनु जिस मंजिल पर पहुंची हैं, उसे उनकी उतार-चढ़ाव भरी यात्रा भी खास बनाती है। मात्र 19 साल की उम्र में टोक्यो ओलिंपिक तक पहुंच कर वहां अचानक पिस्टल खराब होने की वजह से चूक जाना किसी भी टीनेजर के लिए कितना बड़ा झटका होगा, यह आसानी से समझा जा सकता है। मनु न केवल उस झटके से उबरीं, बल्कि अगले ही ओलिंपिक में जीत दर्ज करा कर अपनी फाइटिंग स्पिरिट का सिक्का जमा लिया। सबसे बड़ी बात यह है कि मनु महज एक ऐथलीट नहीं हैं। वह युवा ऐथलीटों की उस पूरी कौम की नुमाइंदगी करती हैं, जो देश का गौरव बढ़ाने के अभियान में लगे हैं। चाहे नीरज चोपड़ा हों या पीवी सिंधु या विनेश फोगाट और मीराबाई चानू- ये उन दर्जनों नामों में शुमार हैं, जो अपना खून-पसीना जलाते हुए देश का मान बढ़ाने में लगे हैं। इनमें से कई नाम अगले कुछ दिनों में देश को सुनहरी आभा प्रदान करें तो आश्चर्य नहीं। इसी बिंदु पर उन प्रयासों को दर्ज करना भी महत्वपूर्ण हो जाता है, जिनकी बदौलत ये खिलाड़ी बेहतरीन प्रदर्शन कर पा रहे हैं। चाहे सरकार की ओर से मुहैया करायी जाने वाली सुविधाएं हों या भारतीय कॉरपोरेट जगत की ओर से स्पॉन्सर की जाने वाली सहूलियतें- इनका ऊंचा होता ग्राफ ही वह माहौल बनाता है, जिसमें खिलाड़ी ऊंचे मनोबल के साथ पदक तक पहुंचने वाली छलांग लगा पाता है। गौर करने की बात है कि पिछले आयोजनों के मुकाबले पेरिस ओलिंपिक में इंडिया इंक ने अपना निवेश 30-40 फीसदी बढ़ाया है। मनु की ताजा उपलब्धि की खासियत यही है कि इसमें पूरे देश की भावना, उत्साह और प्रोत्साहन की झलक दिख रही है।

सबसे बड़ी बात यह है कि मनु महज एक ऐथलीट नहीं हैं। वह युवा ऐथलीटों की उस पूरी कौम की नुमाइंदगी करती हैं, जो देश का गौरव बढ़ाने के अभियान में लगे हैं। चाहे नीरज चोपड़ा हों या पीवी सिंधु या विनेश फोगाट और मीराबाई चानू- ये उन दर्जनों नामों में शुमार हैं, जो अपना खून-पसीना जलाते हुए देश का मान बढ़ाने में लगे हैं।

अभिमत
आजाद सिपाही

हिंदू समाज में कांवड़ यात्रा कई किलोमीटर चलने वाली, एक कठिन तीर्थयात्रा है। कुछ कांवड़िए डाक कांवड़ भी लाते हैं। इसमें गंगाजल से भरे कांवड़ को बिना जमीन पर रखे भगवान शिव की मूर्ति या शिवलिंग को अर्पित करने और सात्विक भोजन ग्रहण करने की मान्यता है। करोड़ों हिंदू पवित्र दिनों में तामसिक खाद्य वस्तुओं, जैसे प्याज-लहसुन आदि के साथ साधारण नमक तक का सेवन भी नहीं करते हैं।

भोजन का मजहब और राजनीति

बलबीर पुंज

कांवड़ संबंधित मामले में सुनवाई करते हुए शीर्ष अदालत ने भी उपभोक्ताओं के अधिकारों से जुड़े कानूनों की देश भर में अनुपालना पर बल दिया है। जब नामपट्टिका का मामला सामने आया, तब मेरे समक्ष नाना प्रकार के विचार आये। उसमें सात्विक भोजन की पवित्रता से भी जुड़ा विचार था। मुझसे कहा गया कि मुस्लिम समुदाय में 'हलाल' और यहूदी समाज में 'कोशर' की भांति सनातन परंपरा में 'सात्विक' की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है और 'सात्विक भोजन' करने वाले हिंदुओं की संख्या बहुत कम है।

गत शुक्रवार (26 जुलाई) को सर्वोच्च न्यायालय ने कांवड़ मार्ग पर नामपट्टिका संबंधित आदेश पर रोक को आगामी पांच अगस्त तक के लिए बढ़ा दिया है। इस मुद्दे के तीन पहलू सामने आये हैं। पहला-यह उपभोक्ताओं के जानने के अधिकार से जुड़ा है। दूसरा-कानून-व्यवस्था को बनाये रखना राज्य का दायित्व है और वह भंग न हो, उसकी जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की है। तीसरा-यह कोई नयी व्यवस्था नहीं है, अपितु पहले से स्थापित कानून-नियम के अनुरूप है, परंतु राजनीति से प्रेरित बहस ने इस विषय को हिंदू-मुसलमान बना दिया। यह दिलचस्प है कि इस निर्णय का मुखर विरोध करने वाला राजनीतिक वर्ग वही है, जो लोकसभा चुनाव में बारंबार प्रचार कर रहा था कि सत्तासीन होने पर घर-घर जाकर लोगों से नाम के साथ उनकी जाति भी पूछेगा।

प्रश्न यह है कि देश के विभिन्न मतावलंबियों को अपनी आस्था के अनुरूप भोजन चुनने का अधिकार है या नहीं? यहूदी समाज में कोशर की मान्यता है। इसमें खाद्य उत्पादों को लेकर मजहबी नियम है। इनके समुदाय में केवल खाना ही नहीं, अपितु भोजन का स्थान भी कोशर होना चाहिए। इसी तरह, इस्लाम में हलाल की अवधारणा है, जिसका अर्थ वैध है। मुसलमानों के लिए शूकर का मांस हराम है। यही कारण है कि जब मुस्लिम समाज में ईद या फिर मुहर्रम का पर्व होता है, तो उनकी मजहबी आस्था का सम्मान करते हुए यातायात परिचालन तक में अस्थायी तौर पर उचित परिवर्तन किए जाते हैं। हिंदू समाज में कांवड़ यात्रा कई किलोमीटर चलने वाली, एक कठिन तीर्थयात्रा है। कुछ कांवड़िए डाक कांवड़ भी लाते हैं। इसमें गंगाजल से भरे कांवड़ को बिना जमीन पर रखे भगवान शिव की मूर्ति या शिवलिंग को अर्पित करने और सात्विक भोजन ग्रहण करने की मान्यता है। करोड़ों हिंदू पवित्र दिनों में तामसिक खाद्य वस्तुओं, जैसे प्याज-लहसुन आदि के साथ साधारण नमक तक का सेवन भी नहीं करते हैं।

आस्था के मुताबिक खाना-पीना सबका दायित्व, शासकीय व्यवस्था के साथ सभ्य समाज भी जवाबदेह

इतना ही नहीं, नवरात्र के पवित्र दिनों में यदि कोई गैर-मजहबी कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, तब चाहे नवरात्र के व्रत रखने वाले सीमित हों, उनके खाने-पीने के लिए अलग से विशेष व्यवस्था की जाती है। जिस दिशा निर्देश पर विवाद हुआ, उसमें कहीं भी यह नहीं लिखा था कि कोई गैर-हिंदू कांवड़ यात्रा के मार्गों पर अपनी दुकान-ढाबा-ठेला आदि (मांस विक्रेताओं को छोड़ कर) नहीं लगा सकता। इस आदेश के अनुसार, प्रत्येक दुकानदार-ढाबा संचालक, चाहे वह किसी भी मजहब का हो, उसे अपने वास्तविक नाम की पट्टी लगानी थी। इस शासनादेश की एक पृष्ठभूमि भी है।

कई गैर-हिंदू अपनी वास्तविक पहचान छिपाकर देवी-देवताओं आदि के नामों पर खाद्य-पेय दुकानों, ढाबों का संचालन करते हैं। आखिर अपनी असली पहचान छिपाने और गलत पहचान बताने के पीछे क्या मंशा हो सकती है? यहां बात केवल उपभोक्ता को धोखा देने तक सीमित नहीं है। इस छल के खुलने पर तीर्थयात्रियों की आस्था पर कुठाराघात की बात उठने पर छोटी-सी घटना भी दंगे का रूप ले सकती है। इस आशंका को निरस्त करने तथा कानून-व्यवस्था और सांप्रदायिक सौहार्द को बनाये रखने हेतु दुकानों-ढाबों आदि पर नामपट्टिका लगाने का आदेश बताया गया था।

उपभोक्ताओं के अधिकार की रक्षा करने हेतु देश में पहले से विनियमन हैं। वर्ष 2005 से जारी जागो ग्राहक जागो रूपी केंद्रीय उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम के साथ वर्ष 2006 में पारित खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम और वर्ष 2011 में लागू 'खाद्य सुरक्षा मानक प्राधिकरण' से उपभोक्ताओं के जानने के अधिकार की रक्षा की जा रही है। इन कानूनों के अनुसार, खाद्य परिसरों में सभी प्रतिष्ठानों को लाइसेंस/पंजीकरण संख्या प्रदर्शित करना अनिवार्य है, जिसमें धारक के नाम का भी उल्लेख होता है। रेलवे स्टेशनों पर पंजीकृत विक्रेता और टैक्सी-ऑटो के मालिक-चालक अपना विवरण प्रदर्शित करते हैं। अधिकतर ऑनलाइन एप में भोजन-दवा-राशन आदि वस्तुओं का वितरण करने वालों का नाम उपभोक्ताओं को दिखता है।

कांवड़ संबंधित मामले में सुनवाई करते हुए शीर्ष अदालत ने भी उपभोक्ताओं के अधिकारों से जुड़े कानूनों की देश भर में अनुपालना पर बल दिया है। जब नामपट्टिका का मामला सामने आया, तब मेरे समक्ष नाना प्रकार के विचार आये। उसमें सात्विक भोजन की पवित्रता से भी जुड़ा विचार था। मुझसे कहा गया कि मुस्लिम समुदाय में 'हलाल' और यहूदी समाज में 'कोशर' की भांति सनातन परंपरा में 'सात्विक' की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है और 'सात्विक भोजन' करने वाले हिंदुओं की संख्या बहुत कम है। ऐसा कहने वाले या तो भारतीय संस्कृति को नहीं समझते या पूर्वाग्रह के शिकार हैं। मूलतः सनातन संस्कृति में एकरूपता के बजाय समरसता का दर्शन है। एकेश्वरवादी मजहबों के प्रतिकूल इसमें 'सह-अस्तित्व' की भावना है। प्रत्येक सनातनी को अपने देवी-देवता को चुनने, उनकी आराधना करने और उनसे आध्यात्मिक पूर्ति करने की स्वीकृति है। अपने बहुलतावादी चिंतन के अनुरूप सनातन में 'सात्विक भोजन' को परिभाषित करने हेतु कोई संकीर्ण इकाई नहीं है। यह एक सनातनी पर निर्भर करता है कि उसके लिए 'सात्विक' क्या है। मेरा मत है कि देश में यदि एक भी हिंदू, मुस्लिम या यहूदी अपनी मजहबी आस्था के अनुरूप भोजन करना चाहता है, तो उसकी पूर्ति करने का दायित्व हमारी सांविधानिक-शासकीय व्यवस्था के साथ सभ्य समाज का भी है।

कौन-सा खाद्य उत्पाद मुसलमानों की मजहबी मान्यताओं के अनुरूप है, उसे निर्धारित करने के लिए वर्षों से निजी संस्थाओं द्वारा 'हलाल' प्रमाणपत्र जारी हो रहे हैं। इसी तरह, अन्य आस्थाओं के अनुरूप भोजन आवश्यकतानुसार उपलब्ध होते हैं। वैसे ही कांवड़ियों के 'भोजन चुनने के अधिकार' को लिया जाना चाहिए। उसे सांप्रदायिक विवाद का मुद्दा बनाने का कोई औचित्य नहीं है।

जमशेदपुर की खबरें

शिक्षक पात्रता परीक्षा में भूमिज भाषा को शामिल कराने के लिए तीन विधायकों ने की सीएम से मुलाकात

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर/पोटका। झारखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा-2024 एवं झारखंड कर्मचारी चयन आयोग की और से ली जानेवाली परीक्षा में आदिवासी भूमिज भाषा को शामिल करने की मांग को लेकर पोटका के विधायक संजीव सरदार के नेतृत्व में भूमिज समाज के युवाओं का एक प्रतिनिधिमंडल रांची में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से सोमवार को मिला। इस दौरान विधायक मंगल कालिंदी और विधायक समीर महंती भी मौजूद थे। प्रतिनिधिमंडल ने ज्ञापन सौपकर शिक्षक पात्रता परीक्षा-2024 जेएससी की और से ली जानेवाली परीक्षा मे जनजातीय भूमिज भाषा को शामिल करने की मांग किया है। ज्ञापन में कहा गया है कि झारखंड अधिविद्य परिषद, रांची के द्वारा विज्ञापन संख्या-30/2024, दिनांक-18.07.2024 के तहत शिक्षक पात्रता परीक्षा-2024 के लिये ओन-लाईन आवेदन लिया जा रहा है। इस विज्ञापन के 2 (च) मे उल्लेख किया गया है कि शिक्षक पद पर नियुक्ति हेतू अभ्यर्थी को भाषा-2 मे कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग के अधिसूचना संख्या-1428, दिनांक-10.03.2023 (प्राथमिक कक्षा (कक्षा 01 से 05) और अधिसूचना संख्या-1427, दिनांक- 10.03.2023 (उच्च प्राथमिक कक्षा (कक्षा-06 से 08) के लिये) मे उल्लेखित 15 भाषाओं मे से किसी एक भाषा की परीक्षा देना अनिवार्य होगा। लेकिन उक्त भाषाओं की सूचि मे भूमिज भाषा को शामिल नहीं किया गया है। भूमिज भाषा झारखंड की जनजातीय भाषा है। जिसका जनसंख्या लगभग तीन लाख के करीब है। जिसकी मातृभाषा भूमिज है। इसके पूर्व झारखंड अधिविद्य परिषद, रांची द्वारा शिक्षक पात्रता परीक्षा-2012 एवं 2016 मे भूमिज भाषा को शामिल करते हुये कोड संख्या-57 दिया गया था। इसके साथ ही जेएससी की और से ली गयी झारखंड वनरक्षी प्रतियोगिता परीक्षा-2014, झारखंड कक्षपाल प्रतियोगिता परीक्षा-2015 मे भूमिज को जनजातीय भाषा के रूप मे शामिल किया गया था, जिस विषय मे परीक्षा देकर अनेक युवा आज सरकारी नौकरी कर रहे है। लेकिन 2023 के बाद किसी भी परीक्षा मे भूमिज भाषा को शामिल नहीं किया जा रहा है। इसलिये शिक्षक पात्रता परीक्षा-2024 और जेएससी की और से ली जानेवाले परीक्षाओ भूमिज भाषा को अविलंब शामिल किया जाये। इसपर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन तत्काल शिक्षा विभाग के सचिव को अग्रेत्तर कार्रवाई का निर्देश दिया। इस दौरान परमेश्वर सरदार, जगजीवन सरदार, बिहारी लाल सरदार, हाड़ी राम सरदार, देवजन्त्र सरदार, श्रीकंन्त भूमिज, मोनिका सिंह, दशरथ सरदार, रविंद्र सरदार, रोहित सिंह सरदार, सूरज सरदार, कृष्ण सिंह सरदार, विशुन पद सरदार, कंचन सरदार, बिरजय सरदार आदि शामिल थे।

आदित्यपुर में नहाने के दौरान खरकई में बहे दो युवा, एक की मौत

आदित्यपुर (आजाद सिपाही)। आदित्यपुर के आसंगी चेक डैम में रविवार को नहाने के क्रम में डूबे इच्छापुर के एक किशोर (आदित्य महतो- 15) का शव घटनास्थल से करीब डेढ़ किलोमीटर दूर नदी से बरामद किया गया। उधर सोमवार सुबह से ही रांची से पहुंची एनडीआरएफ की तीस सदस्यीय टीम पूरे दिन चेक डैम और आसपास के क्षेत्रों में दोनों किशोरों की तलाश करती रही, मगर उन्हें सफलता हाथ नहीं लगी। अभी भी एक किशोर सुमित मोदी (15) का सुराग नहीं मिल पाया है। अंधेरा और बारिश होने के कारण सर्च ऑपरेशन रोक दिया गया है। पुरेन्द्र नारायण सिंह ने इसे एक मार्मिक घटना बताते हुए भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति ना हो इस पर मंथन करने की जरूरत बतायी है।

आदित्यपुर पुरानी बाजार का खुलेआम हो रहा अतिक्रमण, जांच का आदेश

आजाद सिपाही संवाददाता

आदित्यपुर। नगर निगम वार्ड 20 स्थित दिंदली बाजार सरना स्थल के पास पुरानी बाजार के खाली पड़े जमीन का इन दिनों खुलेआम अतिक्रमण जारी है।उधर जिम्मेदार सरकारी अधिकारी चुप्पी साधे हुए है। बताया जारहा है दिंदली बाजार के पास में खाली जमीन पुरानी बाजार की है लेकिन उसके ठीक पास से आदिवासी समाज का सरना स्थल भी है। जहा हर साल सरना उत्सव का आयोजन की जाती है।धीरे-धीरे जमीन माफियाओं के सह पर कुछ लोग यहां बड़े भूखंड पर बांस-बल्लियों व टीना सेट बनाकर घेराबंदी करने में जुट गये। जबकि बाजार का रखरखाव व मेंटेनेंस के एवज में संवेदक बहाल करके समिति इसका शुक्ल वसूलती है।जहा गंदगी का अंबार लगा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है गंदगी को लेकर कृषि उत्पादन बाजार समिति व आदित्यपुर नगर निगम किनता गंभीर है।उधर गंदगी के आड़ में जमीन माफिया घेराबंदी कर जमीन का कब्जा लेने में जुटे हैं। समय रहते यदि नहीं रोका गया तो आने वाले दिनों में सरना स्थल का अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। फिलहाल सूचना मिलते ही अंचल अधिकारी कमल किशोर सिंह ने जांच के आदेश दी। उन्होंने कहा जो भी व्यक्ति इसमें शामिल है उस पर ऊपर कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

नशा के खिलाफ जमशेदपुर के डीसी और एसएसपी ने की बैठक

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। जमशेदपुर के डीसी (उपायुक्त) अनन्य मित्तल की अध्यक्षता में नार्कोटिक्स समन्वय समिति की बैठक आहूत की गयी। वरीय पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) किशोर कौशल, रूरल सह सिटी एसपी ऋषभ गर्ग, सिविल सर्जन डॉ जुझार माझी समेत अन्य संबंधित विभागीय पदाधिकारी मौजूद रहे। बैठक में जिला में एनडीपीएस एक्ट के तहत दर्ज मामलों, नशीले पदार्थों के उत्पादन, प्रसंस्करण, तस्करी रोकने तथा नगर क्षेत्र के युवा आबादी तक पेडलर के माध्यम से बिक्री व नशा निवारण से संबंधित अन्य प्रबंधों की समीक्षा की गयी तथा नशा से प्रभावित लोगों के पुनर्वास पर चर्चा की गयी। जिले में नशीली दवाओं के खिलाफ पुलिस प्रशासन, स्वास्थ्य एवं औषधि विभाग को मिलकर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया साथ ही लाईन होटल व ढाबों में शराब बेचने की शिकायतों पर उत्पाद और पुलिस विभाग को त्वरित रूप से कार्रवाई का निर्देश दिए गये। जिले भर में नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध व्यापार को खत्म करने के लिए उठाए गये कदमों की समीक्षा की गयी।

कदमा में सावन क्वीन महोत्सव 2024 का आयोजन विधायक ने दीप जला कर कार्यक्रम का किया शुभारंभ

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। लौहनगरी जमशेदपुर के कदमा उलियांन अनिल सुर पथ में अनु ओझा और प्रिया श्रीवास्तव के नेतृत में भव्य सावन क्वीन महोत्सव 2024 का आयोजन किया गया। रविवार को कार्यक्रम के दौरान बतौर मुख्य अतिथि झामुमो के जुगसलाई विधायक मंगल कालिंदी उपस्थित रहे। मौके पर विधायक के द्वारा दीप प्रजलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। सावन का पवित्र महीना में आयोजित सावन क्वीन महोत्सव में सैकड़ो महिलाएं हरे रंग के परिधान में 16 श्रृंगार कर चार चांद लगाते नजर आए। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं ने खुशियां मनाते हुए फैशन शो, क्विज प्रतियोगिता सहित अन्य कार्यक्रम में बढ़चढ़ का हिस्सा लिया। मौके पर विधायक मंगल कालिंदी ने कहा झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन का सोच है झारखण्ड की सभी महिलाएं शिक्षित हो सभी के परिवार में खुशियां आये। विधायक ने कहा इस तरह के आयोजन से सामाजिक समरसता बनी रहती है। इससे महिला शक्ति एकजुट होकर और मजबूत होग।मौके पर उन्होंने आयोजक समिति को बधाई दी। कहा महिला समूह के बीच इस तरह का आयोजन आगे भी होती रहे।

टाटा मोटर्स यूनियन में जेआरडी टाटा की 120वीं जयंती मनी

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनियन कार्यालय में जेआरडी टाटा की 120 वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित की गई। मौके पर यूनियन अध्यक्ष गुरमीत सिंह व महामंत्री आर के सिंह समेत सभी कमिटी मेंबर और आफिस बेयरर उपस्तित रहे। इस अवसर पर सभी ने बारी बारी से भारत की औद्योगिक क्रांति में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले जे आर डी टाटा के फोटो पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

गम्हरिया कृषि विज्ञान केंद्र की सुरक्षा भगवान भरोसे, ट्रॉली परिसर में, लेकिन ट्रैक्टर गायब

गम्हरिया (आजाद सिपाही)। सरायकेला खरसावां जिले के गम्हरिया स्थित कृषि विज्ञान केंद्र का ट्रैक्टर (खल्ह01उठ- 6917) गायब होने का सनसनी खोज खबर प्रकास में आया है। बताया जारहा है विभाग के अधिकारियों ने न तो अब तक वरीय अधिकारियों सूचना नही दी,ना ही थाना में इसकी शिकायत दर्ज कराया। सूत्रों की मानें तो ट्रैक्टर का विभागीय अधिकारियों के मिली भगत से व्यावसायिक उपयोग में लिया जा रहा है। सोमवार को इस मामले में केंद्र की प्रभारी डॉ सुनीता कंडियांग से संपर्क करने पर उन्होंने बताया। इसकी कोई जानकारी उन्हें नहीं है। सूचना मिला है जांच के बाद ही कुछ बताया जा सकता है। वैसे ट्रैक्टर की ट्रॉली कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में है, लेकिन ट्रैक्टर गायब है। कैमरे में लगे जीपीएस लोकेशन पर उसकी तस्वीर निकाली। जिसमें साफ देखा जा सकता है दिन के 12:57 बजे ट्रैक्टर का पोजिशन कहां दर्शा रहा है। बताया जारहा है चालक चेतन मुर्मू पर प्रभारी की विशेष कृपा बरसती है। उसकी बहाली कैसे हुई है यह भी जांच का विषय है। मिली जानकारी के अनुसार बीते एक सप्ताह से संस्थान का ट्रैक्टर गायब है। वैसे गम्हरिया कृषि विज्ञान केंद्र की सुरक्षा भगवान भरोसे है। परिसर के सुरक्षा की अगर बात करें तो यहां बने तालाब में बाहरी लोगों का प्रवेश होता है। इसमें गाय- भैस को नहलाया जाता है। कुछ लोग तो मछली पकड़ने भी आते हैं। परिसर में बने दो- दो भवन बेकार और जीर्णशीर्ण अवस्था में हैं। जहां असामाजिक तत्वों का जमावड़ा लगने का अनुमान लगाया जा सकता है। उधर भवन में करोड़ों की मशीन रखरखाव के अभाव में बर्बाद हो रही हैं। जिसकी सुध लेनेवाला भी कोई नहीं।

इडी की टीम पहुंची गढ़वा, कचहरी रोड में एक घर पर नोटिस चिपकाया

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। सोमवार को रांची से ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) की दो सदस्यीय अधिकारियों की टीम गढ़वा पहुंची है। गढ़वा पहुंचते ही अधिकारी शहर थाना पहुंचे, जहां सुरक्षाकर्मियों को साथ लेकर अधिकारी शहर में निकल पड़े। खबर है कि कचहरी रोड में ईडी के टीम के द्वारा हृदयानंद तिवारी के घर पर नोटिस चिपकाया गया है। टीम के अधिकारियों ने यह स्पष्ट नहीं किया कि वे कहां जा रहे हैं या किसे रडार पर लिया गया है, किसी भी सवाल का जवाब देने से उन्होंने परहेज किया। लेकिन ईडी की टीम के गढ़वा आने की जानकारी के साथ ही उन लोगों में हड़कंप मच गया है, जो खुद को ईडी के दायरे में मानते हैं। शहर में टीम के आने की चर्चा जंगल में आग की तरह फैल गयी।

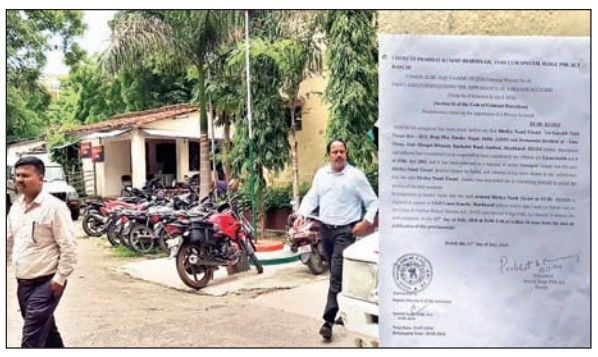

सूत्रों की माने तो यह पूरा मामला इंजीनियर वीरेंद्र राम से जुड़ा बताया जा रहा है। खबर है कि मंगल भवन के निकट उमा भवन में जिस हृदय नंद तिवारी के यहां नोटिस चिपकाया गया है, श्री तिवारी इंजीनियर वीरेंद्र राम का दिल्ली में जो सीए थे, जो सीए इडी के द्वारा पकड़े गये तो उन्होंने ही हृदयनंद तिवारी के सबंध में ईडी को जानकारी दी है कि हृदयनंद तिवारी ने ही उन्हें इंजीनियर वीरेंद्र राम से मिलवाया था। समझा जाता है का गिरफ्तार सीए द्वारा हृदयानंद का। न्यायालय में नाम लेने के कारण ही न्यायालय के कार्रवाई के दौरान इनका नाम सामने आया है, जिसके आलोक में आज नोटिस चिपकाया गया है। दरअसल हृदयनंद तिवारी गढ़वा सदर प्रखंड के एक गांव के हैं तथा खुद भी सीए है। वे न्यायालय से फरार चल रहे है। सूत्रों की माने तो कुछ माह पुर्व भी इडी की टीम हृदयानंद तिवारी नमक व्यक्ति की तलाश में उनके घर पर आयी थी।

दरअसल आज जो नोटिस हृदयानंद तिवारी के आवास पर चिपकाया गया है, उसमें उन्हें 15 जुलाई को सिविल कोर्ट रांची के विशेष अदालत प्रभात कुमार शर्मा के द्वारा जारी किया किया गया है। नोटिस के अनुसार एक माह के अंदर यानी 15 अगस्त तक हृदयानंद तिवारी को न्यायालय में हाजिर होने का आदेश दिया गया है। इधर इंजीनियर वीरेंद्र राम का ग्रामीण विकास में हुए बड़े घोटाले का तार गढ़वा पहुंचते ही यहां के कई लोगों के बीच हड़कंप मचा हुआ है। शहर में चर्चा है कि कुछ और सफेद पोश इंजीनियर वीरेंद्र राम प्रकरण में जेल में बंद पूर्व मंत्री आलमगीर आलम के करीबी होने के कारण घेरे में आ सकते हैं।

मनरेगा कर्मियों के हड़ताल पर चले जाने से कामकाज ठप

आजाद सिपाही संवाददाता

डंडई। मनरेगा कर्मियों के हड़ताल पर जाने से प्रखंड में संचालित मनरेगा योजना का कार्य बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है। जहां एक तरफ नई योजना स्वीकृत नहीं हो रहा है वहीं दूसरी तरफ स्वीकृत योजना में डिमांड नहीं लग रहा है। डिमांड नहीं लगने से मनरेगा मजदूरों को रोजगार नहीं मिल रहा है। जिससे मजदूर बेरोजगार हो गए हैं। उनकी रोजी-रोटी के लिए आमदनी का एकमात्र जरिया भी समाप्त हो गया है। लिहाजा मजदूरों की दिनचर्या फांकाकशी में गुजर रही है। प्रखंड में रोजगार के अभाव में बड़ी संख्या में मजदूर मनरेगा कार्य पर ही निर्भर हैं। ऐसे में मनरेगा कर्मियों की हड़ताल उन्हें प्रभावित कर रही है। मानसून के समय में अभी बिरसा सिंचाई, आम बागवानी समेत अन्य कई योजना संचालित है। हड़ताल की वजह से योजनाओं के लाभुक भी आधा-अधूरा काम कराकर फंस गये हैं। कई अधूरे कूप बारिश की चलते धसने की स्थिति में है।

बता दें कि मनरेगा के तहत मजदूरों को प्रतिवर्ष न्यूनतम 100 दिनों का रोजगार उपलब्ध कराना है। इसके तहत विभाग द्वारा जल कल्याणकारी योजनाएं संचालित कर मजदूरों को काम उपलब्ध कराया जाता है। मनरेगा मजदूर सलीम अंसारी विश्वनाथ सिंह ने बताया कि उनकी कमायी का एकमात्र जरिया मजदूरी है। बरसात की वजह से क्षेत्र में मजदूरी का काम नहीं मिलता। ऐसे में मनरेगा में मजदूरी ही एकमात्र साधन है। इधर मनरेगा कर्मियों के हड़ताल पर चले जाने की वजह से काम नहीं मिल रहा है। जिससे रोजी रोटी पर भी संकट खड़ा हो गया है।

ग्रामीण को जंगली हाथी ने कुचला, मौत

धुरकी (आजाद सिपाही)। धुरकी थाना क्षेत्र अंतर्गत कदवा उर्फ लिखनीधावरा गांव निवासी सकूराज कोरवा (65) जंगली हाथी ने कुचल कर मार डाला। जंगली हाथियों का उपद्रव दोबारा चालू जंगली हाथियों का झुंड एक आदिम जनजाति वृद्ध व्यक्ति को कुचल कर मार डाला मृतक की पहचान सकुराज कोरवा के रूप में की गयी है। घटना सोमवार की है। घटना की खबर सुनने के बाद गांव में शोक की लहर दौड़ पड़ी। वहीं ग्रामीणों में दहशत का भी माहौल है। शव को देखने के लिए काफी संख्या में लोग जमा हो गये। ग्रामीणों ने इसकी सूचना वन विभाग और थाना प्रभारी को दिया, जिसके बाद वन विभाग के प्रमोद यादव और थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की जानकारी ली। वहीं वन विभाग की टीम ने मृतक के परिजन को तत्काल सहायता के रूप में चार लाख रुपये मुआवजा के रूप में देने की बात कही। जानकारी के अनुसार मृतक लकड़ी चुने के लिए जंगल गया हुआ था, जहां एक जंगली हाथी ने उसपर हमला कर दिया और उसे कुचलकर मार डाला। इस दौरान प्रमुख शांति देवी, विधायक प्रतिनिधि अखिलेश यादव, सांसद प्रतिनिधि सुदर्शन प्रसाद गुप्ता, मुखिया रघुनाथ सिंह, सुंदर कोरवा सहित काफी लोगों मौजूद थे।

JHARKHAND SPACE APPLICATIONS CENTER
Department of Information Technology & e-Governance
Engineer's Hostel-I, Gol Chakkar, Dhurwa, Ranchi - 834 004
Tel. 0651 - 2401719 : : Email - directorjsac@gmail.com

Letter no. Su.Pra/JSAC/2024/367 Dated: 26.07.24

Tender Notice No. JSAC/02/2024

Jharkhand Space Applications Center (JSAC), Dept. of Information Technology & e-Governance, Government of Jharkhand invites online sealed Bids (Technical and Commercial) for Upgradation of ESRI Products and AMC.

The complete description, tender document & participation details can be seen and download from the website https://jsac.jharkhand.gov.in and https://jharkhandtenders.gov.in. The important date and time of the tender is as follows:

Tender Reference	**JSAC/02/2024, Date 26/07/2024**
Bid publishing Date	**30.07.2024 at 11.00 AM**
Start date of bid submission	**30.07.2024 at 11.00 AM**
Last date and time of Online Bid Submission.	**20.08.2024 at 3.00 PM**
Technical Bid Opening	**21.08.2024 at 01.00 PM** at Jharkhand Space Applications Center Engineer's Hostel-I, Dhurwa Ranchi – 834004
Financial Bid Opening	Will be communicated after opening and evaluation of technical bids.

Yours Sincerely
Sd/-
Director, JSAC

PR 331164 (Information Technology) 24-25 (D)

कार्यालय नगर परिषद रामगढ़

शुद्धि पत्र

एतद् द्वारा सर्वसाधरण को सूचित किया जाता है कि अपरीहार करणों से निविदा संख्या–NIT/RGH/NP/02/2024-25 3rd Call जिसका PR No.- 329870 District(24-25)D के द्वारा प्रकाशित निविदा Online भरने की तिथि में निम्न प्रकार से संशोधित किया जाता है :–

1	Last Date/ Time for Receipt of Bid Online	05.08.2024 By 4:00 PM
2	Opening of technical bid	06.08.2024 By 5:00 PM

नोटः– अन्य सभी निविदा की शर्तें यथावत् रहेंगे।

कार्यपालक पदाधिकारी
नगर परिषद रामगढ़।

PR.NO.331116 District(24-25):D

आजसू पार्टी के नेताओं ने दुख जताया

गढ़वा (आजाद सिपाही)। आजसू पार्टी के केंद्रीय सदस्य नगवां निवासी डॉ इश्तियाक रजा की माता जी के निधन की सूचना प्राप्त होते ही पार्टी के नेताओं ने उनके आवास पर पहुंच कर डॉ इश्तियाक रजा और शोकाकुल परिवार से मिलकर ढांढस बंधाया और शोक संवेदना व्यक्त किया। ईश्वर पूरे परिवार वालों को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति देने के लिए भगवान से कामना किया। मौके पर आजसू पार्टी के केंद्रीय सचिव श्री गुप्तेश्वर ठाकुर, युवा आजसू के प्रदेश संयोजक रविंद्र नाथ ठाकुर, युवा अजसू जिला सह प्रभारी राजन कुमार रवि, आजसू छात्र संघ के महासचिव जयनंद कुमार रवि,आजसू पार्टी के नगर मंडल प्रवक्ता मोहम्मद इकराम, अजय सिंह, नसीम खान आदि शमिल हुए।

डीएवी लीलाबच्चन पब्लिक स्कूल में हुआ पौधरोपण

मेराल (आजाद सिपाही)। डीएवी लीलाबच्चन पब्लिक स्कूल लातदाग मेराल के परिसर में पौधरोपण किया गया। विद्यालय के निदेशक सुरेंद्र विश्वकर्मा ने कहा कि प्राकृतिक चक्र दिशा बदलने और अनियंत्रित होने के कारण लोगों को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। जिसे बड़े पैमाने पर जन-धन की हानि हो रही है। कहीं बाढ़ तो, कहीं सुखाड़ की स्थिति उत्पन्न हो रही है। प्राकृतिक समस्याओं का समाधान सिर्फ प्राकृतिक संरक्षण देकर ही किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आयें हम सब मिलकर प्रकृति को बचायें। मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य मनोज कुमार, ट्रेजर पारसनाथ विश्वकर्मा, उप प्रधानाचार्य मधु कुमारी सिंह, रिजवान अंसारी समेत स्कूल के बच्चे उपस्थित थे।

योजनाओं को जल्द पूर्ण करें पदाधिकारी : डीसी

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। उपायुक्त शेखर जमुआर की अध्यक्षता में समाहरणालय के सभाकक्ष में वन अधिकार अधिनियम 2006 के (फॉरेस्ट राइट एक्ट) के तहत सरकार द्वारा चलाए जा रहे अबुआ बीर, अबुआ दिशोम अभियान की जिला स्तरीय वन अधिकार समिति के पदाधिकारियों और सदस्यों के साथ समीक्षात्मक बैठक संपन्न की गयी।

बताते चलें कि पूर्व में अबुवा बीर अबुआ दिशोम अभियान के तहत जिला स्तर पर एक कार्यशाला आयोजित कर संबंधित पदाधिकारियों को अनुसूचित जनजातियों और अन्य परंपरागत वन निवासियों को सामुदायिक वन

पट्टा/अधिकारों और वन संसाधनों पर अधिकारों से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया था। इस हेतु जिसे फॉरेस्ट राइट एक्ट के तहत भूमि पट्टा दिया जाना है, इसके लिए ग्राम स्तर पर ग्रामसभा का आयोजन किया जाता है। इस हेतु एफआरसी का गठन किया जा चुका है।

उपायुक्त ने सभी संबंधित पदाधिकारियों से सरकार द्वारा चलायी जाने वाली इस महत्वपूर्ण योजना को सक्रियता के साथ कार्य में तेजी लाते हुए पूर्ण करने का निर्देश दिया।

उक्त समीक्षात्मक बैठक में वन प्रमंडल पदाधिकारी उत्तरी और दक्षिणी, अनुमंडल पदाधिकारी गढ़वा, रंका और श्री बंशीधर नगर, जिला कल्याण पदाधिकारी और समिति के गैर सरकारी सदस्यगण उपस्थित थे।

उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय, राँची ।
(पर्यटन, कला–संस्कृति, खेलकूद एवं युवाकार्य शाखा)
Email - dsoranchigov@gmail.com

पत्रांक–233 / जि०खे० राँची, दिनांक–29.07.2024

आवश्यक सूचना (खेल)

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निदेशक, खेलकूद एवं युवाकार्य निदेशालय, झारखण्ड, राँची के पत्रांक–361 दिनांक–23.07.2024 के आलोक में राँची जिला के वैसे खिलाड़ी एवं उनके प्रशिक्षक जिन्होंने दिनांक–01.04.2023 के बाद अन्तर्राष्ट्रीय / भारतीय ओलम्पिक संघ से मान्यता प्राप्त खेलों की विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय / राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं आदि में पदक प्राप्त किये हो तथा विभागीय संकल्प संख्या–03 दिनांक–11.03.2023 में उल्लेखित प्रावधानों के तहत "नकद पुरस्कार राशि (सम्मान राशि)" प्राप्त करने की अर्हता (Eligible) धारित करते हो एवं जिन्हें अभी तक नकद पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हो सकी है, उनसे "नकद पुरस्कार राशि (सम्मान राशि)" हेतु विहित प्रपत्र में आवेदन आमंत्रित किया जाता है। योग्य खिलाड़ियों का उनकी उपलब्धियों के लिए विभागीय संकल्प सं०–03 दिनांक–11.03.2023 के अनुसार नकद पुरस्कार राशि देय होगा।

योग्य खिलाड़ी / प्रशिक्षक "नकद पुरस्कार राशि (सम्मान राशि)" हेतु अपना आवेदन विहित प्रपत्र में पूर्ण रूप से भरकार अनिवार्य रूप से दिनांक–06.08.2024 (मंगलवार) के अपराह्न 05:00 बजे तक कचहरी के विकास भवन स्थित (प्रथम तल) जिला खेल पदाधिकारी, राँची के कार्यालय में जमा किया जा सकता है।

नोटः– आवेदन का प्रपत्र एवं सम्मान राशि संबंधी विभागीय संकल्प संख्या–03 दिनांक–11.03.2023 जिला के अधिकारिक वेबसाईट ranchi.nic.in पर अथवा खेलकूद एवं युवाकार्य निदेशालय, झारखण्ड, राँची की वेबसाईट–sports.jharkhand.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

विश्वासभाजन
ह०/–
जिला खेल पदाधिकारी, राँची।

PR 331132 (Art Culture Sports and Youth Affairs) 24-25 (D)

राजकीय माध्यमिक विद्यालय रपुरा (कांडी) में लगभग 10 लाख की चोरी, कार्रवाई की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

हरिहरपुर। ओपी क्षेत्र अंतर्गत राजकीय माध्यमिक विद्यालय रपुरा (कांडी) में भीषण चोरी होने का मामला प्रकाश में आया है। घटना शनिवार या रविवार रात्रि की है, इस घटना से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गयी है। मिली सूचना के अनुसार सोमवार की सुबह जब विद्यालय खुला तो विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने देखा कि विद्यालय के आई.सी.टी. लैब का ताला टूटा हुआ है। विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक उमाकांत तिवारी ने बताया कि सोमवार की सुबह जब विद्यालय खुला, तो विद्यालय के बच्चों के द्वारा देखा गया कि आई.सी.टी. लैब का ताला

टूटा हुआ है। मामले की सूचना मिलते ही मैं विद्यालय पहुंचा, वहां ग्रामीणों और पंचायत के मुखिया अनुज सिंह की उपस्थिति में देखा, तो लैब के सारे सामान चोरों के द्वारा चोरी की गयी है। उसके बाद मामले की सूचना हरिहरपुर ओपी को दी गयी। जांच करने पहुंची पुलिस के खिलाफ विद्यालय की छात्र-छात्राओं ने जमकर नारेबाजी किया। इधर उचित कार्रवाई हेतु हरिहरपुर ओपी को लिखित आवेदन देकर मामले की छानबीन कर उचित कार्यवायी करने की गुहार लगायी है। हरिहरपुर ओपी में दिये गये आवेदन के अनुसार विद्यालय का 11 पीस कंप्यूटर पूरा सेटअप (आईएनपी कंपनी का माउस, कीबोर्ड, यूपीएस, इयरफोन), वेब कैमरा एक पीस, प्रिंटर एक पीस, बैट्री 100 अस्त्र 8 पीस, स्टेबलाइजर 5 किलोवाट एकपिस, इंवर्टर, कूलर, सर्वर वायरिंग पूरे सिस्टम, ए4 साइज के पेपर, प्रोजेक्टर और टीवी का चार पीस रिमोट, साउंड सिस्टम सहित आईसीटी का एक्स्ट्रा सामान और अभिलेख जिसकी कुल अनुमानित मूल्य 10 लाख रुपये की है। अब उक्त घटना से सारे विद्यालय में हड़कंप मच गयी है। क्योंकि कांडी प्रखंड के विद्यालयों में अब चोरी की घटना आम हो गयी है। इस संबंध में हरिहरपुर ओपी के एसआई दिलीप कुमार ने बताया कि मामले की प्राथमिकी दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई हेतु भेज दिया गया है और मामले की छानबीन में पुलिस लग गयी है।

Office of District Legal Services Authority, Lohardaga

Notice regarding vacancy of Member in Permanent Lok Adalat,

Application in the prescribed format is invited from persons having adequate experience in public utility services *(transport service for the carriage of passengers or goods by air, road or water, or postal telegraph or telephone service, or supply of power, light or water to the public by any establishment or system of public conservancy or sanitation: or service in hospital or dispensary, or insurance service, or banking service or education or educational institutions; or housing and real estate services)* for filling up the post of Member, PLA of Lohardaga.

Number of posts- 1

Entitlement: Sitting fee of Rs.2000/- per sitting and Rs.5000/- conveyance allowance per month.

Period of appointment: The Member shall hold office for a term of 5 years or till the age of sixty-five years, whichever is earlier. Applicant must attach **one recent passport size photograph affixed in application, two self addressed stamped envelope (Rs.42/- each)** with the application.

Last Date of application: Application addressed to **Chairman, District Legal Services Authority, Civil Court, Lohardaga** must reach by Speed Post/Courier/Registered Post latest by **27-08-2024** by **5 PM**.

The application form may be downloaded from official website of Civil Court, Lohardaga https://districts.ecourts.gov.in/lohardaga and can be obtained from the office directly.

Sd/-
Secretary
D.L.S.A., Lohardaga

PR 331146 (Lohardaga) 24-25 (D)

गढ़वा से अपराध और भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए कमर कस चुकी है जनता: सत्येंद्रनाथ तिवारी

झामुमो के 50 से अधिक लोग भाजपा में हुए शामिल, पूर्व विधायक ने माला पहनाकर किया स्वागत

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। भाजपा के पूर्व विधायक सत्येंद्र नाथ तिवारी ने कहा है कि हेमंत सरकार में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो गयी है। राज्य सरकार के पौने पांच वर्ष में लोग असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। गढ़वा में दिनदहाड़े गोली चालन की घटना घट रही है। सभी जाति व धर्म के व्यवसायी वर्ग सहमा हुआ है। एक तरफ लोगों को झूठे केस में फंसाया जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ आए दिन आपराधिक घटनाएं घट रही है। पूर्व विधायक सत्येंद्रनाथ तिवारी सदर प्रखंड के टेढ़ी हरैया गांव में आयोजित मिलन समारोह को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। इस दौरान गांव के 50 से अधिक

मुस्लिक समुदाय के लोग झामुमो छोड़कर भाजपा में शामिल हो गये। पूर्व विधायक ने सभी को पार्टी का पट्टा और माला पहनाकर स्वागत किया। पूर्व विधायक ने कहा कि झारखंड सरकार के कार्य प्रणाली से लोग ऊब चुके हैं। सभी की निगाह भाजपा की ओर है। आने वाले समय में भाजपा की सरकार बनेगी और राज्य की विधि-व्यवस्था को फिर से चुस्त दुरुस्त किया जायेगा। ताकि लोग अमन व चैन से जीवन गुजर बसर कर सकें। उन्होंने कहा कि स्थानीय मंत्री सह विधायक गढ़वा का अपराधिकरण की ओर ढकेल दिया है। गढ़वा के लोग न्यायप्रिय व्यवस्था में विश्वास करते हैं। आने वाले चुनाव में गढ़वा से अपराधिकरण को समाप्त करने के लिए क्षेत्र की जनता आतुर है। चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। बिना पैसा का कोई काम नही हो रहा है। मौके पर पार्टी में शामिल होने वाले ग्रामीणों ने कहा कि पूर्ववर्ती भाजपा सरकार में गढ़वा ही नहीं बल्कि पूरे राज्य की जनता, खासकर व्यवसायी शांति से रह रहे थे। लेकिन जब से हेमंत सोरेन की सरकार बनी है। विधि-व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो गयी है। आये दिन गोली चालन की घटना से आम-आवाम दहशत में है। गढ़वा में कई घटनाएं घटी है। जिसमें मुस्लिम समुदाय के लोगों की हत्या की दी गयी। बावजूद किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं की गयी है। गढ़वा के पचपड़वा में युवक की हत्या, चिनियां में मुखिया पति की हत्या और कुछ दिन पहले ही मुस्लिम युवक पर गोली चलायी गयी, जिसमें वे बाल-बाल बचा है। भाजपा सरकार में ही लोग अमन व चैन से जीवन गुजार सकते हैं। लोगों ने कहा कि फिर से 2009 की चुनाव की तरह हलचल पैदा होगी। मुस्लिम बहुल्य गांव में एक टीम बनाकर दौरा किया जायेगा। भाजपा के पक्ष में कार्य किया जायेगा। मौके पर हाजी जउवाद, जिला मीडिया प्रभारी विवेकानंद तिवारी, लक्ष्मीकांत पांडेय, विकास तिवारी आदि उपस्थित थे। भाजपा में शामिल होने वालों में आजम अंसारी, गुलाम मुस्तफा, मोजकीर हुसैन, डॉ. मेहदी हसन, जिसान अंसारी, सदाम अंसारी, गुलाम अहमद रजा, रिजवान अंसारी, तौहीद, मकसूद, फारूक, मोख्तार, रकीम, दिलकस, शफुर्दीन अंसारी, इमामुदीन, जहीर, असगर, आरिफ, अलीमुर्दीन अंसारी सहित 50 से अधिक लोगों का नाम शामिल हैं।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, राँची

अति अल्पकालीन ई–पर्नुनिविदा आमंत्रण सूचना

PR No.-317608 REO (23-24)#D

पत्रांकः– दिनांक–

अति अल्पकालीन ई–पुर्ननिविदा संख्याः–18/RE/2023-24/RWD /EE/RANCHI

क्रम सं0	आईडेन्टी फिकेशन संख्या / पैकेज संख्या	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रूपये में) अंक में	अक्षर में	कार्य समाप्ति की तिथि / अवधि	टेण्डर कॉल नं0
1	RWD/RANCHI/ 31/ STPKG/17/ 2023-24	भौरा स्कूल मोड़ से दलादली आर0ई0ओ0 रोड तक पथ का सुदृढ़कीकरण कार्य। (ल0–1.200 कि0मी0) चौली मोड़ से पतराचौ ली तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य। (ल0–1.530 कि0मी0) बिजुलिया मोड़ से तिगरा पथ तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य। (ल0–3.000 कि0मी0) पिस्का रेलवे स्टेशन से भागलपुर तुसमु तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य। (ल0–2.250 कि0मी0) दलादली बगीचाटोली से सतीश चौक तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य। (ल0–3.000 कि0मी0) मलमांडू चौक से ता रूप तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य। (ल0–3.400 कि0मी0)	13,21,38,900.00	तेरह करोड़ इक्कीस लाख अड़तीस हजार नौ सौ रूपये मात्र।	15 माह	द्वितीय

1. वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथिः–**02.08.2024**
2. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समयः–**10.08.2024** अपराह्न 5.00 बजे तक।
3. निविदा खोलने की तिथि एवं समयः–**12.08.2024** अपराह्न 3.30 बजे।
4. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पताः– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, राँची।
5. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं0– 0651–2360137

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण कार्य विभाग
कार्य प्रमण्डल, राँची

PR 331153 (REO) 24-25 (D)

जिला शिक्षा स्थापना समिति की बैठक

लातेहार (आजाद सिपाही)। लातेहार उपायुक्त गरिमा सिंह की अध्यक्षता में जिला शिक्षा स्थापना समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में पदस्थापन आदि विषयों पर बिंदुवार विचार-विमर्श कर उपायुक्त द्वारा पदाधिकारियों को कई दिशा-निर्देश दिया गया। बैठक में जिला शिक्षा पदाधिकारी के द्वारा अन्य जिला से योगदान किये गए शिक्षकों के पदस्थापन की जानकारी दी गई। इस संबंध में उपायुक्त ने प्राप्त सूची पर चर्चा करते हुए अन्य जिला से योगदान किये गए शिक्षकों को विद्यालय आवंटित कर पदस्थापन करने के संबंध में अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। इस दौरान उपायुक्त ने लातेहार जिला के वैसे शिक्षक जिन्होने अन्य जिला हेतु आवेदन किया है उनके आवेदन को शिक्षक स्थानांतरण पोर्टल (समिति के लॉगिन से) अग्रसारित करने का निर्देश दिया गया। बैठक में उप विकास आयुक्त सुरजीत कुमार सिंह, जिला शिक्षा अधीक्षक कविता खलखो व अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

छापेमारी में बालू और छर्री का अवैध स्टॉक जब्त

बरवाडीह (आजाद सिपाही)। जिला खनन विभाग ने अवैध बालू के कारोबार पर लगाम लगाने के लिए सोमवार को बरवाडीह थाना क्षेत्र के मंगरा पंचायत में बन रहे एकलव्य विद्यालय में अंचलाधिकारी मनोज कुमार सब इंस्पेक्टर राहुल सिन्हा, राजन अधिकारी की मौजूदगी में छापेमारी की। इस दौरान विभाग ने अवैध रूप से संग्रहित 300000 घनफिट बालू व 25000 घनफिट छरी जब्त किया। वहीं दूसरी और बीएसएनएल टॉवर के समीप रेलवे के हो रहे बाउंड्री और भवन निर्माण वाले स्थान पर भी 8000 घनफिट बालू व 4000 घनफिट अहीरपुरवा धधड़ी नदी के समीप खेत से जब्त किया है। इस संबंध में अंचलाधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि एनजीटी के रोक के कारण वर्तमान में बालू का उठाव बंद है। विभिन्न स्त्रोत से उक्त स्थल पर अवैध रूप से बालू संग्रह करने की जानकारी मिली। पुख्ता जानकारी के आधार पर कार्रवाई की गयी। संबंधित थाना में मामला दर्ज कराया गया है। खनन विभाग के अधिकारी पदम लोचन ओहदार ने बताया कि अवैध खनन के रोकथाम के लिए विभाग की ओर से अभियान चलाया गया है। बालू को जब्त कर थाना में प्राथमिकी दर्ज करा दी गयी है। अभियान में अंचलाधिकारी, स्थानीय पुलिस बल मौजूद थे। बताते चलें कि मानसून को लेकर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल की ओर से 15 अक्तूबर तक बालू खनन पर रोक लगायी गयी है।

आदिवासी छात्रों की पिटाई किये जाने के विरोध में किया पुतला दहन

लातेहार (आजाद सिपाही)। लातेहार समाहरणालय गेट के पास रविवार को बीजेपी मोर्चा ने सीएम का पुतला दहन किया गया। 26 जुलाई की रात्री झारखंड के पाकुड़ जिला के कॉलेज मे आदिवासी छात्रावास में पुलिस प्रशासन के द्वारा बर्बरतापूर्ण छात्रों को पीटाई की गयी। जिसमें कई छात्र गंभीर रूप से घायल हुए हैं। इसके विरोध में आज रविवार को जिला मुख्यालय स्थित समाहरणालय गेट के पास भारतीय जनता पार्टी के अनुसूचित जनजाति मोर्चा के द्वारा मुख्य मंत्री हेमंत सोरेन का पुतला दहन किया गया। जिसमें मुख्य रूप से अवधेश सिंह चेरो भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा प्रदेश कार्य समिति सदस्य प्रदेश उपाध्यक्ष, पिंटू कुमार रजक जिला महामंत्री एससी मोर्चा, हरमोहन सिंह, शत्रुघ्न सिंह, आलोक कुमार अकेला, आकाश कुमार सावन सभी भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस दौरान सरकार विरोधी नारेबाजी की गयी।

उर्दू शिक्षकों के स्वीकृत पद सरेंडर करने पर अल्पसंख्यक आयोग गंभीर

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। जिले के सरकारी विद्यालय में उर्दू शिक्षकों की भारी कमी होने, विद्यालय में रिक्त उर्दू शिक्षकों की पदस्थापन करने समेत शिक्षा में अल्पसंख्यक मामलों को लेकर सोमवार को राज्य अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य वारिस कुरैशी ने जिला शिक्षा अधीक्षक से भेंट कर वार्ता किया। इन मामलों पर फौरी तौर पर पहल करने को कहा। इस पर डीएसई ने कहा कि प्रोन्नति देने के लिए शिक्षकों का तबादला हुआ है। बावजूद, उर्दू विद्यालयों में उर्दू शिक्षकों की पदस्थापन की जाएगी। इस संदर्भ में राज्य अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य वारिस कुरैशी ने कहा कि, जिले को उर्दू विषय के लिए 107 उर्दू शिक्षक पद स्वीकृत किया गया था। जिस पर दो उर्दू शिक्षकों की बहाली हुई। 105 उर्दू शिक्षकों का पद विभाग को किस स्थिति पर सरेंडर कर दिया गया। कहा कि, जिले में 22 प्रतिशत मुस्लिम अल्पसंख्यक आबादी है। इसमें 95 प्रतिश जनसंख्या की मातृभाषा उर्दू है। बावजूद, 105 उर्दू शिक्षकों का पद सरेंडर करना दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। इस मामले पर राज्य अल्पसंख्यक आयोग गंभीरता से दोषियों को चिन्हित कर कार्रवाई करेगा। कहा राज्य सरकार से आयोग लोहरदगा को स्वीकृत 105 उर्दू शिक्षकों के पद को पुनः स्वीकृत करने की मांग भी करेगा।

निरहू गांव में किशोर ने कीटनाशक खाया

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। बगडू थाना क्षेत्र के निरहू गांव में सोमवार को एक किशोर ने भूल से कीटनाश दवा खा लिया। जिससे किशोर की स्थिति गंभीर हो गयी। किशोर को परिजनों ने इलाज के लिए आनन फानन में सदर अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सक द्वारा भर्ती कर इलाज किया जा रहा है। इस घटना के बाद से परिजन चिंतित हैं। हालांकि इलाज के बाद किशोर के स्वास्थ्य में सुधार की बात चिकित्सकों ने कहा है। वही, किशोर की पहचान बगडू थाना क्षेत्र के निरहू गांव निवासी 12 वर्षीय पुत्र अंकित उरांव के रूप में की गयी है।

सीएम ने प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रतिनिधियों को दिया आश्वासन

प्रोन्नति और वेतन समेत अन्य मुद्दे जल्द सुलझेंगे

शिक्षकों की मांग के समर्थन में विधायक राजेश कच्छप और नमन विक्सल कोंगारी भी रहे वार्ता में मौजूद

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। शिक्षकों के लिए सुनिश्चित वृति उन्नयन योजना (एमएसीपी) छठा वेतन विसंगति, अंतर जिला स्थानांतरण विषयों को ले कर सोमवार को अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ प्रतिनिधि मंडल मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से विधानसभा के मुख्यमंत्री कक्ष में भेट कर वार्ता किया। इस दौरान मुख्यमंत्री को झारखंड में शिक्षकों को एमएसीपी नहीं मिलने की बात बतायी गयी। नवंबर 2022 में हुई संघ की उनसे हुई वार्ता का हवाला देकर अब तक अधिकारिक स्तर से कार्य के लंबित है। शिक्षकों को एमएसीपी नहीं मिलने के दंश से सीएम अवगत कराया गया।

इस पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि राज्य को पुरानी पेंशन का लाभ, स्वास्थ बीमा दिया है। इसको भी देने से राज्य सरकार पीछे नहीं हटेगी है। संघ की बातों पर कहा कि जल्द ही अधिकारियों के साथ आपलोगों की एक बैठक करवाके इस काम को गति दिया जायेगा। प्रक्रिया में थोड़ी समय लगेगी। छठा वेतन विसंगति और अंतरजिला स्थानांतरण की मांग को भी सीएम के संज्ञान में लाया गया। वार्ता में संघ की मांगों के समर्थन में खिजरी विधायक राजेश कच्छप और कोलेबिरा विधायक नमन विकसल कोंगरी भी मौजूद थे। प्रतिनिधिमंडल में प्रदेश अध्यक्ष अनूप केसरी, महासचिव राम मूर्ति ठाकुर, संगठन महामंत्री असादुल्लाह, उपाध्यक्ष दीपक कुमार दत्ता, दक्षिणी छोटनगपुर प्रमंडलीय अध्यक्ष अजय कुमार सिंह, रांची जिला अध्यक्ष सलीम सहाय तिग्गा, खूंटी जिला अध्यक्ष संजय कंडुलना, लोहरदगा जिला अध्यक्ष मणि उरांव, गुमला जिला अध्यक्ष रामचंद्र खेरवार, सरायकेला खरसावां अध्यक्ष माणिक प्रसाद सिंह, अमर उरांव, अमरनाथ झा शामिल रहे थे।

लोहरदगा युवा कांग्रेस ने लांच किया 'हर घर खटाखट' कार्यक्रम

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। कांग्रेस कार्यालय राजेन्द्र भवन लोहरदगा में जिला युवा कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष गुलाम जिलानी और विधानसभा अध्यक्ष संजर अंसारी की अध्यक्षता में युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय समन्वयक सत्यब्रता दास एवं भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव अभिनव भगत के उपस्थिति में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर युवा कांग्रेस के हर घर खटाखट कार्यक्रम को लॉन्च किया। कार्यक्रम को लॉन्च करते हुए राष्ट्रीय समन्वयक सत्यब्रता दास ने कहा कि हर घर खटाखट कार्यक्रम के तहत युवा कांग्रेस के सभी कार्यकताओं को झारखंड सरकार की 10 योजनाओं की जानकारी जनता को देंगे और बताएंगे कि किस प्रकार झारखंड में कांग्रेस गठबंधन की सरकार ने साढ़े चार वर्षों तक जनता को सरकारी योजनाओं से लाभान्वित करने का काम किया है। जिला युवा कार्यकारी अध्यक्ष गुलाम जिलानी ने कहा कि आज जिला में हर घर खटाखट कार्यक्रम लॉन्च किया जा रहा है और इस कार्यक्रम के तहत हमारे युवा कांग्रेस के कार्यकर्ता चलो पंचायत - चलो वार्ड के नारे के साथ जिला के पंचायतों में चौपाल लगाकर सरकार द्वारा जनता को दी जा रही योजनाओं की जानकारी और चर्चा जनता के साथ करेंगे। युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव अभिनव भगत ने कहा कि हर घर खटाखट कार्यक्रम के साथ साथ ही युवा कांग्रेस पंचायत और बूथ के युवाओं से भी संवाद कर उन्हें संगठन में जोड़ने का काम करेगी। कार्यक्रम में प्रदेश प्रतिनिधि नेसार अहमद, झारखंड प्रदेश युवा कांग्रेस सोशल मीडिया प्रदेश कॉर्डिनेटर, विधानसभा उपाध्यक्ष विकास लाल नाथ सहदेव, अवटरिच सेल जिला अध्यक्ष सैफ अहमद, जिला सोशल मीडिया कॉर्डिनेटर अमस अंसारी, जिला सोशल मीडिया कॉर्डिनेटर मनीष शर्मा, सोशल मीडिया जिला कॉर्डिनेटर नकीब अंसारी, जिला सचिव सुहैल अख्तर समेत युवा कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

कम मजदूरी मिलने पर श्रम अधीक्षक कार्यालय का किया घेराव

लातेहार (आजाद सिपाही)। लातेहार के मुख्यालय में श्रम अधीक्षक कार्यालय में मजदूर ने श्रम अधीक्षक लक्ष्मी कुमारी को आवेदन दिया लक्ष्मी कुमारी ने कहा फिलहाल उनकी जांच होनी चाहिए। मजदूरों द्वारा बताये गये कम से कम 250रूपया तय की मजदूरी भी नहीं दिये जाती है। सरयू प्रखंड से आए हुए पूर्णिया कुमारी पिता रामेश्वर घासी ग्राम सरयू जिला लातेहार का है उन्होंने बताया कि मेरे साथ अन्य कुल 35 मजदूर एक ही पंचायत के चौराहा के रहने वाले हैं हम लोग मजदूर सरयू निर्माण कार्य में रेजा का काम करते हैं सभी मजदूर का एक दिन का मजदूरी 250 दिया जा रहा है 15 दिन काम करने पर आधा दिन का मजदूरी काट दिया जाता है। हम सब जुबेर आलम देखरेख में काम करते हैं। हम सब मजदूर की न्यूनतम मजदूरी एवं बकाया मजदूरी दिलाने के लिए मजदूरों ने श्रम अधीक्षक कार्यालय का घेराव किया गया।

उदरंगी मुखिया का भाई लापता, सनहा दर्ज

भंडरा (आजाद सिपाही)। भंडरा के उदरंगी पंचायत मुखिया परमेश्वर महली ने भंडरा थाना में सनहा दर्ज करते हुए अपने छोटे भाई की खोजबीन को लेकर गुहार लगाया है। भैसमुंदो गांव निवासी परमेश्वर महली ने थाना में दिए ज्ञापन में कहा है कि विगत 21 जुलाई 2024 को उसके छोटे भाई फूलचंद महली गांव के ही रजदेव उरांव उर्फ चरका के साथ आंध्र प्रदेश के राजवरम स्थित कंपनी में काम करने के लिए गये थे। इसी बीच 24 जुलाई को फूलचंद महली द्वारा अपने घर में फोन कर कंपनी पहुंचने की बात कही गई थी। साथ ही कंपनी में काम ठीक नहीं होने की बात कहते हुए पुनः घर वापस आने की बात कहा गया था। इसके उपरांत उन्होंने घर आने के लिए पैसा नहीं होने की बात कहते हुए राजदेव के फोन-पे में घर के स्वजनों से भाड़े के लिए तीन हजार की मांग की थी। इसके उपरांत घर वालो ने राजदेव के खाता में पैसा भेज घर आने की बात कही थी, परंतु फूलचंद के ट्रेन में बैठे पांच दिन होने के बाद भी अबतक घर नहीं पहुंचे।

जर्जर स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्र भवन की होगी मरम्मत : रीना कुमारी

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। जिला परिषद अध्यक्ष रीना कुमारी सोमवार को सदर प्रखंड के बकरनी गांव पहुंचकर ग्रामीणों से सीधा संवाद स्थापित किया। ग्रामीण जन समस्याओं को चिन्हित कर मौके पर निपटारा करने के लिए पहल किया। जिला परिषद अध्यक्ष रीना कुमारी ने माना कि गांव में समस्याओं की भरमार है। इनको दूर करने के लिए कार्ययोजना बनाकर संवेदनशीलता से काम करने की जरूरत है। इस दौरान ग्रामीणों से हुई बैठक में वृद्धा पेंशन, आवास निर्माण योजना, राशन कार्ड, खाद्यान्न वितरण में अनियमित एवं आंगनबाड़ी केंद्र की जर्जर हालत आदि समस्याएं ग्रामीणों ने रखा। आंगनबाड़ी केंद्र के सेविका ने कहा कि, केंद्र का भवन जर्जर है। भवन की छत कभी भी गिर सकती है। इस स्थिति में आंगनबाड़ी का कामकाज अपने घर में संचालित कर रही है। स्कूल शिक्षिका ने कहा, स्कूल भवन जर्जर है। मरम्मती के लिए प्रस्ताव विभाग द्वारा पारित किया गया था। बावजूद, स्कूल भवन की मरम्मती अब तक नहीं किया गया। जर्जर स्कूल भवन में हादसा होने को लेकर इस शिक्षक और बच्चे भयभीत रहते हैं। मामले से अवगत होने के बाद जिप अध्यक्ष इस पर गहरी चिंता व्यक्त किया। कहा कि, विभागीय अधिकारियों से वार्ता कर शीघ्र आंगनबाड़ी केंद्र एवं स्कूल भवन की मरम्मती संवेदनशीलता और प्राथमिकता पर कराया जायेगा। कहा पेंशन और आवास योजना के लाभुक आवेदन दें। उन्हें सरकारी योजना का लाभ दिया जाएगा। इस मौके पर ग्रामीण सनियरो उरांव समेत गांव के निर्वाचित जनप्रतिनिधि, शिक्षिकाएं और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

जय श्रीराम समिति ने बाइक रैली के साथ निकाली कांवर यात्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। मनोकामना सिद्धि दुर्गा मंदिर परिसर से सावन मास की दूसरी सोमवारी पर जय श्रीराम समिति के नेतृत्व में भव्य बाइक रैली कांवर यात्रा निकाला गया। कांवर यात्रा मे हजारों की संख्या में शिव भक्त भगवा वस्त्र पहने शामिल हुए। यह कांवर यात्रा नगर भ्रमण करते हुए 25 किलोमीटर तय कर भंडरा प्रखंड मे भगवान विश्वकर्मा के द्वारा निर्मित अखिलेश्वर धाम में पहुंच कर भगवान शिव को जल अभिषेक किये। बाइक रैली कांवर यात्रा मे जिला परिषद उपाध्यक्ष विनोद उरांव, जिला परिषद सदस्य संदीप गुप्ता, जय श्रीराम समिति मुख्य संरक्षक रमेश उरांव, सुषमा सिंह, रमेश साहू, गुप्तेश्वर प्रसाद, अजय सोनी, ओम महतो पूर्व अध्यक्ष राजीव रंजन, सुनील अग्रवाल, नगर अध्यक्ष दीपक साहू महामंत्री सुशील पटनायक समेत अन्य ने भगवा झंडा दिखाकर बाइक रैली कांवर यात्रा को रवाना किया। बता दें कि कांवर यात्रा में शिव भक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा था। गाजे-बाजे के साथ निकली शिव भक्तों की टोली भगवान भोलेनाथ के जयकारे से गुंजायमान थी। लोहरदगा से पूरे रास्ते सुरक्षा व्यवस्था के कड़े इंतजाम किये गये थे जगह-जगह पर शिव भक्तों की टोली का स्वागत किया गया। बाइक रैली कांवड़ यात्रा में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की सदस्य डॉ. आशा लकड़ा शामिल हुई जिसे समिति के पदाधिकारीयो ने चुन्द्री पहनाकर भव्य स्वागत किया साथ ही इस यात्रा से काफी उत्साहित शामिल होकर सभी कार्यकर्ताओं का हौसला अफजाई की। सभी कांवरिया जमकर नाचते गाते अखिलेश्वर धाम पहुंचे जहां समिति के द्वारा प्रखंड अध्यक्ष सूरज ठाकुर की अगुवाई में भव्य भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें सभी भक्तगण शामिल होकर प्रसाद ग्रहण किया। मौके पर जिला पदाधिकारी, नगर पदाधिकारी, प्रखंड पदाधिकारी समेत अन्य सदस्यगण मौजूद थे।

डीसी ने वनाधिकार अधिनियम से संबंधित बैठक की

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण की अध्यक्षता में वनाधिकार अधिनियम से संबंधित बैठक समाहरणालय सभागार में आयोजित हुई। बैठक में अनुमण्डल स्तरीय समिति से अग्रसारित कुल 31 सामुदायिक वनाधिकार पट्टा और शेष व्यक्तिगत वनाधिकार पट्टा के मामलों पर चर्चा की गई और जिला स्तरीय समिति की बैठक में सर्वसम्मति से मामलों को पारित किया गया। बैठक में वन प्रमण्डल पदाधिकारी अभिषेक कुमार, आइटीडीए परियोजना निदेशक सुषमा नीलम सोरेंग, अनुमण्डल पदाधिकारी अमित कुमार, जिला परिषद सदस्य सेन्हा राधा तिर्की, जिला परिषद सदस्य कैरो सुखदेव उरांव व समिति के अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।

जिप अध्यक्ष ने सलगी पंचायत का किया दौरा

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। विकास योजनाओं को धरातल पर उतारकर जनता को शत- प्रतिशत लाभ मुहैया कराए जाने हेतु जिला परिषद अध्यक्ष रीना कुमारी भगत ने कुडू प्रखंड के पश्चिमी क्षेत्र में सलगी पंचायत का दौरा किया एवं क्षेत्र के लोगों से मुलाकात किया। भ्रमण के दौरान सलगी पंचायत भवन का निरीक्षण किया। भवन का निर्माण हुए काफी वर्ष होने के कारण भवन की स्थिति बहुत ही ज्यादा जर्जर पायी गयी। वही रोचो गावं का आंगनवाड़ी केंद्र का भी स्थिति भी काफी जर्जर पायी गयी। रोचो गावं स्थित मैदान में मिनी स्टेडियम के निर्माण हेतु मैदान का भी निरिक्षण किया। रोचो गावं अंतर्गत रोचो महुवा टोली, रोचो छापर टोली का भी भ्रमण किया। वहीं जिला परिषद अध्यक्ष रीना कुमारी भगत ने कहा की क्षेत्र में विकास का कार्य लगातार जारी है। पंचायत में जो भी कमियां हैं उसे दूर किया जाएगा। इस दौरान सलगी पंचायत मुखिया सुमित्रा कुमारी,वार्ड सदस्य सतीश उरांव, समेत अन्य उपस्थित थे।

बजरंग दल ने निकाली कांवर सह कलश यात्रा

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। बजरंग दल अमला टोली बड़ा तालाब शिव मंदिर के द्वारा भव्य कांवड़ यात्रा सह कलश यात्रा का कार्यक्रम किया गया। जिसमें जल संकल्प संजय खत्री और सभी शिव भक्तों ने एक साथ जल संकल्प किया। जिसमें शंख नदी से पतरा टोली, ब्लॉक मोड़, साइडिंग, पावर गंज, अमला टोली होते हुए बड़ा तालाब शिव मंदिर में जल अभिषेक किया गया। जिसमें सैकड़ो की संख्या में माताएं बहने शिव भक्त इस कांवड़ यात्रा में शामिल होकर पुण्य के भागी बने। कार्यक्रम का मंच संचालन समाजसेवी चंदन गोयल एवं रोहित साहू और मनोज गुप्ता के द्वारा सभी शिवभक्त को साफा और चुनरी देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राज साहू के द्वारा किया गया। जिसमें उन्होंने कहा कि हर साल की भांति इस साल भी कावड़ यात्रा सह कलश यात्रा बड़े ही धूमधाम से सावन माह की द्वितीय सोमवारी को करना तय हुआ था। इसी के निमित्त आज शिव मंदिर प्रांगण में जल अभिषेक का कार्यक्रम किया गया। शिव मंदिर संरक्षक एवं विश्व हिंदू परिषद आजीवन संरक्षण राजेंद्र खत्री ने कहा कि शिव की महिमा हम सबों में बनी हुई है। आज हमें यह देखने को मिला कि हमारे लोहरदगा जिला में भव्य रूप से शिव भक्त के द्वारा कावड़ यात्रा का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम से किया गया। मौके पर सचिन कुमार साहू, सत्यम कुमार, मनोज साहू, अशोक साहू, दीपक अग्रवाल, विपुल तमेडा, हिमांशु केसरी, अंकित अग्रवाल, अजय साहू, अजय कुमार, विजय खत्री, पीयूष अग्रवाल, बजरंग साहू, संदीप साहू, आर्यन साहू, मनीष गुप्ता इत्यादि शिव भक्त माताएं बहने उपस्थित थे।

बरवाडीह में लगा रोजगार मेला

बरवाडीह (आजाद सिपाही)। बरवाडीह प्रखण्ड कार्यालय के सभागार में सोमवार को राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही मुख्यमंत्री सारथी योजना के तहत रोजगार मेला का आयोजन किया गया। रोजगार मेला में पंचायत के विभिन्न वार्ड क्षेत्रों से युवक युवतियां तथा महिलाएं बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस दौरान आधा दर्जन इच्छुक अभ्यर्थियों ने पंजीयन करवाया। मेला में मेगा स्किल के बीएमसी संगीता कुमारी ने लोगों को महत्वाकांक्षी योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि कोई भी निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार से जुड़कर अपनी आर्थिक मजबूती बना सकते हैं। इसके लिए सरकार अलग-अलग प्रकार की योजनाएं चला रही है। बीडीओ रेशमा रेखा मिंज ने कहा कि योजना का लाभ वैसे युवा और युवती उठा सकते हैं। जिन्होंने पढ़ाई पूरी कर ली हो या पढ़ाई अधूरी छूट गई हो और वह बेरोजगार बैठे हैं। वे सरकार के इस योजना का लाभ निःशुल्क लेकर रोजगार शुरू कर सकते हैं। मौके पर प्रमुख सुशीला कुमारी, मनोज दत्त मनदीप सिंह सरिता देवी, प्रमिला देवी मानवती देवी, राजन कुमार सिंह, सुजाता कुमारी, सतीश कुमार यादव समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

टाइगर दिवस पर बच्चों के साथ निकाली प्रभातफेरी

बरवाडीह (आजाद सिपाही)। टाइगर दिवस पर सोमवार को बेतला, छिपादोहर पूर्वी और छिपादोहर पश्चमी रेंज में प्रातः स्कूली बच्चों के साथ प्रभातफेरी निकाली गयी। प्रभात फेरी शहर के विभिन्न मार्ग होते हुए रेंज कार्यालय परिसर मे समाप्त हुई। जिसका नेतृत्व रेंजर अजय टोप्पो व बेतला मे बेतला रेंजर शंकर पासवान ने किया। प्रभात फेरी में स्कूली बच्चे अपने अपने हाथों मे तख्ते लिए हुए थे और लोगों में जागरूकता लाने के लिए वन प्राणियों को सुरक्षा देना मेरा कर्तव्य है, जंगल को बचाना है, आदि नारे लगा रहे थे। मौके पर तीनों रेंज के स्कूली बच्चों के साथ पलामू ब्याघ्र परियोजना क्षेत्र के डायरेक्टर प्रजेशकांत जेना ने ऑनलाइन बच्चों को वन प्राणियों की रख-रखाव की विस्तृत जानकारी दी। कहा कि वन्य प्राणियों को सुरक्षा देने मेरा कर्तव्य है। हम अपनी इमादारीपूर्वक वन्य प्राणियों के सुरक्षा के प्रति संकप लें, तभी हम वन प्राणियों को सुरक्षा दे सकते है।

तीन को गुमला में रहेंगे हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ अनिल

गुमला (आजाद सिपाही)। झारखंड एवं रांची के हड्डी, रीढ़ की हड्डी, मस्तिष्क रोग व नस रोग विशेषज्ञ डॉ अनिल कुमार 'न्यूरो सर्जन' 3 अगस्त 2024 को पालकोट रोड गुमला स्थित निलेश मेडिकल में आयेंगे। झारखंड के ये सुप्रसिद्ध चिकित्सक स्थानीय नीलेश मेडिकल में सुबह 10 बजे से दोपहर दो बजे तक मरीजों को देखेंगे। इसमें हड्डी में दर्द, हड्डी का कनकनाना, कमजोर हड्डी आदि से संबंधी रोगियों की जांच की जायेगी।

किशोरों को स्वास्थ्य सेवा से जोड़ें : डॉ विजय लकड़ा

बसिया (आजाद सिपाही)। रेफरल अस्पताल बसिया के सभागार में स्वास्थ्य विभाग एवं सेन्टर फॉर कैटालाइजिंग चेंज (सी 3) के सयुंक्त तत्वाधान में एक दिवसीय उन्मुखीकरण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें सहिया को राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम, किशोरावस्था का महत्व, किशोरों द्वारा स्वास्थ्य सेवा लेने में वर्तमान चुनौती समाधान एवं सेवा प्रदाता की भूमिका के विषय पर जानकारी दिया गया। उन्मुखीकरण कार्यक्रम का उदघाटन प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ विजय लकड़ा, एवं प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक संदीप साहू के द्वारा किया गया। इस मौके पर प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ विजय लकड़ा ने कहा कि किशोरों को हमें स्वास्थ्य सेवा से जोड़ने के लिए उनके अनुकूल बनना होगा। उनके मित्र, हितैषी बनकर कार्य करना होगा। जिससे वे हमें अपनी समस्या को निसंकोच बतला पायेंगे और आपके द्वारा उसका बेहतर तरीके से समाधान होगा। सेंटर फॉर कैटालाइजिंग चेंज के प्रशिक्षक के द्वारा उपस्थित सहिया को किशोरावस्था में परिवर्तन ,वर्तमान में किशोरों से जुडी समस्या, सेवा लेने में चुनौतियां, एक सेवा प्रदाता के रूप मे कैसे हम किशोरों से जुडी हुई समस्या की पहचान कर उसका समाधान करें आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गयी। इस उन्मुखीकरण कार्यक्रम में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक, राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के बीटीटी एवं सेंटर फॉर कैटालाइजिंग चेंज सी3 के प्रशिक्षा समन्वयक प्रकाश सारंगी, क्लस्टर समन्वयक अमित और शौर्य तथा कुल एवं सहिया उपस्थित थे।

झारखंड जन संघर्ष जनमुक्ति मुक्ति मोर्चा के सुप्रीमो सहित पांच सदस्यों के घर पुलिस ने चिपकाया इश्तिहार

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। झारखंड जनमुक्ति मोर्चा के सुप्रीमो रामदेव उरांव एवं सक्रिय सदस्यों के घर ग्रामीणों के समक्ष बिशुनपुर पुलिस ने न्यायालय द्वारा निर्गत इश्तिहार चिपकाते हुए परिजनों को निर्धारित समय पर अभियुक्तों न्यायालय में उपस्थित करने की बात कही। सर्वप्रथम, रविवार को सिसई थाना अंतर्गत सेमरा गांव स्थित अजय खड़िया एवं घाघरा थाना अंतर्गत संतु उरांव, वहीं रविवार को बिशुनपुर थाना अंतर्गत मोर्चा के सुप्रीमो रामदेव उरांव, देवरागाणी सदस्य रमनू उरांव, अरविंद उरांव ,रोपा कोना लवचीक बड़ाईक, चीरोडिह के घर इश्तिहार चिपकाकर निर्धारित समय पर न्यायालय में उपस्थित होने की अपील की गयी है। थाना प्रभारी राकेश कुमार सिंह ने बताया कि उक्त सभी अभियुक्त हत्या एवं आर्म्स एक्ट के प्राथमिक अभियुक्त हैं। बिशनपुर थाना में इनके विरुद्ध कांड संख्या 28 /22 दर्ज है उक्त लोगों के धर पकड़ के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है परंतु यह लोग पुलिस के पकड़ में नहीं आ रहे हैं। न्यायालय द्वारा निर्गत इश्तिहार ग्रामीणों के समक्ष इनके घरों में ग्रामीणों के समक्ष चिपका कर न्यायालय में उपस्थित होने की अपील की गयी है। उपस्थित नहीं होने की स्थिति में न्यायालय द्वारा निर्गत आदेश उपरांत कुर्की जप्ती का करवाई किया जायेगा। एसआइ पवन कुमार सहित अन्य पुलिस बल के जवान शामिल थे।

मो. उमर फारूक ने ट्रांसफार्मर का किया उद्घाटन

सिसई (आजाद सिपाही)। सिसई छारदा रोड स्थित 100 केबीए का ट्रांसफार्मर को बदल कर नया ट्रांसफार्मर स्थानीय विधायक जिग्गा सुसारन होरो की पहल पर शनिवार को लगाया गया। इसमें लोगों में खुशी की लहर है। नये ट्रांसफार्मर का जेएमएम जिला उपाध्यक्ष युवा मोर्चा झामुमो मो उमर फारूक अंसारी के द्वारा फीता काट कर उद्घाटन किया गया। ज्ञात हो कि बीते 4 दिन पूर्व छारदा रोड का ट्रांसफार्मर अचानक खराब हो गया था। बरसात के महीने में बिजली खराब हो जाने पर स्थानीय लोगों को बहुत दिक्कत का सामना करना पड़ रहा था और खास कर विद्यार्थियों की पढ़ाई लिखाई में बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ रहा था जिसे देखते हुए लोगों ने स्थानीय विधायक को बिजली समस्या से अवगत कराया। जन भावनाओं व बच्चों की पढ़ाई का ख्याल रखते हुए विधायक द्वारा तत्काल बिजली विभाग से संपर्क कर 100 केबीए का नया ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया। स्थानीय लोगों ने बिजली ट्रांसफार्मर लगने से खुशी जाहिर की। इस अवसर पर गुरुबाबू शम्भू प्रसाद शर्मा ने कहा कि छारदा रोड पर पिछले 4 दिन से बिजली नहीं रहने से कई लोगों का व्यवसाय ठप हो गया था। ट्रांसफार्मर लग जाने से लोगो को फिर से रोजगार मिलेगा। इस मौके पर झामुमो के केंद्रीय सदस्य सह विधायक प्रतिनिधि प्रकाश उरांव, दीपक साहू, शम्भू शर्मा, रोहित शर्मा, नीलेश शर्मा, विनोद शर्मा, अरविंद मुखर्जी, सनबीर शर्मा, विनय साहू इत्यादि सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित हुए।

सड़क दुर्घटना में पुलिस जवान की मौत

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। गुरदरी थाना क्षेत्र नेतरहाट घाटी में हुए सड़क दुर्घटना में टीटही गांव निवासी अभिषेक उरांव की मौत हो गई। मृतक जवान की पत्नी सरस्वती ने बताया कि मेरे पति जिला पुलिस बल साहेबगंज में पदस्थापित थे। एक सप्ताह का छुट्टी लेकर घर आए थे बुधवार को ड्यूटी ज्वाइन करने के लिए जाने वाले थे परंतु घर का कुछ काम को लेकर सोमवार को लोहरदगा गए थे जहां से लौट के बाद नेतरहाट जा रहे थे। उसी क्रम में नेतरहाट घाटी के झाऊ ढलान के समीप अज्ञात वाहन ने उन्हें अपने चपेट में ले लिया। इधर गुरदरी थाना को सूचना मिलते ही एंबुलेंस के माध्यम से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिशुनपुर लाया गया जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पर बिशुनपुर थाना प्रभारी राकेश कुमार सिंह गुरदरी थाना प्रभारी धीरज कुमार सिंह ने परिजनों को ढाढस बांधा इधर घटना उपरांत परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। इधर पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

तालाब में गिरने से युवक घायल

गुमला (आजाद सिपाही)। हूटार बरटोली गांव में तालाब में नहाने के क्रम में मिर्गी से ग्रसित युवक 28 वर्षीय कंचन मिंज पत्थर पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना में उसके सिर में गंभीर चोट लगी। तत्काल उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डुमरी ले जाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद उसे सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। जानकारी के मुताबिक युवक अपने जीजा अरविंद केरकेट्टा के साथ गांव के तालाब में नहाने गया था नहाने के क्रम में मिर्गी का दौरा पड़ा और वह चट्टान में गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। फिलहाल सदर अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है वही इलाज के क्रम में उसे बार-बार झटका लग रहा था।

बाइक से जारी प्रखंड के डूमरपानी गांव पहुंचे उपायुक्त, सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

बारिश के बाद सड़क बनाने का दिया भरोसा

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी क्षेत्र भ्रमण में जिले के जारी प्रखंड स्थित गोविंदपुर पंचायत के अति सुदूरवर्ती क्षेत्र के डूमरपानी ग्राम का दौरा किया। अत्यंत ही सुदूरवर्ती क्षेत्र में होने के कारण उक्त ग्राम तक पहुंचने के लिए उपायुक्त ने लगभग 5 किलो मीटर की दूरी बाइक से तय की। उक्त ग्राम अंतर्गत कोरवा जनजाति के लोग रहते हैं। इस गांव में 25 घर हैं एवं लगभग 120 सदस्य रहते हैं। जब उपायुक्त उक्त ग्राम पहुंचे तो नागरिकों ने बेहद ही प्रसन्नता जाहिर की, उन्होंने कहा कि इससे पूर्व उक्त गांव में कोई भी बड़े अधिकारी नहीं आएं थे। इसलिए यह उनके लिए बेहद ही खास है कि उपायुक्त उनके गांव उनसे मिलने आए है। इस दौरान उपायुक्त द्वारा सभी ग्रामीणों के साथ एक जनसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं ग्रामीणों की समस्याएं सुनी। सबसे महत्वपूर्ण विषय सड़क का था जिसे तय कर उपायुक्त पहुंचे थे। उपायुक्त ने ग्रामीणों को इससे संबंधित खुशखबरी भी दी कि उनके गांव तक जाने के लिए सड़क निर्माण हेतु स्वीकृति मिल चुकी है। वर्षा के बाद सड़क निर्माण का कार्य जल्द ही प्रारंभ कर दिया जाएगा उन्होंने बताया कि डूमरटोली से डूमरपानी कोरवाटोली तक के लिए कुल 3.8 किलो मीटर का सड़क निर्माण पीएम - जनमन योजना के तहत निर्माण किए जाएंगे। जिसके लिए ग्रामीणों ने उपायुक्त के प्रति आभार भी व्यक्त किया।

इसके अलावा ग्रामीणों की बिजली एवं पानी की समस्या को देखते हुए उपायुक्त ने बिजली हेतु सोलर लाइट की व्यवस्था करने एवं पानी की सुविधा हेतु मनरेगा योजना से कुआं निर्माण तथा डीप बोरिंग करवाने हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उक्त ग्राम अंतर्गत बीच जंगल में 100 वर्ष पुरानी एक शिव मंदिर स्थित है जिसके लिए ग्रामीणों ने मंदिर तक जाने हेतु सड़क निर्माण की मांग की। उपायुक्त ने भी उक्त मंदिर का दौरा किया एवं उन्होंने भी पूजा अर्चना की। इसके अलावा उक्त ग्राम अंतर्गत हाथी के आने की समस्या से भी उपायुक्त को अवगत कराया गया एवं सभी ने टॉर्च की मांग की उपायुक्त ने ग्रामीणों को टॉर्च उपलब्ध कराने हेतु बीडीओ जारी को निर्देश दिए।। साथ ही उपायुक्त ने उक्त ग्राम के ग्रामीणों को पीएम डाकिया योजना के तहत राशन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए। एवं सभी ग्रामीणों को सरकार की सभी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ देने का भी निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने कहा कि कोई भी योग्य लाभुक योजनाओं से वंचित न रहे इसके लिए बीडीओ इसका ध्यान रखे। इसके अलावा ग्रामीणों द्वारा अन्य कई समस्याओं से उपायुक्त को अवगत करवाया एवं उक्त योजनाओं के निवारण हेतु उपायुक्त ने संबंधितों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान उक्त ग्राम में स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया गया था एवं ग्रामीणों का निःशुल्क स्वास्थ्य जांच करवाई गयी।

लाभकारी योजनाओं को आदिवासियों तक पहुंचायें : आशा लकड़ा

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के सदस्य डॉक्टर आशा लकड़ा के झारखंड प्रवास के दौरान प्रखंड कार्यालय परिसर में सोमवार को औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान घाघरा बीडीओ दिनेश कुमार से विभागवार चर्चा किया। डॉ. आशा लकड़ा ने कहा कि आदिवासियों का सुरक्षा, संरक्षण और उनको न्याय दिलाने के लिए राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग कार्य करती है। इसी निमित आज घाघरा में आदिवासियों को मिलने वाले लाभ उन तक पहुंच रहे हैं या नहीं इसकी जानकारी ली। साथ ही डॉ. लकड़ा ने मनरेगा से चल रहे सभी योजनाओं का विस्तृत जानकारी मांगा। जिसमें जॉब कार्ड, बिरसा सिंचाई कूप, गाय सेड, बकरी सेड व आम बागवानी के लाभुक की जानकारी मांगी। जहां मौजूद बीपीओ बेबी कुमारी ने चल रहे सभी योजनाओं की जानकारी दी। वही मौजूद कल्याण पदाधिकारी उपेंद्र उरांव से कल्याण विभाग द्वारा चल रहे योजनाओं की जानकारी पूछी इस दौरान लाभकारी योजनाओं को जनता तक पहुंचाने के लिए और अधिक मेहनत करने को कहा। साथ ही कल्याण पदाधिकारी को सरना मसना, धुमकुड़िया जैसे योजना धरातल पर उतरने के लिए आदेश दिया। इस मौके पर अंचलाधिकारी आशीष मंडल, भाजपा मंडल अध्यक्ष श्याम किशोर पाठक अरुणजय सिंह, आशीष सोनी, अमित ठाकुर, आकाश साहू, अमित सिंह सहित कई लोग मौजूद थे।

घाघरा प्रखंड के पुटो ग्राम में भारतीय जनता पार्टी घाघरा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ता मंजू लाल नाथ शाहदेव के माता जी का देहांत के बाद कार्यकर्ता के पैतृक गांव उनके परिजनों से मिलने डॉ. आशा लकड़ा सोमवार को पहुंची।

मनरेगा में भ्रष्टाचार की शिकायत से बचें

पूरे झारखंड में मनरेगा में चल रहे भ्रष्टाचार की चर्चा करते हुए डॉ. आशा लकड़ा ने बीडीओ दिनेश कुमार और बीपीओ बेबी कुमारी से कहा की मनरेगा में भ्रष्टाचार से सम्बंधित शिकायत नहीं मिले इसपर विशेष ध्यान रखा जाए। मनरेगा मजदूरों के लिए रोजगार मुहैया करने वाली योजना है। साथ ही कई लाभकारी योजना मनरेगा में चलाई जाती हैं। बावजूद भ्रष्टाचार चरम पर सुनाई पड़ता है।

बीएलओ कर्मियों ने प्रोत्साहन राशि बढ़ाने की मांग की

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। प्रखंड के 112 बीएलओ ने सामूहिक रूप से हस्तलिखित आवेदन देकर बीडियो दिनेश कुमार से गुहार लगाते हुए सभी बीएलओ अपने प्रोत्साहन राशि बढ़ाने का मांग किया है। अपने आवेदन में बीएलओ ने कहा है कि प्रखंड के 112 बीएलओ को केंद्र सरकार व राज्य सरकार के द्वारा निर्वाचन विभाग से कई प्रकार का ऑनलाइन काम दिया जाता है इसके एवज में ना मोबाइल रिचार्ज और ना ही ब्लॉक आने जाने का कोई भत्ता मिलता है। प्रोत्साहन राशि के रूप में सालाना 7000 मिलता है जिसे सभी बीएलओ को काम करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। बीएलओ ने प्रोत्साहन राशि को बढ़ाकर कम से कम 21300 देने का आग्रह किया है। बीएलओ के लिए आए हुए प्रोत्साहन राशि को जल्द से जल्द भुगतान करने का भी मांग बीडियो से किया है।

लेनदार खोल कर ले गये देनदार की स्कॉर्पियो का चक्का, देनदार ने उड़ायी चोरी की अफवाह

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। लेन देन में कहा सुनी होते हुए तो बहुत लोगों ने देखा और सुना होगा। मगर सोमवार को गुमला थाना में लेन देन का एक दिलचस्प ममला सामने आया। लेन देन में कहा सुनी हुई तो लेनदार, देनदार के स्कार्पियो गाड़ी का टायर ही खोल कर ले गया। टायर खोलने के क्रम में दोनों के बीच कहा सुनी भी हुई। लेकिन जैसे ही लेनदार टायर खोल कर ले गए,स्कॉर्पियो के मालिक ने सबसे पहले चोरी की अफवाह उड़कर उन लेनदारों को आरोपी बनाने का प्रयास किया। लेकिन एक कहावत है तू डाल डाल, मैं पात पात। लेनदार तो देनदार से दो कदम आगे निकले। लेनदारों ने देनदार के स्कॉर्पियो का टायर जैसे ही खोला, वह सीधे टायर लेकर थाने पहुंच गये। और वहां पर थानेदार को सारी राम कहानी बतायी। उन्होंने बताया कि वह देनदार का फल अपनी गाड़ी में लेकर बिहार गये थे। वहां की मंडी में फल बेचना था। लेकिन फल नहीं बिक सका। उन्हें फल सहित वापस गुमला लौटना पड़ा। लेकिन जब फल ले जाने वाले वाहन के तेल और भाड़े का पैसा मांगा गया तो देनदार पैसे देने में आनाकानी की। जिससे लेनदार और देनदार दोनों के बीच काफी बहस हुई। तभी तैश में आकर लेनदार ने अपने दो साथियों की मदद से सोमवार के सुबह 7:00 बजे उसकी स्कॉर्पियो का टायर खोल लिया और टायर लेकर थाने पहुंचे। इसी बीच देनदार ने लेनदारों को फंसाने के लिए कई पत्रकारों को टायर की चोरी होने की बात कह दी। क्योंकि यह सूचना स्कॉर्पियो के मालिक के द्वारा दी गयी थी इसलिए कुछ पत्रकारों ने चोरी से संबंधित खबर भी चला दी। वो तो अच्छा हुआ कि लेनदार टायर लेकर सीधे थाने पहुंच गये थे, तो थानेदार को सारा मामला समाचार चलने के पहले ही पाता था। इसके बाद पुलिस ने इस मामले में देनदार को झूठी खबर फैलाने के कारण काफी फटकार लगाई।

पालकोट में युवक ने गांव के नाबालिग को मारी गोली

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। पालकोट थाना क्षेत्र अंतर्गत अंबेरा डीह गांव में एक युवक अभिषेक पांडे पिता भवानी पांडे ने गांव के ही विपिन सिंह पिता मदन सिंह को गोली मार दिया गोली उसके गुप्तांग में लगी इसके बाद अभिषेक अपने बाइक से विपिन को अंबेरा डीह बगीचा के पास लाकर छोड़ दिया। जानकारी के मुताबिक अभिषेक की दादी लीलावती देवी का देहान्त हो गया है जिनका दाह संस्कार कार्यक्रम चल रहा था। इसी बीच विपिन सिंह को गोली मार दी गई और घायलावस्था में उसे अंबेरा डीह बगीचा के पास छोड़कर अभिषेक फरार हो गया। श्मशान घाट में भाजपा नेता मंगल सिंह भी मौजूद थे घटना की जानकारी के बाद सभी दौड़कर आए और घायल को अपने वाहन से सदर अस्पताल पहुंचाया। हालांकि घटना के कारणों का स्पष्ट पता नहीं चल पाया है वही विपिन का सदर अस्पताल में इलाज चल रहा है। घटना के बाद सदर अस्पताल में लोगों की काफी भीड़ लग गयी। घटना की जानकारी गुमला थाना को भी दी गयी है। गुमला पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है वही उससे पूछताछ की जा रही है।

AFFIDAVIT

As per Affidavit Ref. No. 1590 Dated 24.07.2024 I Binay Kumar, S/o. Late Shambhu Nath Sharma, R/o Near Panchmukhi Hanuman Mandir, or, No.- B/ 942, Sector-ii, Dhurwa, P.o- Dhurwa, P.S. Jagarnathpur, Dist. Ranchi (Jharkhand) - 834004, do Hereby 1. That I am indian National by Birth.

2. That I am Residing on the above mentioned address. 3. That my son's correct and actual name is PRATIK KUMAR and date or birth 15/12/2029 4. That my son's name mentioned in his Aadhar Card is PRATIK which is wrong. being Aadhar No - 7748 7673 6623. 5. That PRATIK and PRATIK KUMAR both name are same and only one person. 6. That I have this affidavit for the purpose of correction of my son's name PRATIK of PRATIK KUMAR.

7. That the above Statements are true and correct.

मुख्यमंत्री मइयां सम्मान योजना को लेकर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी के निर्देश पर सोमवार को जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग द्वारा जिला स्तरीय एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन नगर भवन गुमला में किया गया। कार्यक्रम में झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के क्रियान्वयन संबंधी विस्तृत जानकारी सभी उपस्थित सीडीपीओ, महिला पर्यवेक्षिकाओं, प्रखंडों के कंप्यूटर ऑपरेटर, सभी सीएससी मैनेजर, नगर परिषद के कर्मियों एवं पंचायत सेवकों को दी गयी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप से उप विकास आयुक्त दिलेश्वर महत्तो उपस्थित रहें एवं कार्यक्रम में जिला समाज कल्याण पदाधिकारी आरती कुमारी, जिला सामाजिक सुरक्षा सहायक निदेशक ललन कुमार रजक, जिला सूचना एवं विज्ञान पदाधिकारी सुशील कुमार, एलडीएम गुमला, सीएससी मैनेजर सहित अन्य संबंधित पदाधिकारी एवं कर्मी मौजूद रहें। सभी के द्वारा संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस दौरान उप विकास आयुक्त ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी दी गई एवं अधिक से अधिक महिलाओं को इस योजना से जुड़ने हेतु अपील की।

बता दें कि इस योजना के तहत सभी वर्ग की 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को प्रति माह एक हजार रु प्रोत्साहन राशि दी जायेगी। विभागीय दिशा-निर्देश के आलोक में झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना को सफल बनाने हेतु 03 से 10 अगस्त तक जिले के सभी पंचायतों, वार्डों में विशेष शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर से पहले सभी आंगनबाड़ी सेविका को विभाग द्वारा आवेदन पत्र उपलब्ध कराया जाएगा। सेविका अपने पोषण क्षेत्र की 21 से 50 वर्ष की योग्य महिलाओं को निःशुल्क आवेदन पत्र भरवाएगी। भरे हुए आवेदन पत्रों को विशेष शिविर के माध्यम से ऑनलाइन किया जाएगा। यह आवेदन पत्र सभी प्रखंड कार्यालय, पंचायत कार्यालय में भी उपलब्ध होंगी। इसके अलावा जिले के वेबसाइट gumla.nic.in पर भी जाकर लाभुक आवेदन को डाउनलोड कर सकते हैं।

Jharkhand Urja Sancharan Nigam Limited
(CIN: U40108JH2013SGC001704)
Office of the General Manager, Transmission Zone-III, Jamshedpur
132/33 KV. Grid Campus Gamharia, P.O- Gamharia, Distt- Seraikella-Kharsawan, Pin- 832108
email id: tz3jsr_jusnl@rediffmail.com

e-TENDER NOTICE

e-Tender in two parts i.e. Technical Part (Part–I) and Price Part (Part–II) is invited from reputed, capable, experienced and financially sound firm / agency / contractor for the following works :-

NIT No.	Description of work	Cost of B.O.Q	E/M to be deposited
123/PR/JUSNL/ 2024-25	Supply, laying, fabrication, fitting and fixing of concertina coil/barbed wire along with associate work for safety purpose at 220/132 kV GSS, Chandil-I.	Rs. 5,900.00 (Rs. 5,000/- + GST@18% (SGST9%+CGST9%)	Rs. 86,600.00
124/PR/JUSNL/ 2024-25	Concreting & metal spreading work in 132 kV Transformer no- 02 bay, 132 kV Jadugoda bay & adjoining area at 132/33 kV GSS, Golmuri.	Rs. 5,900.00 (Rs. 5,000/- + GST@18% (SGST9%+CGST9%)	Rs. 66,200.00
125/PR/JUSNL/ 2024-25	Construction of chemical earthing in forest rocky and normal area for tower location no. 01 to 80 of 132 kV S/C KNPS-NMD transmission line under T/S/D, Noamundi.	Rs. 5,900.00 (Rs. 5,000/- + GST@18% (SGST9%+CGST9%)	Rs. 49,800.00
126/PR/JUSNL/ 2024-25	Dismantling and repairing of damaged brick mortar work below expanded metal fencing along with painting of expanded metal fencing at 132/33 kV G/S/S, Dhalbhumgarh.	Rs. 5,900.00 (Rs. 5,000/- + GST@18% (SGST9%+CGST9%)	Rs. 66,700.00

Start Date and time of downloading of tender documents	:-	01.08.2024 at 02:00PM
Start Date and time of upload of BID	:-	01.08.2024 at 03:00PM
End date and time of upload of BID	:-	22.08.2024 upto 03:00PM
BID Opening date for technical part	:-	23.08.2024 at 04:00 PM
BID Opening date for price part	:-	Will be communicated later on
Tender Inviting Authority and address for communication	:-	General Manager, Transmission Zone-III, Jamshedpur, Campus 132/33 kV. Grid Colony Adityapur-I, Phase-VI, Post- Gamharia,Seraikella-Kharsawan, Pin Code– 832108 (Jharkhand).

1. e-Tender document and BOQ including terms & conditions, tender specification can be downloaded from website http://jharkhandtenders.gov.in. Any details / clarification required in this regard can also be had from the office of the undersigned during office hours.
2. Bidder shall deposit online Tender fee (as mentioned above), as per rules of e-tendering portal. Bidder shall deposit online EMD (as mentioned above), as per rules of e-tendering portal.
3. The bids will be received through electronic tendering mode only.
4. Please contact 9771790288/7903674983 for any enquiry.

स्वहित एवं राष्ट्र हित में ऊर्जा बचावें। कृपया अपनी शिकयतों को टॉल फ्री नं० 1800 345 6570 पर दर्ज करायें।

PR.NO.331165 Jharkhand Urja Sancharan Nigam Ltd(24-25):D

Sd/-
General Manager (Trans Zone-III)
(Jamshedpur)

व्यवसायियों ने अरुणा शंकर के लिए डाल्टनगंज से मांगा टिकट

बैठक कर झारखंड प्रभारियों व प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी से विधानसभा चुनाव में अरुणा शंकर को उम्मीदवार बनाने की मांग की

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर के व्यवसाईयों ने होटल शिवाय ब्लू में बैठक कर झारखंड भाजपा के चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान, सह प्रभारी हेमंत विश्व शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी एवं भाजपा प्रदेश कमेटी से मेदिनीनगर की प्रथम महापौर अरुणा शंकर को डालटनगंज विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनाए जाने की मांग की है। सोमवार को आयोजित बैठक में महापौर के रूप में अरुणा शंकर के कार्यकाल की सराहनीय की गयी। वक्ताओं ने कहा कि दो साल कोरोना के बावजूद शहर के समुचित विकास के साथ ही सुसज्जित, सुव्यवस्थित कर एक नई छवि गढ़ने में अरुणा शंकर कामयाब रही हैं। जिनके विजन को विरोधी भी स्वीकारते हैं। अगर उन्हें डाल्टनगंज भंडारिया विधानसभा से पार्टी नेतृत्व चुनावी मैदान में उतारती है तो निश्चित रूप से पूरे विधानसभा क्षेत्र में एक नया बदलाव नजर आएगा क्योंकि उनके पास विजन है। व्यवसाईयों ने कहा कि अरुण शंकर के पास काम करने की धुन है। यूथ, महिलाओं, बुद्धिजीवी वर्ग में उनकी लोकप्रियता चुनाव को अहम मोड़ दे सकती है। व्यवसाईयों ने कहा कि कोरोना काल में जब घर से लोग बाहर नहीं निकल पा रहे थे उस वक्त भी अरुणा शंकर बाहर निकल कर चेंबर की देखरेख में अपने निजी खर्च से निःशुल्क ऑक्सीजन बैंक खोलते हुए हजारों लोगों की जान बचाई जिसे भुलाया नहीं जा सकता है। प्रथम महापौर शहर की पहली ऐसी नेत्री है जो अपने कार्यकाल खत्म होने के बाद भी जनहित में कई कार्य अपने निजी खर्च से कर रही हैं। आज भी चौक चौराहे, गांधी उद्यान, मरीन ड्राइव में जो हरियाली और सुंदर लाइट नजर आ रही है वह अरुणा शंकर की ही देन है। वह अपने निजी खर्चे से फॉगिंग मशीन मंगवा कर हर मोहल्ले-टोलों में चलवाते रहती है जिसकी सराहना हर जगह होती है। व्यवसायों ने भाजपा से मांग की कि व्यवसाईयों को नजर अंदाज न करते हुए अरुणा शंकर को भाजपा के टीकट से डालटेनगंज भंडारिया का प्रत्याशी बनाएं। वह भारी मतों से जीत दर्ज करेंगीं। सभी लोगों ने निर्णय लिया कि जरूरत पड़ी तो व्यवसायी चुनाव समिति से भी रांची जाकर मिलेंगे। वहीं, कार्यक्रम की अध्यक्षता कृष्ण अग्रवाल और संचालन इंद्रजीत सिंह डिंपल ने किया। जिसमें शहर के कई जाने माने बड़े व्यवसायई उपस्थित थे।

हुसैनाबाद विधायक ने अनुसूचित जाति का आरक्षण शून्य करने का मामला विधानसभा में उठाया

आजाद सिपाही संवाददाता

विधायक कमलेश कुमार सिंह।

हुसैनाबाद। पलामू जिले में चौकीदार की सीधी भर्ती में अनुसूचित जाति को आरक्षण का लाभ नहीं दिए जाने का मुद्दा हुसैनाबाद विधायक कमलेश कुमार सिंह ने सोमवार को विधानसभा में उठाया। गौरतलब हो कि पलामू में चौकीदार के पदों पर सीधी भर्ती के लिए डीसी ने दो जुलाई को विज्ञापन प्रकाशित किया है। इसमें चौकीदार के 156 पदों की भर्ती की जानी है। विज्ञापन में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षण को शून्य कर देने पर विवाद उत्पन्न हो गया है। इस मामले को लेकर विधायक ने विधानसभा में पूछे गए अल्पसूचित प्रश्न संख्या-26 के उत्तर में गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने स्थिति स्पष्ट की है। पलामू प्रमंडल के आयुक्त की ओर से आरक्षण रोस्टर शोधन कोटिवार अनुमोदित किया गया है। जिसके अनुसार पलामू जिले में चौकीदार संवर्ग का कुल स्वीकृत पद-443 है, जिसके विरूद्ध कार्यरत बल-281 है और रिक्त 162 पद है। जिनमें अनुसूचित जाति श्रेणी अंतर्गत कुल स्वीकृत पद 120 के विरूद्ध वर्तमान में 120 चौकीदार कार्यरत हैं। इसलिए अनुसूचित जाति के लिए कोई रिक्त पद नहीं है। जिस कारण विज्ञापन में अनुसूचित जाति श्रेणी के लिए रिक्त पद की संख्या शून्य है। विधायक के अल्पसूचित प्रश्न के जवाब में विभाग ने कहा कि बंगाल चौकीदार अधिनियम-1870 के तहत ब्रिटिश काल से अनुसूचित जाति के दुसाध उपजाति के लोगों को ही चौकीदार बहाल किया जाता था। लेकिन वर्तमान में झारखंड चौकीदारी संवर्ग नियमावली 2015 और 2019 के अनुसार चौकीदार की भर्ती, सेवा शर्तों और प्रोन्नति को विनियमित किया जाता है। इसके अलावे 1991 के बिहार सरकार के निर्देश के अनुसार, वे व्यक्ति जो 1990 के पूर्व से चौकीदार के रूप में काम कर रहे थे, उन्हें अनुकंपा के आधार पर सेवा में नियमित किया गया था। एक अन्य प्रश्न के जवाब में बताय गया कि सरकार ने खंड-1 में वर्णित चौकीदार बहाली के लिए प्रकाशित विज्ञापन को रद्द करने और अनुसूचित जाति के लिए आरक्षण रोस्टर के अनुसार रिक्ति के विरुद्ध आरक्षण सुनिश्चित कर पुनः विज्ञापन प्रकाशित करने की योजना पर विचार नहीं किया है।

विधायक ने विस सत्र में उठायी पांकी को अनुमंडल बनाने की मांग

पांकी/पलामू (आजाद सिपाही)। विधानसभा के शितकालीन सत्र के दौरान विधायक डॉ कुशवाहा शशिभूषण मेहता ने पांकी को अनुमंडल बनाने की मांग फिर से दोहराई। कहा की अनुमंडल नहीं होने से पांकी के लोगों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। किसी भी काम के लिए समय के साथ आर्थिक परेशानी भी उठानी पडती है। यदि पांकी को अनुमंडल बना दिया जाय तो लोगों को राहत मिलेगी। पांकीवासियों की सुविधा के लिए मनातू, तरहसी और पांकी को मिलाकर अनुमंडल बनाने व लोहरसी, सगालीम, कोनवाई, माड़न, कसमर को प्रखंड बनाने की मांग की।

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर ट्री मैन डॉ कौशल ने पौधरोपण कर कटहल बगान का किया शुभारंभ

पौधा लगाने व उसे संरक्षित करने का लेना होगा संकल्प: डॉ कौशल

पर्यावरण धर्म गुरु ने प्रकृति को बचाओ अभियान के तहत 1967 से अब तक निजी भूमि पर विकसित किया छठा बागान

आजाद सिपाही संवाददाता

प्रकृति की पूजा करते, वृक्षों पर रक्षाबंधन व पौधा लगाते पर्यावरणविद व अन्य।

मेदिनीनगर। विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर ट्री मैन ऑफ झारखंड व विश्व व्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्मगुरु पर्यावरणविद डॉ कौशल किशोर जायसवाल ने अपनी पत्नी सह मुखिया पूनम जायसवाल एवं प्रकृति प्रेमियों के साथ प्रभात फेरी निकाली। इसके बाद कौशल नगर में करीब डेढ़ एकड़ में फैले अपनी निजी जमीन पर पर्यावरण धर्म के आठ मूल ज्ञान मंत्रों के साथ कटहल का पौधा लगाकर कटहल बगान का शुभारंभ किया। उन्होंने लोगों से कहा कि एक पेड़ लगाओगे तो 10 पीढ़ी तर जाएगी। पर्यावरण धर्म के आठ मूल ज्ञान मंत्रों की शपथ दिलाते हुए उन्होंने कहा कि प्रकृति से केवल लेना नहीं देना भी सीखें। उन्होंने बताया कि वे अपने जन्मभूमि पर 1967 में 7.72 एक-ड़ 2001 में कुटिया पर 27 एकड़ 2015 में कौशल नगर में 2 एकड़ में पार्क और आज कौशल नगर में 1,5 एकड़ भूमि पर कटहल बगीचा लगा कर प्रकृति संरक्षण दिवस को यादगार बनाया है। क्योंकि कटहल पेड़ एवरग्रीन की श्रेणी में आता है। यह छायादार तो होता ही हैं साथ ही कच्चा रहने पर अच्छी सब्जी और पक जाने पर इसकी मिठास केला से भी मधुर होती है। इतना ही नहीं इसमें काबोहाइड्रेट प्रोटीन डाइटरी, फाइबर और फैट जैसे पोषक तत्व भी अधिक पाए जाते हैं। पर्यावरणविद डॉ कौशल, मुखिया पूनम जायसवाल, उप मुखिया नगीना खातून और महजन यादव ने संयुक्त रूप से प्रकृति की पूजा करने के बाद ग्रामीणों के साथ वृक्षों पर रक्षाबंधन किया। प्रकृति पूजा में खोढी मुखिया पूरन यादव, पूर्व उप मुखिया अफजाल अंसारी, मनोज यादव, सुचित कुमार जायसवाल, जुबेर अंसारी, जगदीश यादव, गुलाम गौस, योगेश्वर यादव, विनोद सिंह, चंद्रेश सिंह, बाबूराम, शिवनाथ राम, अवधेश राम, विनोद यादव, अखिलेश पासवान, धर्मदेव यादव, कोमल यादव, ईश्वर यादव, लक्ष्मण राम, बालेश्वर यादव, लखन यादव और संतोष यादव आदि ग्रामीण मौजूद थे।

विधानसभा चुनाव में छतरपुर क्षेत्र से झामुमो का प्रत्याशी उतारने की उठी मांग

गठबंधन समर्थित राजद उम्मीदवार की बार-बार की हार को जीत में बदलने की रणनीति - पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व के समक्ष रविंद्र राम को उम्मीदवार बनाने की अपील

आजाद सिपाही संवाददाता

छतरपुर/पलामू। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) विधानसभा चुनाव की तैयारी में जुट गयी है। पंचायत और बूथ कमेटी को मजबूत करने के लिए लगातार बैठकें की जार ही है। इसी क्रम में छतरपुर प्रखंड के चराई पंचायत में भी सोमवार को बैठक की गयी। जिसकी अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष रविंद्र राम और संचालन कोषाध्यक्ष शिवनाथ सुरीला ने किया। इस अवसर पर रविंद्र राम ने बताया कि केंद्रीय कमेटी द्वारा पंचायत स्तरीय सम्मेलन में सरकार की योजनाओं को घर-घर पहुंचने एवं पंचायत व बूथ कमेटी को मजबूत करने का निर्देश दिया गया है। जिसकी शुरूआत चराई पंचायत से की गई है। झामुमो कार्यकर्ता सभी पंचायत में बैठक कर पंचायत एवं बूथ कमेटी को मजबूत करने के साथ ही सरकार की योजनाओं की जानकारी लोगों को देने और उन्हें इसका लाभ दिलाने का प्रयास करेगी। लोगों तक पार्टी सीधा पहुंच बनाएगी, ताकि बिचौलिए एवं दलालों के चंगुल से उन्हें बचाया जा सके। प्राप्त आवेदनों पर जिन पदाधिकारीयों द्वारा त्वरित कार्रवाई नहीं की जाएगी उनसे संबंधित शिकायत जिला एवं राज्य कमेटी से की जाएगी। यदि आवश्यकता पड़ी तो संबंधित मंत्री एवं मुख्यमंत्री से भी शिकायत की जाएगी। वक्ताओं ने कहा कि छतरपुर विधानसभा से गठबंधन समर्थित राजद के उम्मीदवार को बार-बार हार का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी की केंद्रीय कमेटी से छतरपुर विधानसभा क्षेत्र से झामुमो का उम्मीदवार उतारने की मांग की जाएगी। साथ ही क्षेत्र की जनता की मांग पर विधानसभा चुनाव में रविंद्र राम को ही पार्टी उम्मीदवार बनाने की मांग की जाएगी। बैठक में ग्राम पंचायत चराई समिति सदस्य बलराम सिंह, बिहारी सिंह, कुलदीप सिंह, संदीप शाह, अखिलेश प्रजापति, निर्मल भुइंया, बाबूलाल सिंह, चंदन राम, शंकर राम प्रसाद भुइंया, वीरेंद्र सिंह, मदन यादव, सुरेश सिंह, कमलेश राम, पंचीय देवी, पंचायत अध्यक्ष अध्यक्ष कुसुम देवी, हृदय देवी, सुनीता देवी, सीता कुंवर और ललिता देवी आदि थीं।

सिगसिगी स्टेशन से लावारिस बैग से 36 बोतल विदेशी शराब जब्त

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। जपला आरपीएफ पोस्ट ने रविवार की रात सिगसिगी रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर तीन पर लावारिस हालत में पिट्ठू बैग बरामद किया। जिसकी तलाशी लेने पर उसमें से 36 बोतल अंग्रेजी शराब बरामद हुई है। यह शराब झारखंड से तस्करी कर बिहार ले जाई जा रही थी। आरपीएफ इंस्पेक्टर राजेश कुमार मीणा ने बताया कि आरपीएफ जपला पोस्ट के प्रधान आरक्षी सुधीर कुल्लू व आरक्षी छोटेलाल यादव सिगसिगी रेलवे स्टेशन पर अपराधी गतिविधि निगरानी की गस्ती कर रहे थे। तभी सिगसिग्गी रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर तीन के उतरी छोर से हरे रंग का पिट्ठू बैग मिला। जिसके संबंध में मौजूद यात्रियों से पूछताछ की गई। यात्रियों ने अनभिज्ञता जाहिर की। जब बैग खोल कर देखा गया तो उसमें विभिन्न ब्रांड की अंग्रेजी शराब पाई गई। जिसका मूल्य 13 हजार 260 रुपये है। इस मौके पर उप निरीक्षक जितेंद्र प्रताप यादव और जयप्रकाश प्रसाद आदि मौजूद थे।

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना हमारा लक्ष्य : विकास कुमार

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। प्रखण्ड क्षेत्र के अत्यंत सुदूरवर्ती सलैया पंचायत के ग्राम मझिगांवा में संचालित ज्ञान ज्योति मिशन स्कूल कम खर्च में बच्चों का भविष्य संवार रही है। सीबीएसई पैटर्न पर आधारित ज्ञान ज्योति मिशन स्कूल में अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों के द्वारा हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। संस्थान के निदेशक विकाश कुमार ने कहा कि हमारा लक्ष्य उच्च स्तर की शिक्षा देना एवं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना हमारा लक्ष्य है।

ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल की सानिया फातिमा एवं अकांक्षा गुप्ता ने सीयूइटी में लहराया परचम

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। ऑक्सफोर्ड की सानिया फातिमा ने सीयूईटी 2024 की परीक्षा में ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित किया। कॉमन यूनिवर्सिटी इंट्रेस टेस्ट 2024 में ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल मेदिनीनगर की छात्रा सानिया फातिमा 2024 सीबीएसई 12वीं की वार्षिक परीक्षा 95 प्रतिशत अंक लेकर पलामू प्रमंडल में टॉपर रही है। यह विद्यालय के कला संकाय की प्रथम बैच की छात्रा है। सीयूईटी 2024 की परीक्षा में कुल अंक 800 में 724 प्राप्तांक लाकर कीर्तिमान स्थापित की है। अंग्रेजी 148/200 राजनीति विज्ञान 200/200, इतिहास 194/200, मनोविज्ञान 182/200, विद्यालय के वाणिज्य संकाय की छात्रा आकांक्षा गुप्ता भी सीयूईटी 2024 में 684/800 लाकर अच्छा प्रदर्शन की है। अंग्रेजी 152/200 एकाउंटेंसी 182/200, बिजनेस स्टडीज 200/200, अर्थशास्त्र 152/200। इन्होंने भी सीबीएसई बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में 95 प्रतिशत अंक लाकर कीर्तिमान स्थापित की है। दोनों बच्चों का दिल्ली विश्वविद्यालय एवं जेएनवी विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित महाविद्यालयों में नामांकन होगा। विद्यालय के चेयरमैन डॉ एसबीपी मेहता एवं प्राचार्य डॉ. एके सिंह ने विद्यार्थियों की सफलता पर बधाई एवं शुभकामना देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

डीसी ने डायन प्रथा उन्मूलन को लेकर जागरूकता रथ को किया रवाना

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिले में डायन कुप्रथा को पूर्ण रूप से समाप्त करने के उद्देश्य से सोमवार को डीसी शशि रंजन, डीडीसी शब्बीर अहमद, उप निर्वाचन पदाधिकारी कानूराम नाग, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी नीता चौहान ने संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर दो जागरूकता रथ को रवाना किया। इसके माध्यम से डायन कुप्रथा उन्मूलन के लिए लोगों को जागरूक किया जायेगा। जागरूकता रथ पलामू के सभी प्रखंडों, प्रमुख चौक-चौराहों एवं हाट-बाजारों में ऑडियो के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का काम करेगी।

इस अवसर पर डीसी शशि रंजन ने कहा कि डायन प्रथा एक अंधविश्वास है और इसे जड़ से खत्म करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा व जागरूकता के अभाव में लोग इस अंधविश्वास की ओर चले जाते हैं। इसी उद्देश्य से यह जागरूकता रथ को रवाना किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में रथ के माध्यम से लोगों को डायन अधिनियम की जानकारी देकर डायन कुप्रथा के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया जायेगा। उन्होंने आम लोगों से कुप्रथा को समाप्त करने में जिला प्रशासन का साथ देने की अपील की।

बीसीसीएल की जांच टीम ने किया भू-धंसान क्षेत्र का निरीक्षण

मुरलीडीह आदिवस्ती गांव में हुए भू-धंसान की खबर प्रकाशित होने के बाद हरकत में आया बीसीसीएल प्रबंधन

- अधिकारियों ने कहा- घटना प्रबंधन की लापरवाही से नहीं, अवैध खुदाई के चलते हुई है

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा। मुरलीडीह 13 नंबर आदिवासी टोला में रविवार को हुए भू-धंसान की घटना के बाद बीसीसीएल प्रबंधन हरकत में आ गया। पश्चिमी झरिया क्षेत्र के जीएम के आदेश पर एक जांच टीम ने सोमवार को घटनास्थल का निरीक्षण किया। एजेंट बीएन साहा के नेतृत्व में पहुंची जांच टीम में बीके मिश्रा, भक्तू महतो माईनिंग सरदार, दुखन महतो और सर्वेयर आलम अंसारी आदि शामिल थे। अधिकारियों ने सर्वे रिपोर्ट चार्ट के आधार पर आदिवासी बस्ती के आसपास के प्रबंधन द्वारा किये गये खनन का अवलोकन किया। इसके बाद टीम ने आदिवासी स्थल की घटना को लेकर प्रबंधन द्वारा पूर्व मे किये गये खादानों अथवा ओसीपी की खुदाई से ऐसी स्थिति उत्पन्न होने से साफ अनकार किया है। इस संदर्भ में क्षेत्रीय एजेंट ने कहा कि इस क्षेत्र में वर्ष 1942 में चलाये गये 12/12 'ए' के नीचे का सीम 65 मीटर, मिडिल सीम-100 मीटर एवं बॉटम सीम लगभग 150 मीटर दूर है, जबकि वर्ष 2010-11 में ढाई वर्ष तक चले ओसीपी भी लगभग 100 मीटर की दूरी पर है। ऐसे में क्षेत्र में हुए भू-धंसान के लिये प्रबंधन जिम्मेवार नहीं है। उन्होंने कहा कि निकटवर्ती बस्ती क्षेत्र में आयी बड़ी दरार पोखरिया क्षेत्र में की गयी संभावित अवैध खुदायी का परिणाम है। जिसका निरीक्षण कर पाना बहुत मुश्किल है। अधिकारियों ने कहा कि इस वक्त 13 नंबर आदिवासी बस्ती डेंजर जोन में है। यहां रह रहे सभी नागरिक अवैध रूप से हैं। जिन्हें समय-समय पर अन्यत्र स्थानांतरण चले जाने को लेकर नोटिस दिया जाता है। अधिकारियों ने कहा कि बस्ती के वैसे परिवार जो रैयत है या प्रबंधन की सेवा निवृत कर्मी हैं। उन्हें पुनर्वासित के लिए प्रबंधन विचार करेगी। निरीक्षण दल ने कहा कि अभी गांव के प्रभावित इलाकों मे फेंसिंग गार्ड लगाकर लोगों को उधर न जाने की हिदायत दे दी गयी है। गौरतलब है कि क्षेत्र में भू-धंसान की घटना से पीड़ित वर्षों से रह रहे गरीब आदीवासी-हरिजन समुदाय के लोग दहशत में है।

स्पोर्ट्स

एफसीआइ मुख्यालय ने रोमांचक मुकाबले में एफसीआइ नॉर्थ जोन को 3-1 से पराजित कर कप पर कब्जा जमाया।

नॉर्थ जोन को 3-1 से हराकर हॉकी चैंपियन बना एफसीआइ मुख्यालय

मुनीश राणा 'मैन ऑफ द मैच' और अमर सिंह बने 'मैन ऑफ द टूर्नामेंट'

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। 53वें अखिल-भारतीय भाखानि अंतर आंचलिक हॉकी टूर्नामेंट का समापन किट हॉकी स्टेडियम में एक रोमांचक फाइनल मैच के साथ हुआ। जिसमें एफसीआई मुख्यालय की टीम ने एफसीआई नॉर्थ जोन पर 3-1 की स्कोर लाइन के साथ जीत हासिल की। मुनीश राणा (एफसीआई मुख्यालय) को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच से सम्मानित किया गया, जबकि अमर सिंह (एफसीआई नॉर्थ जोन) ने निरंतर उत्कृष्टता के लिए मैन ऑफ द टूर्नामेंट का खिताब जीता। वहीं, पूरे टूर्नामेंट में श्री कोहिनूरप्रीत सिंह (एफसीआई मुख्यालय) अपनी उल्लेखनीय गोल करने की क्षमता का प्रदर्शन करते हुए सबसे अधिक गोल करने वाले खिलाड़ी के रूप में उभरे। 23 से 27 जुलाई 2024 तक आयोजित इस टूर्नामेंट में छह प्रतिस्पर्धी टीमें : एफसीआई ईस्ट जोन, एफसीआई वेस्ट जोन, एफसीआई नॉर्थ जोन, एफसीआई साउथ जोन, एफसीआई मुख्यालय एवं एफसीआई नॉर्थ -ईस्ट जोन शामिल थी। इस कार्यक्रम में कई गरिमामयी विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही जिसमें भारतीय खाद्य निगम के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक अशोक केके मीना, भाप्र से मुख्य अतिथि एवं हॉकी इंडिया के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ दिलीप तिर्की आदि शामिल हुए। इनके अलावा भाखानि के पूर्व उमप्र (सा) व ओलंपियन के थोइबा सिंह, कार्यकारी निदेशक (पूर्व) अश्विनी कुमार गुप्ता, डीएसपी ओडिशा पुलिस व ओलंपियन वीरेंद्र लाक्रा, अमित भूषण, महाप्रबंधक (बिहार क्षेत्र), निहार रंजन प्रधान, महाप्रबंधक (ओड़िशा क्षेत्र) भी शामिल थे। सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं आयोजकों का निहार रंजन प्रधान ने आभार व्यक्त किया।

धनबाद शहर की अधिकांश एटीएम खराब, ग्राहक परेशान

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। शहर के अधिकांश एटीएम मशीनें खराब है। जिसने ग्राहकों की परेशानी बढ़ा दी है। भारतीय डाक कर्मचारी संघ के महासचिव प्रभात रंजन की मानें तो शहर के बैंक मोड़, हीरापुर, पुराना मिश्रित भवन, जगजीवन नगर के अलावा हावड़ा मोटर के पास स्थित एटीएम मशीने खराब पड़ी है। ऐसे में ग्राहकों को राशि निकासी में काफी परेशानी हो रही है। ग्राहकों का कहना है कि उन्होंने इसकी शिकायत भी की है। पर अब तक इसे ठीक नहीं किया जा सका है।

आंदोलन की चेतावनी

बंद एटीएम से आम जनमानस को हो रही परेशानी पर प्रतिक्रिया देते हुए भारतीय मजदूर संघ डाक विभाग के पदाधिकारी प्रभात रंजन ने चेतावनी दी है कि अगर 10 दिनों के अंदर खराब एटीएम मशीनों को ठीक कर उसे चालू नहीं किया गया तो इसके खिलाफ आंदोलन करने को विवश होंगें।

मनोज कपरदार ने मुख्यमंत्री को भेंट की अपनी दो पुस्तकें, मिली सराहना

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची/धनबाद। लेखक व कला समीक्षक मनोज कुमार कपरदार ने अपनी दो पुस्तक झारखंड की आदिवासी कला परंपरा और झारखंड के भूले बिसरे क्रांतिवीर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को सोमवार को भेंट किया। मुख्यमंत्री ने दोनों पुस्तकों को देखने के बाद उसकी प्रशंसा की और मनोज कुमार कपरदार के उज्जवल भविष्य की कामना की। कहा कि इनकी चर्चा देश व दुनिया में हो यही हमारी कामना है। उन्होंने कहा कि साहित्य के क्षेत्र में झारखंड की भूमि उर्वर हो। वहीं, गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो ने मनोज कुमार कपरदार की प्रशंसा करते हुए कहा कि ये अपनी लेखनी से झारखंड की कला व संस्कृति से देश भर के लोगों को अवगत कराते रहते हैं। मालूम हो कि झारखंड की आदिवासी कला परंपरा पुस्तक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। जबकि दूसरी पुस्तक झारखंड के भूले बिसरे क्रांतिवीर नेहरू बाल पुस्तकालय सीरीज में शामिल है।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अपनी किताबें भेंट करते मनोज कुमार कपरादार।

हत्या के प्रयास के दोषी को सात साल सश्रम कारावास की सजा

तेनुघाट (आजाद सिपाही)। तेनुघाट व्यवहार न्यायालय के जिला जज प्रथम अनील कुमार ने जान मारने के कोशिश करने वाले पेटरवार थाना क्षेत्र के लुकेया निवासी शिवा मांझी को दोषी पाये जाने पर सात साल सश्रम कारावास की सजा सुनाई। बतातें चलें कि रजरप्पा थाना अंतर्गत सिद्धू कांदू नगर रजरप्पा प्रोजेक्ट निवासी शनिचर मांझी ने पेटरवार थाना प्रभारी के समक्ष 8-9 अगस्त 2014 को अपने जीजा शिवा मांझी पर नौकर से मिलकर उसके भांज सत्येंद्र की हत्या की कोशिश करने का आरोप लगाया था।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
भवन निर्माण विभाग
भवन प्रमण्डल संख्या-1, राँची

अति अल्पकालीन निविदा/कोटेशन आमंत्रण शुद्धि सूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि इस कार्यालय के पत्रांक–2288 (अनु०) दिनांक–26.07.2024 पी०आर० संख्या–330918 (भवन) 2024–25D द्वारा आमंत्रित अल्पकालीन निविदा /कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या– 27/2024–25 जिसका परिमाण विपत्र की बिक्री दिनांक 03.08.2024 को 1.00 (एक) बजे अपराह्न तक एवं निविदा प्राप्ति दिनांक 03.08.2024 को 3.00 (तीन) बजे तक है, के क्रम संख्या 1 में अंकित परिमाण विपत्र की राशि 1250.00 के स्थान पर 5000.00 पढा जाय। निविदा की शर्तें यथावत् रहेगी।

कार्यपालक अभियंता
भवन निर्माण विभाग
भवन प्रमण्डल संख्या–1, राँची

PR 331140 Building(24-25).D

विधायक ने शून्यकाल में उठाया सहारा से जमाकर्ताओं को पैसा लौटाने का मामला

बड़ी राशि डूबने से आत्महत्या के लिए मजबूर हो रहे सहारा के जमाकर्ता: डॉ लंबोदर महतो

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची/बेरमो। गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो ने झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के दूसरे दिन सोमवार को सहारा इंडिया में निवेश व जमा की राशि का भुगतान करने का मामला उठाया। उन्होंने यह मामला शून्य काल में उठाया। कहा कि राज्य भर के लाखों उपभोक्ताओं ने सहारा इंडिया में लगभग 500 अरब रुपए से ज्यादा का निवेश व जमा किया था। जिसकी परिपक्वता अवधि पूरी होने के बावजूद सहारा इंडिया की ओर से राशि का भुगतान नहीं किया जा रहा है। जिस कारण कई उपभोक्ता आत्महत्या करने को विवश हो रहे हैं। जबकि सहारा की सहकारी समितियों का भुगतान का आदेश दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिया है। साथ ही ऐसा आदेश सेंट्रल रजिस्टार सेंट्रल रजिस्टार आफ को-ऑपरेटिव सोसाइटी द्वारा भी दिया गया है। इसके बावजूद सहारा समूह भुगतान नहीं कर रहा है, जो दिल्ली उच्च न्यायालय का उल्लंघन है। उन्होंने सदन के माध्यम से राज्य सरकार से झारखंड में सहारा इंडिया के उपभोक्ता के निवेश व जमा की राशि का भुगतान कराने को लेकर शीघ्र जरूरी कदम उठाने पर जोर दिया।

कार्यालय, झुमरी तिलैया नगर परिषद्

ईच्छा की अभिव्यक्ति 02/2023-24 (3rd call)
(अति अल्पकालीन निविदा सूचना)
(Very Short Term Tender Notice)

15वें वित्त आयोग द्वारा प्राप्त अनुदान राशि के माध्यम से क्रियान्वयन हेतु 15th FC Tied Grant स्वीकृत योजना अंतर्गत झुमरी तिलैया नगर परिषद् esa Establishment of 100 kg per day Capacity Waste paper/waste cloths Recycling plant and production of value added products from recycled paper/old,used, torn, Damaged clothes हेतु मशीन, उपकरण एवं अन्य आवश्यक सामग्रियों की आपूर्ति, निर्माण कार्य, अधिष्ठापन, प्रशिक्षण, दो (02) वर्ष तक विपणन लिंकेज, संचालन और रख–रखाव (Operation & Maintanance) हेतु Turnkey Basis पर इस क्षेत्र के अनुभवी निबंधित एवं इच्छुक गैर सरकारी संगठनों/अर्द्ध सरकारी संगठनों/निजी कम्पनी/ संस्थानों /फर्म/उत्पादक एवं उनके प्राधिकृत प्रतिनिधि आदि से दिनांक 05/08/2024 के 05:00 बजे अपराहन तक ईच्छा की अभिव्यक्ति (Expression of Interest) आमन्त्रित की जाती है। "ईच्छा की अभिव्यक्ति" तकनीकी बीड एवं वित्तीय बीड़ की अलग–अलग सीलबंद लिफाफे को एक बड़े पृथक सीलबंद लिफाफें में समर्पित किया जायेगा। ईच्छा की अभिव्यक्ति (Expression of Interest) समर्पित करने संबंधी शर्त एवं दिशा निर्देश कार्यालय, झुमरी तिलैया नगर परिषद् के सूचना पट्ट अथवा वेबसाईट https://udhd.jharkhand.gov.in पर देखा जा सकता है। सीलबंद Expression of Interest के तकनीकी बिड को प्रस्तावकों/प्राधिकृत प्रतिनिधियों की उपस्थिति में दिनांक 06/08/2024 के 04:00 बजे अपराहन निविदा निस्तारण समिति के द्वारा खोला जायेगा, तत्पश्चात तकनीकी बिड के सफल प्रस्तावकों द्वारा परियोजना के क्रियान्वयन से संबंधित कार्य योजना का PPT (Power Point Presentation) प्रस्तुति के पश्चात वित्तीय बीड़ खोला जायेगा। Expression of Interest या परियोजना संबंधी किसी प्रकार के संशय (Confusion) निराकरण हेतु मोबाईल नम्बर 6207805284 पर किसी भी कार्यालय दिवस के कार्यालय अवधि में सम्पर्क किया जा सकता है।

ह0/–
प्रशासक, झुमरी तिलैया नगर परिषद्

PR.NO.331045 Urban Development(24-25):D

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
MINOR IRRIGATION DIVISION, KODERMA

(3rd Call) Very Short Notice Inviting e-quotation.
Notice :- WRD/MID, KODERMA-06/2024-25,Date-29.07.2024

Government of Jharkhand through its Public Work Department (PWD) is engaged in framing/ revision of Schedule of Rates and as part of this endeavor, quotations through e-tender are invited for rate of items/ Materials annexed as Annexure- I for Construction Work from Quarry Owner/Crusher Owners/Reputed Manufacturers/ authorized dealers/Suppliers and other stakeholders authorized for respective items having valid GSTIN of materials. The rates conforming to specifications for inclusion in the schedule of Rates for Government of Jharkhand to be used in different Civil construction/ infrastructure work and repair works shall be submitted online in the website http://jharkhandtenders.gov.in. Details of Materials and its specification are available on the above e-tender Portal. The quotationer may download the documents from the website and quote their rate of Materials online from 03.08.2024 at 10:30 hrs. to 10.08.2024 at 16:00 hrs. The quotation will be opened on 12.08.2024 at 14:00 Hours.

The Quotation is invited to ascertain and assess the rate of Materials at par with lowest market rate for framing of Schedule of Rate.

Address for Communication:-
Executive Engineer Minor Irrigation Division, Koderma
Mobile No. :- +91 99391 93214
Email -eemidkod-cemr-jhr@nic.

Executive Engineer
Minor Irrigation Division,
Koderma

PR 331077 (Minor Irrigation)24-25*D

महत्वपूर्ण न्यूज

जिम्स अस्पताल एवं धनबाद रोटरी क्लब ने लगाया रक्तदान शिविर, 52 यूनिट रक्त संग्रह

धनबाद (आजाद सिपाही)। रोटरी क्लब ऑफ धनबाद सेंट्रल (आरसीडीसी) ने जिम्स अस्पताल के सहयोग से सोमवार को रक्तदान शिविर आयोजित किया। जिसका उद्घाटन पीएमसीएच के प्रधानाचार्य ज्योति रंजन प्रसाद एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता रोटेरियन अमरेश सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है। रोटरी क्लब ऑफ धनबाद सेंट्रल के सभी सदस्य धनबाद वासियों की सेवा के लिए निरंतर तत्पर रहते है। शिविर में 52 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। उन्होंने बताया कि सेवा के लिए और भी कई कल्याणकारी कार्य धनबाद में शीघ्र किए जाएंगे जिसका शेड्यूल बन चुका है। वहीं, क्लब के कोषाध्यक्ष विनीत तुलस्यान ने बताया कि रोटेरियन अमित तुलसियान, रोटेरियन अमित जैन, रोटेरियन नितिन केडिया, रोटेरियन संजय अग्रवाल, रोटेरियन मनोज अग्रवाल, रोटेरियन रवि भवनिया, रोटेरियन मनोज मोदी आदि ने रक्तदान किया। रक्तदान शिविर को सफल बनाने में डॉ प्रकाश सिंह, डॉ गायत्री सिंह, डॉक्टर यश सिंह व अमरेश सिंह की अहम भूमिका रही।

दिल्ली के जंतर मंतर पर महिला कांग्रेसियों के आंदोलन में शामिल हुई रांची-धनबाद की प्रतिनिधि

धनबाद (आजाद सिपाही)। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की अध्यक्ष अलका लांबा के नेतृत्व में आधी आबादी के हक-अधिकार को लेकर दिल्ली के जंतर-मंतर पर महिला कांग्रेस ने आंदोलन की शुरूआत और संसद भवन का घेराव किया गया। जिसमें झारखंड प्रदेश महिला कांग्रेस की अध्यक्ष गुंजन सिंह भी शामिल हुईं। इसमें धनबाद महिला कांग्रेस की अध्यक्ष सीता राणा के नेतृत्व में नगर महिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष पूनम देवी आदि ने भी भाग लिया। इस अवसर पर पूनम देवी ने कहा कि अखिल भारतीय महिला कांग्रेस सोमवार से आधी आबादी के हक के लिए देशव्यापी नारी न्याय आंदोलन की शुरूआत की है। यह आंदोलन जंतर मंतर से शुरू होकर पूरे देश में फैलेगा। वहीं, नगर अध्यक्ष पूनम देवी ने कहा कि महिला कांग्रेस ने महत्वपूर्ण तीन मांगों को लेकर नारी न्याय आंदोलन कर रही है। इसमें 33 फीसदी महिला आरक्षण विधेयक को लागू करने, आरक्षण में एससी-एसटी और ओबीसी महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के साथ ही विधानसभा चुनाव वाले राज्यों में भी इस पर चर्चा कर इसे लागू करना शामिल है। पूनम देवी ने कहा कि इस आंदोलन के माध्यम से देश के कोने-कोने से झारखंड सहित सभी राज्यों एवं जिलों से महिला कांग्रेसी लाखों की संख्या में उक्त कार्यक्रम में शामिल होकर इसे ऐतिहासिक बनायेंगीं। कहा कि जब तक मांगें पूरी नहीं होतीं, सड़क से संसद तक संघर्ष जारी रहेगा।

पड़ाव चार्ज में बढ़ोतरी का टेंपो चालकों ने किया विरोध

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाही)। फुसरो नगर परिषद द्वारा फुसरो से डुमरी, नावाडीह तक चलने वाले टेंपो चालकों ने पड़ाव शुल्क में किए गए वृद्धि का विरोध शुरू हो गया है। फुसरो स्थित निर्मल महतो चौक पर सभी टेंपो चालकों ने एकत्रित होकर प्रदर्शन किया। टेंपो चालकों का कहना है कि पहले ही 20 रुपया वसूला जा रहा था, जो अन्य जगहों की अपेक्षा अधिक है। जिसे बढ़ाकर 25 रुपये किया गया है।

पंचायत स्तर पर शिविर लगाकर किया जायेगा योजना का निष्पादन : डीडीसी

मइया सम्मान योजना को लेकर समाहरणालय में बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। महिला आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सरकार ने मइया सम्मान योजना के तहत 21 से 50 वर्ष की महिलाओं की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रतिमाह 1000 रुपए की आर्थिक सहायता राशि देने की घोषणा की है। इस योजना को लेकर सोमवार को उप विकास आयुक्त सादात अनवर की अध्यक्षता में संबंधित पदाधिकारियों की बैठक हुई। इसमें अंचल अधिकारी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी के साथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। डीडीसी के अनुसार योजना के लाभ को जोड़ने के लिए आगामी तीन से 10 अगस्त तक पंचायत स्तरीय शिविरों का आयोजन होना है। सुरों के सफल संचालन के लिए सभी जरूरी कार्य समय पर निष्पादित और योजना का व्यापक प्रचार प्रसार सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। डीडीसी ने निर्देश दिया कि सरकार का इस महत्वपूर्ण योजना का लाभ लेने से एक भी योग्य महिला न छूटे और शिविर सुचारू रूप से चले इसलिए कार्यशाला का आयोजन कर सभी को आवश्यक निर्देश दिये जा रहे हैं। वहीं सामाजिक सुरक्षा के सहायक निदेशक नियाज अहमद ने कहा कि योजना के लिए आंगनबाड़ी के माध्यम से निःशुल्क आवेदन पत्र उपलब्ध कराया जाएगा। इसका वितरण जमा करने एवं स्वीकृति तक की सारी कार्रवाई निःशुल्क होगी। आंगनवाड़ी सहायिका सेविका अपने-अपने क्षेत्र में घर-घर जाकर 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को चिन्हित कर आवेदन उपलब्ध करायेंगीं। इसके लिए लाभुकों को फायदा पहुंचाने के लिए पंचायत स्तरीय शिविर लगाया जाएगा। आवेदन के स्वीकृति पदाधिकारी के रूप में अधिकृत बीडीओ को आवेदनों का सत्यापन तीन दिनों के अंदर करके स्वीकृति प्रदान करना होगा। बैठक में कल्याण पदाधिकारी अनीता कुजूर, अग्रणी जिला प्रबंधक अमित कुमार, सीएससी मैनेजर अंजार हुसैन के अलावा सभी बीडीओ, सीओ, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी और समाज कल्याण विभाग के कर्मी मौजूद थे।

Government of Jharkhand
Department of School Education and Literacy
(Jharkhand Education Project Council, Ranchi)
JSCA Stadium Road, Sector- III, Dhurwa, Ranchi-834004
Phone: 0651-2444501, E-Mail: jepcranchi1@gmail.com

शुद्धि–पत्र

झारखण्ड शिक्षा परियोजना परिषद् अतंर्गत समग्र शिक्षा के तहत राज्य के सरकारी विद्यालयों के सुदृढ़ीकरण हेतु निविदा आमंत्रण सूचना पत्रांक JEPC/CIV/03/964/2024/2553, दिनांक 15.07.2024, PR No. 329799 Jharkhand Education Project Council (24-25)#D अंतर्गत निम्नलिखित तालिका अनुरूप के संशोधित माना जाय ।

मूल कंडिका	संशोधित कंडिका को निम्न प्रकार पढ़ा जाय ।
परिमाण विपत्र बिक्री की अंतिम तिथि एवं समयः दिनांक 18.08.2024 को 5:00 (पाँच) बजे अपराह्न तक ।	परिमाण विपत्र बिक्री की अंतिम तिथि एवं समयः दिनांक 10.08.2024 को 5:00 बजे अपराह्न तक ।
निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समयः दिनांक 11.08.2024 को 2:00 (दो) बजे अपराह्न तक ।	निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समयः दिनांक 11.08.2024 को 2:00 (दो) बजे अपराह्न तक ।
निविदा खोलने की संभावित तिथि एवं समयः दिनांक 13.08.2024 को 3:30 (साढ़े तीन) बजे अपराह्न ।	निविदा खोलने की संभावित तिथि एवं समयः दिनांक 13.08.2024 को 3:30 (साढ़े तीन) बजे अपराह्न ।

शेष सभी नियम एवं शर्तें यथावत रहेंगे ।

Ref. No.: JEPC/CIV/03/964/2024/2770 Ranchi, Date : 29.07.2024

Sd/-
(Aditya Ranjan)
State Project Director
Jharkhand Education Project Council

PR 331033 Jharkhand Education Project Council(24-25).D

डीसी से शिकायत कर उक्त सरकारी जमीन मुक्त करवाने की अपील

सरकारी जमीन पर कब्जा कर बनाया मकान रास्ता संकीर्ण होने से बढ़ी लोगों की परेशानी

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा। थाना क्षेत्र के कुंजी बस्ती स्थित सरकारी जमीन के आम रास्ते पर फर्जी दस्तावेज बनाकर गांव के व्यक्ति द्वारा अवैध तरीके से कब्जा किए जाने व उक्त भूमि को मुक्त करवाने की मांग को लेकर कुंजी गांव निवासी नसीम अंसारी ने दर्जनों ग्रामीणों के साथ सोमवार को संवाददाता सम्मेलन किया। नसीम अंसारी ने बताया कि तेलमोचो में 78 डिसमिल जमीन सरकारी खाता की भूमि पर है। जिसपर गांव के ही समसुद्दीन अंसारी, अब्दुल हुसैन अंसारी, सिराजुद्दीन अंसारी, निजामुद्दीन अंसारी, बदरूद्दीन अंसारी, इकरामूल अंसारी और रज्जब अंसारी ने फर्जी दस्तावेज बनाकर अवैध तरीके से कब्जा कर मकान का निर्माण कर लिया हैं। जिससे रास्ते की चौड़ाई संकीर्ण हो गयी है। इससे दो-चार पहिया वाहनों व लोगों की आवाजाही थम गई है। बताया कि अतिक्रमण के पहले भी कई बार शिकायत की गयी, लेकिन कोई कार्यवाई नहीं होने से ग्रामीणों की परेशान जस की तस बनी हुई है। जबकि कब्जा की गई भूमि सरकारी है। नसीम अंसारी ने बताया कि उक्त मामले को लेकर झारखण्ड के भू-राजस्व सचिव समेत धनबाद के डीसी, वरीय पुलिस पदाधिकारी, बाघमारा अनुमंडल पुलिस अधिकारी एवं महुदा थाना प्रभारी को ज्ञापन देकर उक्त सरकारी जमीन को अतिक्रमण मुक्त करवाने की अपील की गयी है। इस मौके पर मो मुमताज अंसारी, मो नसीम अंसारी, विनोद बिहारी महतो, प्रकाश कुमार महतो, मो बरकत अंसारी व इस्लाम अंसारी आदि थे।

कार्यालय, झुमरी तिलैया नगर परिषद्

ईच्छा की अभिव्यक्ति (Expression of Interest) - 03/2023-24 (2nd Call)
(अति अल्पकालीन निविदा सूचना)
(Very Short Term Tender Notice)

15वें वित्त आयोग द्वारा प्राप्त अनुदान राशि के माध्यम से क्रियान्वयन हेतु 15th FC Tied Grant स्वीकृत योजना अंतर्गत झुमरी तिलैया नगर परिशद् में Establishment of minimum 40-50 pic pad per minutes Capacity Affordable Sanitary pad manufacturing unit/Plant हेतु मशीन उपकरण एवं अन्य आवश्यक सामग्रियों की आपूर्ति, निर्माण कार्य, अधिष्ठापन प्रशिक्षण, दो (02) वर्ष तक विपणन लिंकेज, संचालन और रख–रखाव (Operation & Maintenance) हेतु Turnkey Basis पर इस क्षेत्र के अनुभवी निबंधित एवं इच्छुक गैर सरकारी संगठनों / अर्द्ध सरकारी संगठनों / कम्पनी / संस्थानों / फर्म / उत्पादक एवं उनके प्राधिकृत प्रतिनिधि आदि से दिनांक 05/08/2024 के 05:00 बजे अपराहन तक ईच्छा की अभिव्यक्ति (Expression of Interest) आमन्त्रित की जाती है। "ईच्छा की अभिव्यक्ति" तकनीकी बीड एवं वित्तीय बीड़ की अलग–अलग शीलबंद लिफाफे को एक बड़े पृथक सीलबंद लिफाफें में समर्पित किया जायेगा। ईच्छा की अभिव्यक्ति (Expression of Interest) समर्पित करने संबंधी विस्तृत शर्त एवं दिशा निर्देश कार्यालय, झुमरी तिलैया नगर परिषद् के वेबसाईट https://udhd.jharkhand.gov.in पर देखा जा सकता है। शीलबंद Expression of Interest के तकनीकी बीड़ को प्रस्तावकों /प्राधिकृत प्रतिनिधियों की उपस्थिति में दिनांक 06/08/2024 के 04:00 बजे अपराहन् निविदा निस्तारण समिति के द्वारा खोला जायेगा, तत्पश्चात तकनीकी बीड़ के सफल प्रस्तावकों का वित्तीय बीड़ खोला जायेगा। इसके पश्चात् प्रस्ताव का Power Point Presentation प्रस्तावकों द्वारा मूल्यांकन समिति के समक्ष प्रदर्शित किया जायेगा। Expression of Interest या परियोजना संबंधी किसी प्रकार के संशय (Confusion) निराकरण हेतु मोबाईल नम्बर 6207805284 पर किसी भी कार्यालय दिवस के कार्यालय अवधि में सम्पर्क किया जा सकता है।

ह0/–
प्रशासक
झुमरी तिलैया नगर परिषद्

PR 331047 Urban Development (24-25)_D

सांसद नवीन जिंदल को मिला महात्मा हंसराज गौरव सम्मान

दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज के 77वें स्थापना दिवस समारोह में किया गया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज के 77वें स्थापना दिवस समारोह में कुरुक्षेत्र के सांसद और देश के अग्रणी उद्योगपति नवीन जिन्दल को महात्मा हंसराज गौरव सम्मान से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के लिए लंबा कानूनी संघर्ष करने और उसे जन-जन तक पहुंचाने के लिए नवीन जिंदल के अथक प्रयासों की उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मंच से भरपूर तारीफ की।

कुरुक्षेत्र के सांसद नवीन जिंदल को हंसराज कॉलेज ने दो दिन पूर्व अपने 77वें स्थापना दिवस पर खास मेहमान के रूप में आमंत्रित किया था। जिंदल ने इसी कॉलेज से कॉमर्स में डिग्री हासिल की है। अपने इस होनहार छात्र की उपलब्धियों को देखते हुए हंसराज कॉलेज ने नवीन जिंदल को महात्मा हंसराज गौरव सम्मान से अलंकृत किया। यह सम्मान उन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो योगेश सिंह और हंसराज कॉलेज की प्राचार्या प्रो रमा ने प्रदान किया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ प्रभांशु ओझा ने बताया कि नवीन जिंदल हंसराज कॉलेज को लेकर अत्यंत भावुक हैं और सदैव कॉलेज के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं। नवीन जिंदल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के माध्यम से उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि उपराष्ट्रपति द्वारा तिरंगे के लिए उनके प्रयासों और संघर्षों की सराहना उनके लिए गर्व का विषय है।

पूर्व तट रेलवे (इसीओआर) के महाप्रबंधक ने खुर्दा रोड-पलासा रेलवे खंड का निरीक्षण किया

भुवनेश्वर और पलासा के बीच चल रहे अमृत स्टेशनों की प्रगति की समीक्षा की

अनुभाग में ट्रैफिक सुविधा परियोजनाओं और बुनियादी ढांचे से संबंधित कार्यों का निरीक्षण किया

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। पूर्व तट रेलवे (इसीओआर) के महाप्रबंधक परमेश्वर फूंकवाल ने हाल ही में भुवनेश्वर-पलासा रेलवे खंड का विस्तृत निरीक्षण किया। उनके साथ पूर्व तट रेलवे मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारी, चल रही परियोजनाओं के लिए निर्माण दल और मंडल रेल प्रबंधक एचएस बाजवा के नेतृत्व में खुर्दा रोड रेलवे डिवीजन के प्रतिनिधि भी थे।

निरीक्षण के दौरान श्री फूंकवाल ने लक्षित समयसीमा का पालन करने के महत्व पर जोर देते हुए अमृत स्टेशन परियोजना की प्रगति की समीक्षा की। जिन स्टेशनों का निरीक्षण किया गया उनमें बालूगांव, भुवनेश्वर, ब्रह्मपुर, छत्रपुर, खुर्दा रोड, लिंगराज मंदिर रोड, पलासा और इच्छापुरम शामिल हैं। इन स्टेशनों पर चल रहे निर्माण कार्यों की वर्तमान स्थिति की भी समीक्षा की गयी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर यातायात सुविधाओं और यात्री सुविधाओं से संबंधित बुनियादी ढांचे और विकासात्मक कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने यात्रियों को बेहतर सेवाएं और सुविधाएं प्रदान करने के महत्व पर जोर देते हुए अधिकारियों को इन परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने के लिए आवश्यक कदम उठाने की सलाह दी।

ओड़िशा का विकास दोगुना हो जायेगा: बैजयंत

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। ओड़िशा में अब डबल इंजन की सरकार चल रही है। पिछली सरकार के दौरान, गैर-राजनीतिक उद्देश्यों के तहत ओडिशा के लोगों को कई केंद्रीय योजनाओं से वंचित रखा गया था। यहां तक कि प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी पथप्रदर्शक योजनाओं के लाभार्थियों के चयन में भी गरीब लोगों को भेदभाव के माध्यम से परेशान किया जा रहा है। अब मोदी के ओड़िशा के विकास के लिए आने वाली सभी केंद्रीय सहायता का लाभ ओड़िशा के लोगों को मिलेगा। प्रदेश कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और केंद्रापड़ा सांसद श्री बैजयंत पंडा ने कहा कि कांग्रेस के 10 वर्षों के शासन में केंद्रीय योजना को केंद्रीय टिकस में राज्य के हिस्से के रूप में केवल एक लाख 14 हजार करोड़ मिले, जबकि मोदी सरकार के 10 वर्षों में यह 4 गुना बढ़ कर 4 लाख 57 हजार करोड़ रुपये हो गया है। इसी तरह, जब रेलवे अनुदान की बात आती है, तो कांग्रेस ने 10 वर्षों में कभी भी 1,000 करोड़ रुपये को नहीं छुआ, लेकिन मोदी सरकार के मौजूदा रेल बजट में ओड़िशा को 10,500 करोड़ से अधिक केंद्रीय अनुदान मिला है। इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस सरकार में ओड़िशा की किस तरह उपेक्षा हुई और मोदी सरकार में ओडिशा को कैसे न्यार्ज हक मिला। श्री पंडा ने कहा कि मौजूदा बजट में ओड़िशा में पर्यटन के विकास के लिए उठाये गये कदम आने वाले दिनों में ओड़िशा की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में मील का पत्थर की भूमिका निभायेंगे।

एनएमएल की पकरी-बरवाडीह कोयला खदान की उपलब्धि

अखिल भारतीय स्तर के खान सुरक्षा पुरस्कार में शीर्ष सम्मान

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड की पकरी-बरवाडीह कोयला खनन परियोजना को 28,204 जुलाई को कोलकाता के बिस्वा बांग्ला कन्वेंशन सेंटर में आयोजित प्रथम पैन इंडिया लेवल माइन सेफ्टी अवार्ड (टरअ-2024) में बड़ी ओपनकास्ट कोयला खदान श्रेणी में तीसरे पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम खान सुरक्षा महानिदेशालय के तत्वावधान में आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य कोयला, धातु, तेल और गैस क्षेत्रों में सर्वोत्तम सुरक्षा प्रथाओं का प्रदर्शन करने वाली खानों को पहचानना और पुरस्कृत करना था। खान के मुख्य निरीक्षक और डीजीएमएस के महानिदेशक प्रभात कुमार ने एनटीपीसी लिमिटेड के निदेशक (ईंधन) और एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड (एनएमएल) के अध्यक्ष शिवम श्रीवास्तव और फैज तैयब, चंद्र शेखर, खान एजेंट, टीएसएमपीएल के निदेशक (संचालन) और कोयला खनन मुख्यालय और टीएसएमएल के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में पकरी-बरवाडीह में परियोजना प्रमुख को पुरस्कार प्रदान किया।

अपने संबोधन में प्रभात कुमार ने एक मजबूत सुरक्षा संस्कृति को बनाये रखने और सर्वोत्तम श्रेणी की सुरक्षा प्रथाओं को लागू करने के लिए एनटीपीसी की अटूट प्रतिबद्धता की सराहना की।

एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड के निदेशक (ईंधन) और अध्यक्ष शिवम श्रीवास्तव ने कहा कि खनन उद्योग में सुरक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के आयोजन बहुत महत्वपूर्ण हैं।

एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड (एनएमएल) प्रदर्शनी स्टॉल को कोयला क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ स्टॉल घोषित किया गया। यह पुरस्कार खनन क्षेत्र में सुरक्षा, नवाचार और परिचालन उत्कृष्टता के लिए एनटीपीसी की निरंतर खोज का एक प्रमाण है।

किट डिम्ड विश्वविद्यालय को विशेष परामर्शदात्री का दर्जा

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। किट डीम्ड विश्वविद्यालय को संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (यूएन इसीओएसओसी) द्वारा प्रतिष्ठित विशेष परामर्शदात्री का दर्जा प्रदान किया गया है। संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद् सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण योगदान को मान्यता देता है। गौरतलब है कि दुनिया भर से 476 आवेदनों में से किट डीम्ड विश्वविद्यालय सहित केवल 19 संगठनों को इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए चुना गया। 23 जुलाई को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित यूएन इसीओएसओसी प्रबंधन खंड की बैठक के दौरान इस दर्जे हेतु किट डीम्ड विश्वविद्यालय को नवाजा गया। यह मान्यता संयुक्त राष्ट्र के एजेंडा 2030 और एसडीजी के प्रति किट की अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। विशेष परामर्शदात्री दर्जा प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण कीर्तिमान है।

इसके साथ एक अन्य विकास में किट ने यूएन वालंटियर्स (यूएनवी) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। यह भागीदारी किट डीम्ड विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए विभिन्न यूएन एजेंसियों के साथ जुड़ कर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय यूएन स्वयंसेवक के रूप में काम करने का एक उल्लेखनीय अवसर प्रदान करती है, जिन्हें यूएन एजेंसियों के भीतर विभिन्न विकास पहलों के लिए तैनात किया जायेगा। इसी तरह, अमेरिकन काउंसिल ऑफ यंग पॉलिटिकल लीडर्स (एसीवाइपीएल) ने कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (किस) और किट के साथ अपने ऐतिहासिक सहयोग की घोषणा की है।

अपनी खुशी जाहिर करते हुए किट और किस के संस्थापक डॉ अच्युत सामंत ने कहा कि यह गर्व की बात है कि कीट भारत का एकमात्र व्यावसायिक/तकनीकी विश्वविद्यालय है, जिसने यूएन इसीओएसओसी विशेष सलाहकार का दर्जा हासिल किया है। साथ ही, भारत में किट और ओड़िशा में कीस दोनों को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलने पर हमें खुशी है। उन्होंने यह भी बताया कि कीस को पहले ही 2015 में यूएन इसीओएसओसी विशेष सलाहकार का दर्जा दिया जा चुका है और आज तक इस दर्जे पर अपना स्थान बनाये हुए है।

छह बंदूक कारोबारी गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। कमिश्नरेट पुलिस को मिली बड़ी कामयाबी है। बंदूक कारोबारी से जड़ित छह अपराधियों को स्पेशल स्क्वार्ड पुलिस ने गिरफ्तार किया है। उनके पास से पांच पिस्तौलें बरामद की गयीं। सोमवार को कमिश्नरेट पुलिस की ओर से प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए जानकारी मिली। सूचना मुताबिक, ये अपराधी कटक और भुवनेश्वर के अलग-अलग इलाकों में बंदूकों का कारोबार कर रहे थे। चोरी की बंदूकों के कारोबार की सूचना मिलने के बाद कमिश्नरेट पुलिस ने विभिन्न स्थानों पर छापेमारी कर बंदूकें जब्त कर लीं और कारोबारियों को गिरफ्तार कर लिया। बिहार से बंदूकें लाते थे और ओड़िशा में बेचते थे। वे अपराधी केंदापड़ा और जगतसिंहपुर में सक्रिय थे।

रत्न भंडार कमेटी की बैठक में निर्णय

पहले रत्न भंडार की मरम्मत फिर गहनों की गिनती होगी

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। रत्न भंडार कमेटी की एक और अहम बैठक न्यायमूर्ति विश्वनाथ रथ की अध्यक्षता में हुई। न्यायमूर्ति विश्वनाथ रथ के अनुसार रत्न भंडार में अलंकारों की गिनती के बारे में कोई चर्चा नहीं हुई है, बल्कि रत्न भंडार की मरम्मत पर जोर दिया गया है। श्रीमंदिर की ढांचा पर कोई सवाल न हो, महाप्रभु के दर्शन में कोई विघ्न न हो और श्रद्धालुओं को दर्शन में कोई परेशानी न हो, इसके लिए बैठक में इस बात पर चर्चा हुई कि रत्न भंडार के अंदर की मरम्मत कैसे की जाये। रत्न भंडार के बाहरी और भीतर के हिस्से की मरम्मत में सबसे उन्नत और परिष्कृत उपकरणों का उपयोग किया जायेगा। हालांकि, श्रीमंदिर रत्न भंडार की सभी उपयोगी जानकारी का खुलासा उचित समय पर किया जायेगा।

200 केवीए का नया ट्रांसफार्मर लगवाया

आजाद सिपाही संवाददाता

ट्रांसफार्मर के उद्घाटन के मौके पर भाजपा नेता सह पूर्व आइजी लक्ष्मण प्रसाद सिंह।

धनवार, गिरिडीह। धनवार प्रखंड के घोड़थंबा में बीते कई दिनों से अंधकार में जीवन बिता रहे लोगों में भाजपा नेता सह पूर्व आइजी लक्ष्मण सिंह के प्रयास से 200 केवीए का नया ट्रांसफार्मर लगाये जाने के बाद हर्ष का माहौल है। भाजपा नेता श्री सिंह ने सोमवार को स्थानीय लोगों के आग्रह पर उसका फीता काट कर उद्घाटन किया। बता दें कि घोड़थंबा में एक सौ के बी का लगा ट्रांसफार्मर जल जाने के कारण पिछले कई दिनों से अंधेरे में जीने को विवश थे। ग्रामीणों ने जब इसकी जानकारी पूर्व आइजी श्री सिंह को दी तो उन्होंने तत्काल विभाग के पदाधिकारियों से बात कर 200 केवीए का ट्रांसफार्मर दिलवाया। श्री सिंह ने कहा कि क्षेत्र की जनता मेरा परिवार है और परिवार के लोग कष्ट में रहेंगे, तो हमें सुकून कैसे मिल सकता है। उद्घाटन के मौके पर उपस्थित जयप्रकाश साहा, अजय साव, महेश स्वर्णकार, लक्ष्मण स्वर्णकार, अनिल स्वर्णकार, अनिल स्वर्णकार, मनोज यादव, महेंद्र साव, कैलाश यादव, मुरली विश्वकर्मा मौजूद थे।

वेदांता एल्यूमीनियम ने कालाहांडी की सौरा कला को पुनर्जीवित किया

युवा ग्रामीण महिलाओं को बनाया जा रहा है सशक्त

आजाद सिपाही संवाददाता

लांजीगढ़, कालाहांडी। वेदांता लांजीगढ़, भारत का प्रमुख स्मेल्टर-ग्रेड एल्युमिना उत्पादक और वेदांता एल्युमीनियम की एक इकाई, स्थानीय समुदायों के लिए स्थायी आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए समर्पित है। इसकी प्रभावशाली पहलों में प्रोजेक्ट आदिकला है, जो कालाहांडी की समृद्ध स्वदेशी कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने और संरक्षित करने का एक रचनात्मक प्रयास है। यह परियोजना सौर पर केंद्रित है, जो एक अनूठी पारंपरिक आदिवासी कला है, जो अपने जटिल और रंगीन रूपांकनों के वर्णनात्मक पैटर्न और प्राकृतिक तत्वों, आत्माओं, पूर्वजों और दैनिक जीवन के चित्रण के साथ-साथ ढोकरा, एक सावधानीपूर्वक धातु-शिल्प तकनीक के लिए जानी जाती है। दोनों कला रूपों की जड़ें सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़ी हैं।

वेदांता लिमिटेड के एल्युमिना बिजनेस के सीइओ प्रणब कुमार भट्टाचार्य ने कहा कि युवा पीढ़ी को शामिल करके विरासत कला रूपों को पुनर्जीवित करना और बढ़ावा देना ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने के महत्व से उत्पन्न होता है। दीपिका दंडसेना ने कहा कि वेदांता की पहल से मैं अपने परिवार का भरण-पोषण भी कर पा रही हूं और इसके लिए मैं वेदांता के अटूट समर्थन के लिए उनकी बहुत आभारी हूं।

THIRD EYE CLINIC
ADVANCE PHACO LASER EYE CARE CENTRE
Contact For More Details
DR. VISHAL CHOUDHARI
OPHTHALMOLOGIST
Mob - 7003381944, 9431594628
NH- 33 Near Madarsa, Irba, Ranchi - 835219
Branch 2 : Sri Sai General Store, Dipatoli, Ranchi -9

DAS MUSICAL STORES
DAS RUBBER STAMP
Wholesale & Ratails
Dealers of all Musical Instruments
Mob.: 9835164815/ 8825354800/7250933033
MAIN ROAD, RANCHI, OPP. HANUMAN MANDIR
KOKAR , H.B. ROAD, OPP. R.L.S.Y. SCHOOL , RANCHI

वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
Verma's® Today®
शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं–

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi – B	₹ 140	Hindi – B	₹ 80
Hindi Vyakaran– II	₹ 120	Hindi Vyakaran– II	₹ 120
English Grammar– II	₹ 120	English Grammar– II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !

JAISWAL CCTV
आपके शहर राँची में
अपने घर ऑफिस दुकान में लगाऐं
CCTV कैमरा कचहरी चौक, राँची
4 कैमरे का सेट अब सिर्फ 14999/-
2 कैमरे का सेट अब सिर्फ 9999/-
अभी कॉल करे 9162992862
स्टेट बैंक के सामने कचहरी चौक, राँची - 834001

रत्न विक्रेता जय माता दी रत्न विक्रेता
ज्योतिष ग्रहरत्न केन्द्र
ज्योतिष शास्त्र • वास्तु शास्त्र • हस्त शास्त्र • अंक शास्त्र
पंडित शशि कांत मिश्रा
पता - लाईन टैंक रोड, गोपाल गंज गली, ऑपोजिट-भुतपूर्व वारगेन बाजार, रांची
फोन :- 9334718296, 9835195382, 9431792761

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार, ***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**